Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य चेतना पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ0 शक्ति सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
गनपत सहाय पी0जी0 कालेज, सुलतानपुर (उ0प्र0)

किसी भी समाज के विकास की स्थिति और स्तर का अनुमान उस समाज में निवास करने वाली महिलाओं की परिस्थिति एवं जागरूकता स्तर से लगाया जा सकता है। विश्व के विकसित, विकासशील और अविकसित क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति तथा जागरूकता स्तर में भिन्नता पायी जाती है। यह भिन्नता सामाजिक एवं आर्थिक जीवन शैली, शैक्षणिक स्तर, पारिवारिक शक्ति संरचना में उनकी स्थिति तथा भूमिका आदि में पायी जाती है। मानवाधिकार के सार्वभौमिक घोषणा पत्र के अन्तर्गत महिलाओं और पुरूषों में समानता को स्वीकार किया गया है। सन् 1993 में संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण और विकास सम्मेलन के अन्तर्गत लैंगिक समानता के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को पुनः स्वीकार करते हुए महिलाओं की परिस्थिति में सुधार के लिए विभिन्न उपायों को अपनाये जाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। लैंगिक समानता और शिक्षा के दो ऐसे महत्वपूर्ण पक्ष थे, जिसमें नीतिगत तथ्य निर्णय के माध्यम से कार्य योजनाएं प्रस्तावित करने और उन्हें संचालित करने पर सहमति हुई।[1] अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 1975 में आयोजित सम्मेलन के अन्तर्गत भी उन मुद्दो पर बल दिया गया था।

सन् 1995 में बीजिंग में हुए चौथे महिला विश्व सम्मेलन के अन्तर्गत भी इस दिशा में प्रतिबद्धता व्यक्त की गयी, लेकिन एक दशक के अन्तराल में जो प्रगति की गयी थी वह सन्तोषजनक नहीं थी। ऐसी स्थिति में यह विचार व्यक्त किया गया है लैंगिक सम्बन्धों को निर्धारित करने वाले परम्परागत विश्वासों और आदतों में परिवर्तन आवश्यक है।[2] इसी महिला सम्मेलन में यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया था कि महिलाओं में जागरूकता की कमी है, वे शिक्षा स्वास्थ्य और अन्य सम्बन्धी सेवाओं का लाभ नहीं कर पाती है।[3]

निर्धन और कम शिक्षित समाजों में महिला की शिक्षा और उनकी जागरूकता स्तर में वृद्धि की जाय तो उसका प्रभाव न केवल मातृत्व स्वास्थ्य में परिलक्षित होगा, अपितु अन्य लोगों के स्वास्थ्य देख–रेख भी अधिक सजगता पूर्वक कर पायेगी। स्वास्थ्य का सम्बन्ध शिक्षा एवं जागरूकता से है। मृत्युदर बीमारी और पोषण जैसे पक्ष जागरूकता से अधिक सम्बन्धित है। शिक्षित एवं जागरूक माताएं अपने बच्चों की देख–रेख अधिक उत्तम तरीके से कर पाती है।[4]

स्वंतत्रोत्तर भारत में स्वास्थ्य की देख–भाल से सम्बन्धित ढाँचे में व्यापक विकास देखने में आया है। लेकिन पहली पंचवर्षीय योजना में प्राथमिक उच्चतर तथा अन्य प्रकार के चिकित्सा केन्द्रों के निर्माण और उन्हें उचित रैफरल प्रणाली से जोड़ने का प्रयास आरम्भ किया गया।[5] स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए कार्यक्रम आरम्भ किए गये। इन प्रयासों के फलस्वरूप मृत्यु दर जो 1951 में 27 थी 1955 में घटकर 9 रह गयी। लेकिन छूत की बीमारियॉ पोषण की कमी से होने वाली बीमारियों में कमी नही आयी है। इसके अलावा एच0आई0बी0 जैसे संक्रामक तथा अन्य कई तरह के असंक्रामक रोगों के फैलने से अस्वस्थ्यता दर बढ़ी है।

वर्तमान समय में प्रायः स्वास्थ्य चर्चा का विषय बनकर रह गया है। व्यक्तिगत स्तर पर मनुष्य स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देता जब तक कि वह अस्वस्थ नहीं हो जाता। इसके स्वास्थ्य से पहले सम्पत्ति, इज्जत, शक्ति, ज्ञान, सुरक्षा आदि पहलुओं का स्थान है।[6] पिछले कुछ दशकों से निरन्तर चले आ रहे इस रूख को दृष्टिगत रखते हुए स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु सन् 2020 तक सभी के लिये स्वास्थ्य का नारा दिया गया। स्वास्थ्य का शाब्दिक अर्थ है ''शरीर एवं मस्तिष्क का ऐसी अवस्था में होना जिससे वह सभी कार्य सुचारू रूप से कर सके। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार शरीर को मात्र रोगों से बचाकर रखना अथवा अशक्त न होना

ही स्वास्थ्य नहीं है, अपितु स्वास्थ्य से अभिप्राय सम्पूर्ण भौतिक मानसिक एवं सामाजिक अवस्था में स्वस्थ्य रहने से है।[7]

जे0एच0 विलियम के अनुसार स्वास्थ्य जीवन का वह गुण है जो व्यक्ति को अधिक समय तक जीवित रहने तथा सर्वोत्तम प्रकार से सेवा के योग्य बनाता है।[8] अतः हम कह सकते है कि स्वास्थ्य वह दशा है व्यक्ति मानसिक, शारीरिक तथा वातावरण सम्बन्धी प्रकृतिक नियमों के आधार पर अपना जीवन निर्वाह करता है।[9] आज वर्तमान समय में महिलाओं के प्रति पुरूष प्रधान समाज की परम्परागत सोच विद्यमान है।

महिलाओं की जीवन शैली और उनके जागरूकता स्तर में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। वर्तमान स्वास्थ्य समस्याओं और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में किये गये अध्ययनों से स्पष्ट है कि जागरूकता के अभाव में महिलाएं विभिन्न बीमारियों एवं समस्याओं से ग्रसित रहती है। महिलाओं के स्वास्थ्य चेतना के अर्न्तगत निम्न को सम्मिलित किया जा सकता है।[10] प्रातः काल उठना निवृत्ति की आदत, दांतों की सफाई, नाखून की सफाई, स्नान की आदत, भोजन सम्बन्धी आदत, पारिवारिक स्वास्थ्य की देख–भाल अन्य चीजों को करने की आदत।

कूस (1970) का अध्ययन 6 ख हेल्थ ऑफ रीजनेबिले (1954) वर्गीय संरचना और स्वास्थ्य समस्याओं के पारस्परिक सम्बन्ध को विश्लेषित करता है। यह न्यूयार्क के उत्तरी क्षेत्र में स्थित एक छोटे से नगर रीजनबिले के पांच सौ चौदह परिवारों पर आधारित है।[11] इस अध्ययन से स्पष्ट है कि उच्च वर्ग के सदस्य रोगों के प्रति जितने जागरूक है, उनमें निम्न वर्ग के सदस्य नहीं है। उच्च वर्ग के सदस्य रोग उत्पन्न होने की दशा में तुरन्त डॉक्टर से परामर्श करते हैं। वही निम्न वर्ग के व्यक्ति उदासीनता के साथ अधिकांश तौर पर घरेलू तरीकें का प्रयोग करते हैं। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि रोगों के लक्षणों के प्रति अनुक्रिया रोगी व्यवहार और उपचार की प्रक्रिया, वर्गीय अन्तर द्वारा महत्वपूर्ण रूप से सम्बन्धित है।

आज परिवार के समक्ष आने वाली लाक्षणिक समस्यायें परिवेशगत स्वास्थ्य अथवा मनोवैज्ञानिक दशाओं से ही सम्बद्ध है। आर्थिक संकट, पारिवार में बीमारी, बेरोजगारी कार्य परिवर्तन और न्यून वेतन के कारण उत्पन्न हो सकता है जिनमें सभी ऐसे है जो परिवार के सामान्य और सुखी जीवन को समाप्त कर देते हैं। पारिवारिक जीवन में आने वाली कठिनाइयां विभिन्न प्रकार की है। पति पत्नी में सहस्वरता का अभाव दोनों की भावात्मक अस्थिरता, उत्तम गृह प्रबन्ध के अभाव में आर्थिक समस्यायें या निम्न आय अथवा बेरोजगारी, बीमारी दुर्घटनायें, स्वास्थ्य समस्यायें, सम्पोषण की कमी या अन्न अर्जक का परित्याग आदि कुछ कारण उपरोक्त कठिनाइयों के जनक हो सकते है। व्यक्तिगत और पारिवारिक कठिनाइयां प्रायः विभिन्न तत्वों के संयोग से उत्पन्न होती है।जिसमें परिवार के कई सदस्य अन्तर्ग्रस्त होते हैं, इसमें आर्थिक सामाजिक संवेगात्मक और भौतिक सभी प्रकार के कारण उपस्थित होते हैं।

व्यक्ति के मन का उसके शरीर से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है यदि किसी कारणवस मन अशान्त होता है तब उसका साक्षात प्रभाव शरीर पर पड़ता है इसके विपरित जब शरीर विकृत होता है तब मन पर उसका जरूर प्रभाव पड़ता है। इसलिए व्यक्ति के मन का स्वास्थ्य रहना उसकी शारीरिक स्वस्थ्यता के लिए परम आवश्यक है। चिकित्सा विज्ञान की यह शाखा जिसके अन्तर्गत मस्तिष्क, मेरू अथवा तान्त्रिक तन्त्र के अन्य भागों के विकास और क्रिया का अध्ययन किया जाता है। उसे तान्त्रिक विज्ञान अथवा तान्त्रिक तन्त्र की प्रकृत–क्रिया से सम्बन्धित रोगों को तान्त्रिक मन चिकित्सक विकृति कहते हैं। मन और शरीर के इस घनिष्ठ सम्बन्ध को स्वीकार कर लेने के कारण चिकित्सा विज्ञान में एक नवीन क्षेत्र का आविर्भाव हुआ है। जिसे मनः शारीरिक–चिकित्सा कहते हैं। मनः शारीरिक चिकित्सा के अनुसार रोग चाहे शारीरिक हो अथवा मानसिक दोनों ही दशाओं में रोगी की शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य का एक दूसरे पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है।

मानसिक रोगों के दो पहलू है–पहले का मूल कारण और शरीर में होने वाले परिवर्तन जैसे बुढ़ापा, बच्चे का जन्म, मासिक धर्म के आरम्भ होने अथवा समाप्त होने की आयु तथा तत्सम्बन्धी अनेक व्याधियां। दूसरा पहलू मानसिक तनाव से सम्बन्धित है–हमारी वित्त वृत्तियाँ का, भावनाऐं का मानसिक वेगों का हमारे शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है। चिन्ता क्रोध, ईष्या, भय, लाभ, उत्तेजना, तनाव आदि कारण हमारे शरीर के अंगों एवं तंत्रिकाओं में हलचल पैदा कर देते है जिससे हमारी रक्तवाहिनियों में अनेक प्रकार की विकार पैदा हो जाते हैं और फिर नये–नये रोगों का जन्म होता है। विश्वविख्यात मनोविज्ञान डॉ0 फ्रायड ने कहा है कि ''अतृप्त इच्छायें और प्रवृत्तियां अनेक शारीरिक और मानसिक रोगों का कारण बनाती है।''

आधुनिक परिवेश में आज का मानव प्रतिक्षण विविध प्रकार के व्यक्तिगत, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा न जाने कितनी तनावपूर्ण स्थितियों से गुजर रहा है वह सभी के कल्पना से परे है। आज व्यक्ति को परस्पर प्रतिस्पर्धा की स्थिति से गुजरना पड़ रहा है और व्यक्ति में स्पर्द्धा की भावना तभी उत्पन्न होती है। जबकि वह अपने आप में किसी चीज की कमी अनुभव करता है। इसी अभाव के परिणामस्वरूप उसमें नाना प्रकार के तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। जो स्पष्टतः किसी शारीरिक या मानसिक व्याधि का पूर्व रूप है।

स्वास्थ्य जागरूकता का सम्बन्ध किसी व्यक्ति की शारीरिक क्षमता तथा शरीर में रोगों के न पाये जाने से जाना जा सकताहै। जब कोई व्यक्ति शिक्षित होता है तो वह अपने इर्द–गिर्द होने वाले परिवर्तनों के अनुकूल अपने आप को ढालने की कोशिश करता है तथा अपने शरीर को मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रखने का प्रयास करता है। जैसा कि विदित है कि ''स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ्य मस्तिष्क का विकास होता है।'' इस सन्दर्भ में सर्वेक्षण करने पर पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र की महिलायें शारीरिक रूप से शहर की महिलाओं की तुलना में अधिक सक्षम तथा शिक्षित थीं। उनके सोचने का ढंग नगर की महिलाओं से अलग था। ग्रामीण क्षेत्र में महिलायें अपने स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक नहीं है। वे अपनी छोटी व बड़ी अनेक प्रकार के रोगों के उपचार हेतु परम्परागत औषधियों पर निर्भर करती है, जबकि शहरी महिलाऐं डाक्टर केपास जाना उचित समझती है।

अतः सर्वेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि समाज की निरन्तरता का मुख्य आधार होने के कारण महिलाओं का स्वस्थ्य होना किसी समाज की प्राथमिक आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1- Goldston (1963), Mans image in meedicine and Arthopology (ed) Informational University press. New York P. 26-29
2- Hosn K.A. (1979), Medical Sociology of Rural India. Sachin Pub. Azmar.
3- Koos E.L. (1970), The health of Regionville, owted in form, sociology of Medicin Rodney M.Co.IM.C. Grawhill, New York.
4- King's (1962), Preception of illness and medical Praetice, New York.
5– लक्ष्मीराम (1977) एक ग्रामीण समुदाय में स्वास्थ्य की दशाओं का अध्ययन पी–एच0डी0, वराणसी।

6- Mairy Sahab (1988), Women in India, Allahabad, Chugh Publication.
7- Mitra Jyoti (1997), Women and Social equlity and emproment, New Delhi Karisna Publishers & Distributers.
9- Pandey G.P. (1980), Some Aspets of New National and Postanonational morality in Rural aria of U.P. India Journal of Public helth.
10- Park and park of opc IT. P. 2
11– प्रशन्न देशाई : आशीष बोस (1985), प्राथमिक स्वास्थ्य के सामाजिक पहलू, किताब घर नई दिल्ली, पृष्ठ 1,2

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 **ISSN : 2249-7331**

भारतीय महिलाओं के सशक्तीकरण में अम्बेडकर की भूमिका

डॉ0 भारती रस्तोगी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर महिलाओं की उन्नति के प्रबल पक्षधर थे। वे गौतम बुद्ध तथा महात्मा ज्योतिबाराव फुले से अत्यधिक प्रभावित थे। बुद्ध धम्म में महिलाओं को धर्म दीक्षा का अधिकार प्राप्त है तथा इस धर्म में स्त्री–पुरुष समानता के उपदेश दिए जाते हैं। महात्मा फुले ने 19वीं शताब्दी में महिलाओं की शिक्षा के लिए ऐतिहासिक कार्य किये। डॉ0 अम्बेडकर महात्मा फुले को अपना गुरु मानते थे। वे मानते थे कि किसी भी समाज का मूल्यांकन इस बात से किया जाता है कि उस समाज में महिलाओं की क्या स्थिति है ? आजाद भारत के पहले कानून मन्त्री के रूप में अम्बेडकर ने महिला सशक्तकरण के लिए कई कदम उठाए। उन्होंने बताया कि मनु से पूर्व भारत में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी। मनु ने देश की महिलाओं की स्थिति को अत्यधिक दयनीय व चिन्ताजनक बना दिया। आधुनिक युग में डॉ0 अम्बढकर ने महिलाओं को जागृत करने के लिए अनेक सम्मेलन किये। उन्होंने मूकनायक व 'बहिष्कृत भारत' इत्यादि समाचार–पत्रों के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। बाबा साहेब का मानना था कि सही मायने में प्रजातन्त्र तब आएगा जब महिलाओं को पैतृक सम्पत्ति में बराबरी का हिस्सा मिलेगा और उन्हें विश्वास था कि महिलाओं की उन्नति तभी सम्भव होगी जब उन्हें घर–परिवार और समाज में सामाजिक बराबरी का दर्जा मिलेगा। शिक्षा और आर्थिक उन्नति उन्हें सामाजिक बराबरी दिलाने में मदद करेगी।

महिला सशक्तिकरण को लेकर अम्बेडकर जी की जुनूनी लड़ाई 1942 में शाषित वर्ग की महिलाओं के एक सम्मेलन में देखने को मिली जब उन्होंने कहा था कि 'किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं की प्रगति से आंकी जाती है।' उनके यही शब्द उन्हें नारीवाद के समर्थक के रूप में स्थापित करते हें। बाबा साहेब का मानना था कि आजादी मिल जाने के बाद भी यदि 'आधी आबादी; अर्थात् महिलायें शोषण तथा दमन की शिकार रही तो भारतीय समाज का विकास सम्भव नहीं है। जागित विषमताओं से तो वे पीड़ित तथा आहत थे ही परन्तु महिलाओं से सम्बन्धित गम्भीर चिन्ताएँ भी उनको परेशान करती थीं जैसे भारत की पितृसत्तात्मक व्यवस्था में महिलाओं का निम्न स्तर, महिलाओं का स्थान पुरुषों से नीचे होना। बेटियों के प्रति उपेक्षा तथा हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में स्त्रियों को हीन नजर से देखना इत्यादि। अम्बेडकी ने महिला सशक्तिकरण के रूप में प्राचीन 'मनुस्मृति' का दहन किया। वह केवल उपदेश देने में विश्वास नहीं रखते थे बल्कि डनहोंने हिन्दू कोड बिल लाकर बेजोड़ मिसाल कायम की, जब यह बिल संसद में पेश किया गया तब इसे लेकर संसद के अन्दर और बाहर विद्रोह मच गया। सनातनी धर्मावलम्बी से लेकर आर्य समाजी तक अम्बेडकर के विरोधी हो गए। संसद में जहाँ जन संघ समेज कांग्रेस के हिन्दूवादी इसका विरोध कर रहे थे तो वहीं संसद के बाहर हरिहरानन्द सरस्वती के नेतृत्व में बड़ा प्रदर्शन चल रहा था। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, हिन्दू महासभा और दूसरे हिन्दूवादी संगठन हिन्दू कोड बिल का विरोध रहे थे। इन सबके बावजूद अम्बेडकर लड़ते रहे। हिन्दू कोड बिल औपचारिक रूप से 5 फरवरी 1951 को पेश किया था यह बिल हिन्दू स्त्रियों की उन्नति के लिए प्रस्तुत किया गया था। हिन्दू विवाह अधिनियम, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, हिन्दू अल्पसंख्यक और संरक्षकता अधिनियम और हिन्दू दत्तक और रख–रखाव अधिनियम 1952 और 1956 के बीच पारित किए गए थे। प्रस्तुत प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य वैदिक काल से आधुनिक युग तक भारत में व्याप्त लैंगिक भेदभाव पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए महिला संशक्तीकरण प्राप्त करने में डॉ0 अम्बेडकर के योगदानों का उल्लेख करना है। यह पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है जिसमें पुस्तकों, पत्रिकाओं, जर्नल्स तथा वेबसाइट्स पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया गया है।

बाबा साहेब अम्बेडकर महिलाओं की आजादी के पैरोकार थे। उन्होंने महिला सशक्तिकरण को नई राह दी। यूँ तो समय–समय पर अलग–अलग महापुरुषों ने महिलाओं के अधिकारों पर जोर दिया लेकिन भारत के मूल दस्तावेजों में इन अधिकारों को दर्ज कराने का काम बाबा साहेब ने किया, वह भी कड़े विरोध के बावजूद। महिला उत्थान सम्बन्धी प्रयासों पर विरोध उस समय की मानसिकता को दर्शाता है जिसने सदैव स्त्रियों को दोयम दर्जे का स्थान दिया है जिनके लिए महिला उनकी सम्पत्ति से अधिक कुछ नहीं थी। 'राज और दिन, कभी भी स्त्री को स्वतन्त्र नहीं होने देना चाहिए। उन्हें लैंगिक सम्बन्धों द्वारा अपने वश में रखना चाहिए, क्योंकि स्त्री सवतन्त्र होने लायक नहीं है। मनुस्मृति (अध्याय 2–3 तथा 9) में लिखी यह बात बताती है कि उस वक्त महिलाओं की क्या दशा रही होगी। हमारा समाज सदियों से मनुवादी संस्कृति से ग्रसित रहा है। आज भी पूरा देश महिला सुरक्षा और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे सशक्त सन्देशों को दूर–दूर तक पहुँचाने के दावा करते है परन्तु सचचाई यह है कि महिलाएँ आज भी संकट में हैं। दिल्ली का निर्भया काण्ड हो, यू0पी0 का उन्नाव, मिर्चपुर, हैदराबाद काण्ड या फिर कठुआ का दर्दनाक हादसा, ये सभी घटनाएँ बताती हैं कि महिला सुरक्षा के इतने संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद महिलाएँ सुरक्षित नहीं है। राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो के नवीनतम आँकड़ों के अनुसार हर 15 मिनट में एक बलात्कार दर्ज होता है। ये सभी घटनाएँ इस लिए घट रही हैं क्योंकि ऐसे कृत्य को अंजाम देने वालों को कोई ठोस सजा नहीं मिल पाती, ये अपराधी कानून को धूल झोंकने में सफल हो जाते हैं। आज महिलाओं को अधिकार दिलाने के लिए हमारे पास जो भी संवैधानिक सुरक्षा कवच, कानूनी प्रावधान औ संस्थागत उपाय मौजद हैं, इसका अधिकांश श्रेय बाबा साहेब अम्बेडकर को जाता है जिनके अथक प्रयासों से यह सम्भव हो पाया है। अम्बेडकर सम्भवतः पहले अध्येता रहे हैं जिन्होंने जातीय संरचना में महिलाओं की स्थिति को लैंगिक दृष्टि से समझने का प्रयास किया। उनके सम्पूर्ण विचार मंथन के दृष्टिकोण में सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा महिला सशक्तीकरण या फिर चाहे वह किसी जाति, धर्म,सम्प्रदाय की हो।

जब भारत आजाद हुआ तब हिन्दू समाज में पुरुष और महिलाओं को तलाक का अधिकार नहीं था। विवाह, सात जन्मों का बन्धन माना जाता था। पुरुषों को एक से ज्यादा शादी करने की आजादी थी लेकिन विधवाएँ दोबार शादी नहीं कर सकती थी। विधवाओं को सम्पत्ति से भी वंचित रखा गया था। ऐसे में हिन्दू कोड बिल के जरिए महिलाओं को उनके अधिकार देने की बात बाबा साहेब ने कही। इस बिल के जरिए महिलाओं की उन्नति के द्वारा खुले। इसमें तलाक लेने का अधिकार, तलाक मिलने पर गुजारा भत्ता, एक पत्नी के होते हुए दूसरी शादी न करने का प्रावधान, बच्चे गोद लेने का अधिकार, सम्पत्ति में हिस्से का अधिकार, लड़की को उत्तराधिकार का अधिकार तथा अन्तर जातीय विवाह का अधिकार आदि सम्मिलित है।

यह बिल ऐसी तमाम कुरीतियों को हिन्दू धर्म से दूर कर रहा था जिन्हें परम्परा के नाम पर कुछ कट्टरपंथी जिन्दा रखना चाहते थे। हिन्दू कोड बिल भारत की सभी महिलाओं के लिए बेहद अमूल्य था। सामाजिक न्याय, सामाजिक पहचान, समान अवसर और संवैधानिक स्वतन्त्रता के रूप में नारी सशक्तीकरण के लिए बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर के योगदान को पीढ़ी–दर–पीढ़ी याद किया जायेगा।

सन्दर्भ

अम्बेडकर बी.आर. 1979, हिन्दू नारी का उत्थान और पतन (राइज एण्ड फाल ऑफ हिन्दू वूमेन का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक श्रीवर्द्धन, लखनऊ बहुजन कल्याण प्रकाशन।

http://www.satyahindi.com

http://hindi.feminisiminidia.com

रघुवंशी, राखी, सिंह रामगोपाल, 2005–06, 'भारत में महिला सशक्तीकरण की प्रकृति एवं स्वरूप; सामाजिक विमर्श, अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र, अद्धवार्षिकी, वाराणसी

परिवहन के साधनों से उत्पन्न समस्याएँ

डॉ0 खेदू राम यादव
भूगोल–विभाग
जवाहर लाल नेहरू स्मारक पी0जी0 कालेज, महराजगंज।

परिवहन उस विधि या व्यवस्था को कहते है जो कि व्यक्ति, वस्तुओं एंव संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते हैं। यदि कृषि और उद्योग किसी देश के आर्थिक जीवन का शरीर और हड़्ड़ियाँ मानी जाये तो परिवहन को उस आर्थिक ढाँचे की रक्तवाहिनी मानना चाहिए। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था एवं विकास का आधार परिवहन के साधनों पर बहुत निर्भर है। हमारा आर्थिक जीवन ऐसा बन गया है कि परिवहन के साधनों के अभाव में सदैव आर्थिक संकट पड़ने की आशंका बनी रहती है। व्यापार, कृषि और औद्योगिक उन्नति इसी की सहायता से संभव है। इन्हीं से अत्यन्त दूर के स्थान भी अब थोडे समय में ही पार किये जा सकते है। शासन प्रबन्ध, देश की सुरक्षा, वस्तुओं के नवीन बाजार एवं समृद्धि और समाज की दृष्टि से भी परिवहन का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। उन्नीसवीं सदी के मध्य तक लगभग प्रत्येक देश में परिवहन के अच्छे साधन नहीं थें, इसीलिए तब तक मानव समाज कम विकसित रहा। मानवीय सभ्यता इन्ही साधनों की उन्नति पर निर्भर है। इन साधनों की उन्नति के परिणामस्वरूप सारा विश्व एक समाज, विशाल विपणन केन्द्र अथवा व्यवस्था के रूप में परिणित हो गया है। अब निर्जन एवं छोटे–से छोटे स्थान की वस्तुएं विश्व के किसी भी भाग में ले जाकर बेंची जा सकती है।

परिवहन का इतिहास सभ्यता का इतिहास है। वस्तुतः मानव की प्रगति परिवहन के विकास के साथ ही हो पाती है। यही नहीं इसके द्वारा न केवल सामान ही एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाया जाता है वरन् देश का सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक विकास भी प्रत्यक्ष उसी पर निर्भर करता है। परिवहन से ज्ञान बढ़ता है और अज्ञान व अन्धकार एवं पक्षपात का नाश होता है।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में परिवहन के साधनों में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है व परिवहन के साधनों में क्रांति आयी है। अठ्ठारहवीं शताब्दी में पक्की सड़के बनी व जल परिवहन का विकास हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में रेल व जल मार्गों का विकास हुआ एवं बीसवीं शताब्दी में मोटर व वायु परिवहन की लहर दौड़ गयी। विश्व के सभी महाद्वीपों तथा देशों को परिवहन के साधनों ने समीप ला दिया है। लेकिन परिवहन के साधन सभी क्षेत्रों में समान नही है। यह असमानता भौतिक व मानवीय दोनों ही कारणों से है।

मुख्य परिवहन व्यवस्था निम्न प्रकार से है :–

1. स्थल परिवहन
2. जल परिवहन
3. वायु परिवहन

भूतल पर स्थल परिवहन सबसे प्राचीन एवं निरन्तर विकासमान माध्यम रहा है। इसें मानव, पशुओं, पशु वाहनों एवं यंत्र चलित वाहनों में सड़कों के माध्यम से गतिशीलता की ओर निरन्तर विकासित किया है। आधुनिक काल के पूर्व तक सड़कों पर केवल पशु गाड़ियों (जैसे घोड़ा गाडी, बैल गाड़ी, रथ आदि) का ही उपयोग होता रहा। यांत्रिक गाड़ियों का उस समय तक आविष्कार नहीं हुआ था। यांत्रिक गाड़ियों व तेज गति के वाहनों के विकास तथा सभ्यता के विकास के साथ–साथ सीमेन्ट व तारकोल की पक्की सड़कों का विकास हुआ, जिन पर विभिन्न प्रकार की मोटर गाड़ियाँ चलती है। जैसे–मोटर साइकिल, बस, मोटर कार, ट्रक, जीप आदि, स्थल परिवहन में रेल परिवहन का योगदान महत्वपूर्ण है जो विश्व में रेलों का विकास उन्नीसवीं सदी के मध्य से माना जाता है। विश्व के पहले रेलमार्ग का निर्माण सन् 1835 में इंग्लैण्ड में हुआ था। यहाँ पहली रेलगाडी मैनचेस्टर से लिवरपूल के बीच चली।

तब इस रेल के चालक उसके निर्माता स्वयं जार्ज स्टीफेन्सन थें एवं इसकी सवारियों में इंग्लैण्ड की महारानी एवं अनेक उच्च राजनेता थें, तब से रेलमार्गो में विश्व के सभी देशों में बड़ी प्रगति हुई।

जल परिवहन के अन्तर्गत आन्तरिक (अन्तर्देशीय) और अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्ग सम्मिलित किये जाते है। आन्तरिक जलमार्गो के अन्तर्गत नदियाँ, नहरें और झीलें तथा अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्गो के अन्तर्गत सामुद्रिक मार्ग सम्मिलित किये जाते है। जल परिवहन के महत्वूपर्ण साधन के रूप में समुद्री जहाज महत्वूपर्ण है। जिससे विभिन्न देशों को माल ढ़ोने के साथ–साथ यात्री ढ़ोने का कार्य भी किया जाता है।

यद्यपि वायु मार्ग रेल तथा जल मार्ग की तरह निश्चित और बधें हुए नहीं होते, किन्तु अपने हित की दृष्टि से सदा ही वे भूमि की बनावट, वायु पत्तन एवं प्रकाश–स्तम्भ तथा महावृत्तीय मार्ग का अनुसरण करते है। जलवायु, भूमि की बनावट आर्थिक तत्व आदि का वायु परिवहन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। स्थल परिवहन तथा जल परिवहन की तुलना में वायु परिवहन के द्वारा एक देश से दूसरे देश की यात्रा बहुत ही कम समय में संभव हो जाता है। लेकिन मानव की महत्वाकांक्षा दिन व दिन बढ़ती जा रही है। स्टीम युग में प्रवेश करते ही मानव हर्षित हुआ कि उसकी यात्रा सुगम हुई और घोड़ा गाडी, बैल गाडी आदि से जो दूरी महीने में तय की जाती थीं वह कुछ दिनों और घण्टों में तय की जायेगी तथा कई गुना अधिक माल ढोकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जा सकेगा। रेलगाडी, मोटरगाड़ी, जलपोत और हवाई जहाज वाहन के उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करते है। इनके कारण आज विश्व सिकुड कर अति छोटा सा हो गया है। विश्व के सभी देश इन साधनों का अधिकाधिक विस्तार एवं विकास करने में संलग्न है। विकसित देशों में वाहन विस्तार इतना अधिक हो गया है कि महानगरों में मोटर गाड़ियों को पार्क करने की कठिन समस्या उठने लगी है। इसके लिए बहु मंजिला कार पार्क इमारतों का निर्माण किया जा रहा है। एक आकलन के अनुसार विश्व की सड़कों पर 800 अरब मोटर गाड़ियाँ दौड़ रहीं है। अनुमान है कि वर्तमान शताब्दी के मध्य तक इनकी संख्या बढ़कर 1500 अरब से अधिक हो जायेगी। 1970 के बाद विकासशील देशों में कारों की संख्या बढ़कर दोगुनी हो गयी है। भारत में भी वाहन विस्तार तेजी से हो रहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली के आकलन के अनुसार भारत में 1961 में 6 लाख 65 हजार मोटर गाड़ियाँ थीं जो बढ़कर 2000 में 1 करोड, 2 लाख, 26 हजार से अधिक हो गयी है। मोटर गाड़ियों के विस्तार से सबसे विकट समस्या इनके द्वारा प्रयुक्त ईधन से वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण की है। मोटर गाड़ी में प्रयुक्त पेट्रोल से निकलने वाला धूआँ वायु में शीशा के कण उडेल रहा है जो श्वास की बिमारियों का कारण है। वाहनों की तेज आवाज से ध्वनि प्रदूषण बढ़ रहा है और वायुयान वायुमण्डल को गन्दा कर रहे है। साथ ही मार्ग दुर्घटना में मरने वालों की संख्या भी दिनो–दिन बढ़ रही है। भारत में विश्व के मात्र एक प्रतिशत वाहन है, लेकिन विश्व की छः प्रतिशत दुर्घटनाएं यहीं होती है। वाहनों के धुएँ से उत्सर्जित विषैला प्रदूषक शीशा (Lead) बालकों के मस्तिष्क को कमजोर कर देता है। पालीएरोमैटिक हाइड्रोकार्बनों (Polyaromatic Hydrocarbons) या (PAHs) के साथ चिपका शीशा, कैडमियम, पारा, आर्सेनिक तथा खतरनाक कार्बनिक पदार्थ से युक्त कण उत्परिवर्तजनी (Mutagenic) तथा कैंसरजनीं (Cancinogenic) प्रभाव डालते है। विभिन्न प्रकार के कणीय प्रदूषक पौधों में प्रकाश संश्लेषण एवं श्वसन क्रिया के दौरान होने वाले गैसीय आदान प्रदान में बाधा डालते है और उत्पादकता को घटा देते है। धातुकीय कणों वाले प्रदूषक पादप उत्तकों को संदूषित (Contaminate) करते है। ये प्रदूषक पादपों के उपापचयी क्रियाओं (Metabolic Activities) के लिए विषैले होते है। इस प्रकार से संदूषित शाक सब्जियों, फलों एवं फसलों के उपयोग से कणीय प्रदूषक द्वारा परोक्ष रूप से मानव स्वास्थ्य को खतरा पैदा कर दिया जाता है। धूल, कालिख, वायु विलय, जैसे कण भवनों, प्रतिमाओं तथा

स्मारकों का क्षरण कर देते है। ये वायुमण्डल के समताप मण्डल (Stratosphere) में एकत्रित होकर विकिरण एवं उष्मा की मात्रा का परावर्तन कर देते है जिससे भू–सतह पर का तापमान घट जाता है। कार्बनमोनो आक्साइड (CO) एक ऐसी जहरीली गैस है जो जीवाश्म ईधनों के पूर्णरूप से दहन न हो पाने के परिणामस्वरूप होती है। लगभग 50 प्रतिशत से अधिक कार्बनमोनो आक्साइड (CO) वाहनों के धुएँ से उत्पन्न होती है। कार्बनमोनो आक्साइड जन्तु समुदाय के लिए अत्यन्त ही विषैला होता है। जब हम सास लते है तब यह श्वास नली द्वारा अन्दर प्रवेश कर लाल रक्त कणों के हीमोग्लोबीन से क्रिया करता है और एक स्थायी यौगिक कार्बाक्सी हीमोग्लोबीन (Carboxyhaemoglobin) का निर्माण करता है। यह कार्बाक्सी हीमोग्लोबीन रक्त की आक्सीजन परिवहन क्षमता को घटा देता है जिससे फेफड़ों से कोशिकाओं में आक्सीजन परिवहन की क्षमता सीमित हो जाती है।

वाहन विस्तार के साथ उर्जा संकट, दुर्घटना, वायु प्रदूषण आदि समस्याओं को केवल कुछ कम किया जा सकता है। लेकिन बिल्कुल समाप्त करना कठिन है। वर्तमान में वाहन–सुख से एक अन्य समस्या जन्म ले रही है जो है मानसिक तनाव, क्योंकि गाड़ी चलाते समय भीड़भाड़ में जो मानसिक तनाव होता है उसका घातक प्रभाव शरीर को भोगना पड़ता है। वैज्ञानिकों का विचार है कि रक्तचाप की बिमारियाँ अधिक तनाव से जन्म लेती है। यही नहीं वाहन विस्तार से उपजाऊ जमीन सड़कों और रेलों द्वारा घिरती जा रही है जिससे भविष्य में उपजाऊ भूमि की संकट, मानसिक रोगियों की संख्या में वृद्धि, दमा के मरीजों में वृद्धि, कैंसर के रोगियों में वृद्धि आदि विभिन्न प्रकार की समस्याएं जन्म लेती जा रही है।

संदर्भ :–

1- मामोरिया, आर्थिक भूगोल, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस आगरा पेज नं0–324

1. डॉ0 दयाशंकर त्रिपाठी, पर्यावरण अध्ययन, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन दिल्ली, पेज नं0–143
2. राव एवं श्रीवास्तव, पर्यावरण और पारिस्थितिकी, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पेज नं0–431
3. राव एवं चौहान, विश्व का क्षेत्रीय भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पेज नं0–171

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 **ISSN : 2249-7331**

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा व उत्तरदायी कारक

डॉ0 हरिओम मिश्र
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग
उदित नारायण पी0जी0कालेज,
पडरौना, कुशीनगर (उ0प्र0)

महिलाओं के प्रति हिंसा की समस्या कोई नवीन समस्या नही है। प्रारम्भ से ही हमारे समाज में महिलायें यातना, शोषण एवं अवमानना की शिकार होती आई हैं। आज धीरे–धीरे महिलाओं को पुरूषों के जीवन में महत्वपूर्ण, प्रभावशाली और अर्थपूर्ण सहयोगी माना जाने लगा है किन्तु कुछ समय पूर्व समाज में उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी। समाज में प्रचलित प्रतिमानों, विचार धाराओं एवं संस्थागत रिवाज ने उनके उत्पीड़न में अत्यधिक योगदान दिया है। महिलाओं का उत्पीड़न सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों ही स्तरों पर हुआ है। इनमें से कुछ व्यावहारिक रिवाज आज भी पनप रहे हैं। आजादी के पश्चात् हमारे समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण व उन्नयन हेतु बनाए गए कानूनों, शिक्षा का फैलाव तथा आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता के बावजूद महिलाओं की एक बड़ी संख्या आज भी हिंसा की शिकार है।

महिलाओं के विरूद्ध होने वाली हिंसा के विभिन्न रूप हमें समाज में देखने को मिलते हैं। जैसे–लैंगिक आधार पर भेदभाव करना, घरों में महिलाओं के साथ हिंसात्मक व्यवहार करना, कन्याओं को गर्भ में ही मार डालना, घरों से बाहर छीटाकशी तथा अश्लील इशारे करना, एसिड अटैक करना, उनकी गोपनीयता को भंग करना, बलात्कार करना, मारना–पीटना तथा गाली–गलौज करना इत्यादि।

लैंगिक आधार पर भेद–भाव हमें कन्या के जन्म के समय ही देखने को मिलने लगता है। जहां लड़के के जन्म पर परिवार में हर्ष का वातावरण होता है, चारों ओर खुशियां मनायी जाती हैं, मिठाईयां बांटी जाती हैं तो वहीं इसके विपरीत कन्या के जन्म पर मातम सा माहौल छा जाता है। आगे चलकर जैसे–जैसे लड़की बड़ी होती जाती है भेद–भाव का दायरा भी बढ़ता जाता है। लड़की के उठने–बैठने, चलने, बोलने, पहनने तथा खाने–पीने तक पर विभिन्न प्रकार के निषेध लगा दिये जाते हैं। आलम ये होता है कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में उसे स्वतंत्रता प्राप्त नही हो पाती। इस सम्बन्ध में कहा भी गया है कि स्त्री को विवाह के पूर्व पिता के अधीन, विवाहोपरान्त पति के अधीन तथा वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहना चाहिए।

घर परिवार में छोटी–छोटी बात पर महिलाओं को ताना देना तथा मारना–पीटना आज के समाज में आम बात होती जा रही है। महिलाओं के विरूद्ध हिंसा विवाह के सम्बन्ध में और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वह विवाह के पश्चात् अपना घर परिवार छोड़कर एक नए घर को अपनाती है और विशेषकर अपने पति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहती है। परन्तु यह दुर्भाग्य है कि पति जिसके लिए यह समझा जाता है कि वह अपनी पत्नी को समझेगा, उसे सुरक्षा प्रदान करेगा, उससे प्रेम करेगा, वही अपनी पत्नी को मारता–पीटता है। एक स्त्री को उसके पति द्वारा पीटा जाना जिस पर वह सर्वाधिक विश्वास करती है, एक छिन्न–भिन्न करने वाला अनुभव होता है। हिंसा चाटे और लात मारने से लेकर हड्डी तोड़ना, यातना देना, मार डालने की कोशिश और हत्या तक हो सकती है।

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा का एक रूप उन पर घरों से बाहर होने वाले छीटाकशी तथा अश्लील इशारे के रूप में लिया जा सकता है। विद्यालय, बाजार, मन्दिर तथा इसी प्रकार के अन्य सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं की अस्मिता को कलंकित करने वाले तत्व सक्रिय रूप में देखनें को मिलते हैं। कई बार ये तत्व महिलाओं द्वारा विरोध करने पर उन पर एसिड अटैक तक कर डालते हैं।

एसिड अटैक का एक भयावह रूप हमें तब भी देखने को मिलता है जब कोई लड़की किसी लड़के के प्रणय निवेदन को अस्वीकार कर देती है तथा कई बार यह भी होता है कि लड़की यदि किसी लड़के को प्यार करती है परन्तु परिस्थितिवश यदि उसे कहीं और शादी करनी पड़े तो उस अवस्था में उसका तथाकथित प्रेमी भी उसपर एसिड अटैक तक कर डालता है और यदि ऐसा नही भी करता है तो विवाह पूर्व सम्बन्धों का हवाला देकर उसे ब्लैकमेल तथा विवाहेत्तर सम्बन्धों हेतु बाध्य करता है।

महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा का सबसे भयावह रूप उनके साथ होने वाले बलात्कार की घटनाओं का है। बलात्कार की शिकार केवल गरीब लड़कियां हो ऐसा नही है, अपितु मध्यम वर्ग की कर्मचारी महिलाओं के साथ उनके मालिकों द्वारा उनका शोषण किया जाता है। जेल में कैद महिलाओं के साथ अधीक्षकों द्वारा, अपराध संदिग्ध महिलाओं के साथ पुलिस अधिकारियों द्वारा, महिला मरीजों के साथ अस्पतालों के कर्मचारियों द्वारा तथा रोजाना वेतनभोगी महिलाओं के साथ ठेकेदारों और बिचौलियों द्वारा उनकी अस्मत लुटी जाती है। आज समाज इस हद तक विकृत हो चुका है कि अल्पवयस्क बच्ची से लेकर, बहरी, गुंगी, पागल, अंधी तथा भिखारिनें तक बलात्कार की घटनाओं से जूझ रही हैं।

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा का एक रूप उन्हें भगा ले जाना अथवा उनका अपहरण करना है। प्रायः ऐसी महिलायें जो घर परिवार से व्यथित होती हैं उनके करीबी रिश्तेदार या तथाकथित प्रेमी एक बेहतर जिन्दगी का सपना दिखाकर घर से भगा ले जाते हैं तथा खुद तो उनका शोषण करते ही हैं आगे चलकर पैसों के लालच में उसे देह व्यापारियों के हाथ बेच तक डालते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि आज समाज में महिलायें सुरक्षित नही हैं और उनके साथ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंसा की घटनायें घटित हो रही हैं। सम्भवतः इसीलिए महिलाओं को बोझ मानकर समाज कन्या भ्रूण हत्या जैसी एक नवीन हिंसा को जन्म दे रहा है।

महिलाओं के साथ होने वाली ये हिंसा अकारण नही है। बल्कि इसके लिए कई तत्व जिम्मेदार हैं, जिनमें प्रमुख रूप से हमारी परम्परागत व्यवस्था अर्थात पुरूष प्रधान समाज को लिया जा सकता है। जिसके अन्तर्गत महिलाएं सदैव पुरूषों से निम्न मानी गयी हैं। समाज के अधिकांश नियम महिलाओं के लिए होते हैं जबकि पुरूष कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हैं। महिलाओं के विरूद्ध होने वाली हिंसा को समाज के बुद्धिजीवी वर्ग अथवा अभिजात वर्ग ने भी प्रोत्साहन दिया है क्योंकि सैद्धान्तिक रूप से तो ये वर्ग महिलाओं के उत्थान और बराबरी की बात करता है लेकिन व्यावहारिक रूप से दूर–दूर तक इसका कोई सम्बन्ध नजर नही आता, जबकि समाज के अन्य लोग इस बुद्धिजीवी वर्ग का अनुकरण करते हैं। महिलाओं के उत्थान हेतु विभिन्न प्रकार के कानून बनाए गए हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि ये कानून हाथी के दांत जैसे हैं जो केवल सैद्धान्तिक रूप से दिखाने के काम आते हैं और व्यावहारिक रूप से इनके क्रियान्वयन का अभाव पाया जाता है। आलम तो यह है कि कई मामले विशेष कर बलात्कार से सम्बन्धित ऐसे मिले हैं जहां पीड़िता को न्याय के बदले और अधिक जख्म मिले हैं और कानून के रक्षक ही भक्षक की भूमिका में नजर आए हैं। इसके साथ ही न्याय पाने की जटिल और लम्बी व्यवस्था ने महिला उत्थान में बाधा या हिंसा को प्रोत्साहन दिया है। पीड़ित महिला के न्याय प्राप्ति या हिंसा से बचने में उसकी अशिक्षा या गुणवत्ता विहीन शिक्षा ने भी योगदान दिया है। क्योंकि आज की शिक्षा साक्षर बना रही है, डिग्री उपलब्ध करा रही है लेकिन उसमें गुणवत्ता का अभाव है। अधिकांश ऐसे स्नातक मिलते हैं जो एक साधारण आवेदन पत्र पूर्ण करने में दर्जनों गलतियां करते हैं। ऐसे में उनसे ये उम्मीद करना कि ये शिक्षित अपने उत्थान हेतु कानूनों का लाभ ले पाएंगे, बेमानी होगी।

महिला के विरूद्ध बढ़ रही हिंसा को सामाजिक उपहास ने भी प्रोत्साहित किया है, जिसके अन्तर्गत पीड़ित महिला के साथ समाज द्वारा प्रेम व सहानुभूति के स्थान पर महिला का तिरस्कार करना व उसका मजाक उड़ाना शामिल है। महिलाएं स्वयं भी कुछ हद तक अपनी समस्याओं व अपने विरूद्ध हो रहे हिंसा

के लिए जिम्मेदार हैं। क्योंकि महिलाएं परिवार के केन्द्र में होती हैं और अगर वे तय कर लें कि अब हिंसा नही सहना है तो खुद भी अपने विरूद्ध हो रहे शोषण से मुक्त हो सकती हैं तथा अच्छे संस्कार देकर अपनी लड़कियों को हिंसा के विरूद्ध लड़ने के योग्य बना सकती हैं व अपने लड़कों में महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना का संचार कर सकती हैं। जबकि इसके विपरीत आज अधिकांश मामले चाहे वे लैंगिक भेद–भाव के हों, कन्या भ्रूण हत्या के हों, घरेलू हिंसा या दहेज हत्या के हों अथवा बलात्कार या अपहरण के महिलायें खुद इसके लिए जिम्मेदार नजर आती हैं। कई बार महिलाओं द्वारा हिंसा के प्रारम्भ में ही आवाज न उठाना भी एक बड़ी हिंसा की वजह बन जाता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि महिलाओं के विरूद्ध हो रही हिंसा को रोकने के लिए अनेक संस्थायें स्थापित की गयी हैं, उनके लिए अदालतें बनायी गयी हैं किन्तु ये निश्चित रूप से कारगर नही हो पा रही हैं क्योंकि इन्हें भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। हमारी सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा स्वयं महिलाओं को भी अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों, शोषण व हिंसा को रोकने के लिए हिम्मत जुटानी चाहिए। तभी वह समाज एवं राष्ट्र में अपनी पहचान बना सकेंगी तथा एक स्वस्थ समाज व समृद्ध राष्ट्र की परिकल्पना साकार रूप ले सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- शर्मा जी. एल., 2015, सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
- सिंह अमिता, लिंग एवं समाज, विवेक प्रकाशन, दिल्ली
- हसनैन नदीम, 2011, समकालीन भारतीय समाज, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ
- आहूजा राम, 2006 , सामाजिक समस्याऐं, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
- सिंह वी.एन. एवं सिंह जनमेजय, 2013, नारीवाद, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

भारत में अन्वारोहरण प्रथा (सती प्रथा) का इतिहास

डॉ0 नरेन्द्र सिंह
असि0 प्रोफेसर
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
विद्यान्त हिन्दू पी0जी0 कालेज, लखनऊ

भारतीय धर्मग्रंथो में पति की अर्धागिंनी के रूप में स्त्री के गौरव का महियामंड़न इस तरह किया गया है कि उसका पति चाहे भला हो या बुरा हो उसके लिए हर स्थिति में वह पूज्यनीय, वंदनीय तथा माथे का सिंदूर ही रहेगा। पति जीवित रहे या मर जाय, स्त्री को हर स्थित में पति का साथ देना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार पुरूष यज्ञ यज्ञीय कर्मकाण्ड तथा गृहस्थ जीवन में पत्नी का आवश्यकता होती है उसी प्रकार मरने के बाद भी उसे पत्नी की उपलब्धता की आवश्यकता पड़ती है धर्मशास्त्रों की इसी व्याख्या ने स्त्री को मृत पति के साथ जिन्दा जलकर मर जाने की प्रथा को ईजाद किया जो सती प्रथा या अन्वारोहरण प्रथा के रूप में प्रचलित हुई। सती प्रथा का शाब्दिक अर्थ अमर अथवा सत्य पर स्थिर रहने वाली है। दूसरे शब्दों में धर्म के प्रति एकनिष्ठ होकर अपने उज्ज्वल चरित्र की कीर्ति द्वारा संसार में अमर होने वाली स्त्री कहा गया है। सती शब्द की अभिव्यक्ति के लिए प्राचीन साहित्य में अन्वारोहरण का अर्थ मृत पति के साथ चिता बैठना, सहगमन सहमरण और अनुमरण आदि शब्दों का प्रचलन हुआ। अतः सती शब्द की व्यंजना उसके एतिहासिक विकास प्रचलन और प्रसार से है, जिसमें मरे हुए पति के प्रति स्त्री का अनुराग, त्याग और बलिदान परिलक्षित होता है। मरे हुए पति के साथ किसी स्त्री द्वारा जीवित ही अपने प्राणों का प्राण त्याग करना की अनोखी घटना सिरफ भारत में ही नहीं बल्कि भारत के बाहर भी इसके साक्ष्य मिलते है मिस्र के पिरामिड़ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। इस प्रकार मरे हुए पति के साथ जीवित पत्नी के जलकर मर जाने की जघन्य कुप्रथा मिश्र, रोम, तथा यूनान में भी प्रचलित रही होगी।

भारत में अन्वारोहरण प्रथा (सती प्रथा) का प्रारम्भ प्राचीन काल से दिखाई देने लगता है। पूर्ववैदिक एवं उत्तर वैदिक साहित्य में यह सिद्ध करने की गई है कि देश में सती प्रथा का प्रारम्भ आर्यो के समय से हुआ है। किन्तु सती प्रथा के सम्बन्ध में जो उदाहरण मिलते है वह सब संदिग्ध है।

ऋग्वेद[1] में आए एक मंत्र को लेकर मतभेद है कि जिसमें अग्ने शब्द का उपयोग हुआ है उसका सती प्रथा से सम्बन्ध था भी कि नहीं, इसे लेकर विवाद है। इतिहासकार इस बात को मानते है कि ऋग्वेद काल में पत्नी अपने मृत पति के साथ चिता पर सिर्फ लेटती थी उसमें जलती नहीं थी, अपने परिवार के लोगों के कहने पर वह चिता से उतर जाती थी। उसके परिवार के लोग उससे कहते थे कि "उठो और संसार में वापस आओ" तब पति के मृत शरीर के साथ चिता पर लेटी पत्नी अपने को जलने से बचा लेती थी। इससे पता चलता है कि समाज में सती प्रथा का प्रचलन वैदिक काल से ही शुरू हो गया था। उत्तर वैदिक काल में भी सती प्रथा के कई साक्ष्य मिलते है।[2]

तैतरीय संहिता, अथर्ववेद और तैतरीय आरण्यक में कुछ ऐसे ही उदाहरण मिलते है जो सती प्रथा के प्रचलन को परिलक्षित करते है। धर्मशास्त्रों में जिस तरह स्वर्ग और नरक का लालच समाज में दिखाया गया था उससे व्यक्ति को यह लगने लगा था कि उसे स्वर्ग में भी पत्नी के साथ की आवश्यकता होगी। इसी परिकल्पना ने इस जघन्य व्यवस्था को जन्म दिया होगा। अथर्ववेद में भी यह मिलता है कि अपने मृत पति के साथ चिता में अग्नि प्रज्ज्वलित होने के पूर्व पत्नी चिता पर लेट जाती थी और बाद में समझाने बुझाने पर चिता से उतर जाती थी।

आपस्तम्ब धर्मसूत्र में इस बात का उल्लेख किया गया है कि सती प्रथा समाज में प्रचलन में आ चुकी थी और चिता में मृत पति के साथ पत्नी जिंदा ही जलकर मार दी जाती थी। धर्मशास्त्रों के अध्ययन से एक बात तो स्पष्ट समझ आती है कि इनके लेखकों ने स्त्री को एक वस्तु समझ कर मरे हुए पति के साथ जला

देने की बात करके समाज में एक प्रकार से यह सिद्ध करने की कोशिश थी, कि जिस प्रकार पुरूष गृहस्थ आश्रम में रहते हुए अपनी पत्नी के साथ सभी उत्तरदायित्वों का निर्वहन करता है उसी तरह स्वर्ग में भी उसे अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने के लिए पत्नी के साथ की जरूरत पड़ेगी। इसीलिए धर्मशास्त्रकारों ने समाज को सती प्रथा के लिए निदेर्शित किया था।

देश में सती प्रथा का भयावह रूप चौथी सदी ई0 में दिखाई देने लगता है रामायण महाभारत जैसे महाकाव्य जिनकी रचना लगभग गुतकाल में ही कि गई थी इनमें से रामायण में वेदवती के सती होने की कहानी मिलती है।[3] वेदवती एक ब्रहामण समाज की स्त्री थी जिसका पति किसी असाध्य रोग से मर गया चूँकि उसकी पत्नी धर्मपरायण स्त्री थी इसलिए उसने अपने को चिता में जिंदा जलाकर सती का दर्जा हासिल किया था। महाभारत में मिलता है कि राजा पाण्डु की मृत्यु के पश्चात उसकी पत्नी माद्री ने चिता अन्वारोहरण किया था।[4] इसी प्रकार की एक और कहानी मिलती है कि वसुदेव की मृत्यु के बाद उनकी पत्नियों–देवकी, माद्री, रोहिणी, मादिरा ने अपने पति के साथ सहमरण किया था।[5] महाभारत के शान्तिपर्व से पता चलता है कि एक कपोत के मरने पर कपोती सती हो गई थी।

विदेशी इतिहासकार भी सती प्रथा का उल्लेख करते हैं, स्ट्रेबों ने लिखा है कि भारत में स्त्रियाँ अपने मृत पति के साथ जिन्दा जला दी जाती थी।[6] उन्होंने पंजाब की कठ जाति में भी सती होने के साक्ष्य प्रस्तुत किए है।[7] कालिदास ने अपने ग्रंथों में सती प्रथा का जिक्र किया है[8], जिसके अनुसार जब राजा युद्ध क्षेत्र में मर जाता था तो उसकी पत्नी सती पद पाने की लालसा में खुद को चिता में जिन्दा जला लेती थी। कालिदास ने सती होने वाली स्त्री को–"पतिवर्त्मगा" पदवी द्वारा सम्बोधित किया है।[9] वात्स्यायन ने अपने सर्वविदित ग्रंथ कामसूत्र में लिखा है कि नर्तकिया अपने प्रेमियों का दिल जीतने के लिए उनके साथ सती होने का झूठा आश्वासन दिया करती थी।[10] कई स्मृतिकारों ने समाज में एक बात प्रचलित करवा दी थी कि विधवा होकर जीवन जीने से बेहतर है कि स्त्री अपने मृत पति के साथ सती होकर स्वर्ग में सुखों का उपभोग करे।[11]

प्राचीन भारत में सती प्रथा का अभिलेखीय सर्वप्रथम गुप्रकाल में मिलता है। जहॉ एरण नामक अभिलेख में सती प्रथा, सहमरण या अन्वारोहरण का जिक्र हुआ। एरण अभिलेख 510 ई0 का है इसमें हूणों के विरूद्ध लड़ते हुए सेनापति गोपराज की मृत्यु का वर्णन है जब गोपराज की पत्नी को पति के मरने की सूचना मिली तो वह अपने मृत पति के साथ चिता में जलकर मर गई।[12] पुराणों में भी सती प्रथा का उल्लेख है जिसमें श्रीकृष्ण की मृत्योपरान्त उनकी पत्नी रूक्मिणी ने सती होने का मार्ग अपनाया था।[13] पुराणों में यह वर्णन मिलता है कि रेवती अपने पति बलराम के साथ सती हो गई थी।[14] हर्षचरित से पता चलता है कि जब वर्धनवंश का शासक प्रभाकरवर्धन युद्ध में मारा गया तो उसकी पत्नी यशोमती ने आग में जलकर सती पद प्राप्त किया था। ब्रहामण धर्म के शास्त्रकारों ने सती प्रथा की प्रसंशा की है कल्पतरू में ब्रहमपुराण का उदाहरण दिया गया है जिसके अनुसार पति की मृत्यु के बाद विधवा स्त्री की समाज में कोई इज्जत नहीं थी उसकी पल पल दुर्गति होती थी सती हो जाने से स्त्री सभी कष्टों से मुक्ति प्राप्त कर लेती थी। सनातन व्यवस्थाकारों ने ऐसे नियम बनाऐं थे जिससे किसी महिला का पति यदि विदेश में मर जाये तो उसकी विधवा पत्नी को चाहिए कि वह उसकी पादुका के साथ आग में सती हो जाय।[15] स्मृतिकार विज्ञानेश्वर ने लिख है कि सती प्रथा सभी वर्णो में शक्ति से लागू की जाय।[16] लक्ष्मीधर ने लिखा है कि जो स्त्री अपने पति के साथ चिता में सती हो जाती है वह अरून्धती (वशिष्ठ की पत्नी) के समान आचरण करने वाली स्वर्गलोक में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करती है आगे लक्ष्मीधर ये भी कहता है कि सती हुई स्त्री करोड़ों वर्ष तक अपने पति के साथ सहगमन करते हुए स्वर्ग में रहती है लक्ष्मीधर के अनुसार जिस प्रकार सपेरा एक सॉप को बिल से निकाल लेता है उसी तरह पत्नी अपने पति को अधोगति से निकालकर उसके साथ स्वर्ग की ओर प्रस्थान करती है। धर्मशास्त्रानुसार पति की मृत्यु के बाद साध्वी स्त्री के पास सती होने के सिवाय अन्य कोई रास्ता नहीं बचता है। पति के मरने के बाद पतिव्रता स्त्री जब तक अपने शरीर का दाह नहीं कर लेती है तब तक वह मुक्ति नहीं पा सकती है।

प्राचीनकाल से प्राप्त हुई सती प्रथा ने मध्यकाल में भयावह रूप धारण कर लिया, राजपूत राजाओं की पत्नी राजा के मरने पर चिता में जबरदस्ती जलाकर मार दी जाती थी जब राजा की पत्नी सुरक्षित नहीं थी तो समाज की अन्य आम महिलाओं की स्थित अत्यंत दयनीय स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। मुस्लिम आक्रमण कारियों के समय तो स्त्रियाँ अपनी इज्जत आबरू के लिए सामूहिक अग्निदाह कर लेती थी। यह कुप्रथा उन्नीसवीं शताब्दी तक अपने वीभत्स रूप में समाज में प्रचलित हो चुकी थी। सती होने के लिए मृत व्यक्ति की पत्नी को समाज के ठेकेदार मानसिक रूप से तैयार करने के हर जतन करते थे, जिससे शिक्षा विहीन, अशिक्षित महिलाऐं अपने मृत पति के साथ चिता में जलकर मरने के लिए तैयार भी हो जाती थी किन्तु जैसे चिता में आग लगाई जाती थी और जीवित स्त्री की त्वचा आग का ताप महसूस करती वैसे ही वह चिता से कूदकर अपनी जान बचाने के लिए भागती थी, वैसे ही चिता के चारों ओर भाला लिए खड़े समाज के रहनुमा उसे भाले से कोंचकर चिता में फेंक देते थे और वह असहाय स्त्री मृत पति की चिता में करूण कृन्दन व ह्रदयविदारक चीतकार करते हुई जिंदा जलकर मर जाती थी। इस अमानवीय प्रथा को अंग्रेज गवर्नर जनरल विलियम बैठिक ने 1829 ई0 में सती प्रथा उन्मूलन कानून बनाकर खत्म कर के भारत की करोड़ो महिलाओं को इस जघन्य तथा अमानवीय प्रथा से मुक्ति दिलाई।

संदर्भ–सूची

1. ऋग्वेद 10,8,7
2. तैतरीय संहिता, विल्सन वर्क 2, पेज–295–96
3. रामायण, 7.17.14, 33
4. महाभारत आदि पर्व 95.65
5. वही 17.7.8.24
6. मैक्रिंडल पेज, 69–70
7. वही
8. कुमारसम्भव पेज 4,33,35,36
9. वही
10. कामसूत्र, 6.2.53
11. वृहस्पति 483–84
12. फ्लीट 3,83
13. विष्णु पुराण पेज 5.38.2
14. वही
15. ब्रहमपुराण का उद्धरण कल्पतरू–पेज–634
16. मिताक्षरा पेज–1, याज्ञवल्क्य स्मृति पेज–86

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

THE ROLE OF LINGUISTICS IN ENGLISH LANGUAGE TEACHING

Dr. Radhey Shyam Suman
Patna University, Patna

Abstract

Individuals growing and living in given societies require, to varying degrees new second or foreign languages after they have learnt their first language. In India, English has a major role to play in the success both of individual as well as of the organization they are attached to. The need of today's world is not only to know the content of English but also its qualitative function as a link language. There is an increased awareness among students in Indian Universities to arm themselves with the weapon of English as this language is widely believed to be a window to the world and a language of great mobility, both social and economic, wielding great dynamism and power. The principal question is then what provision must be made by teachers of English language and society to help these individuals to learn English as a second language. The answer to this question is what is meant by language teaching. Language teaching can be defined as activities which are intended to bring about language learning. It is hardly imaginable that a language could be taught without some underlying conception of the general nature of language. Linguistics constitutes the most systematic study of language at our disposal and since both linguistics and language teaching have language as their subject matter, there is a possibility that each can influence and learn something from each other. The present paper deals with the role of linguistic in English teaching.

Key Words: Language, Linguistic, LanguageTeaching, English Grammer, Approach

A legitimate knowledge of linguistics can contribute to the taking of decisions about English Language teaching in Indian Universities. In order to give a balanced view of the field of linguistics, the structural approach as exemplified in the works of eminent linguists, Ferdinand de Saussure and Leonard Bloomfield, and the transformation generative grammar of Noam Chomsky have been incorporated. Modern linguistics is descriptive linguistics and it gives primacy to the Saussurean concept or synchronic as opposed to the diachronic study language. It also places emphasis on the spoken over the written form of language. According to the structural linguistics language be represented as a 'system' or structure. Simple concepts to the layman as a language user, such as 'speech sound' 'word' 'sentence', 'meaning' and text is explained as a system scientifically by linguists. These common-sense features correspond roughly to the major areas of linguistic investigation and each is represented in one or the other branches of linguistics.

1. speech sound in phonetics and phonology
2. wordsin lexicology, semantics and morphology
3. sentencesin syntax
4. meaningin semantics
5. text (dialogue ,narrative,in discourse analysispoem

(Stem: 1983, 131)

The Understanding of the structure of the English language is of immense help to the teacher as well as the learner. In the course of the twentieth century the scientific emphasis in language teaching has shifted from the study of speech sounds (phonetic and phonology) to grammar (morphology and syntax) then to meaning (semantics) and the study of texts (discourse analysis). Linguists have of course always been aware of the fact that in language teaching /learning all aspects are involved.

The most noticeable features of language t any leaner are the speech sounds and the new science (linguistics) had to find out how to study language empirically. Today phonetics and phonology are two well established disciplines of linguistics. Phonetics studies the articulatory and acoustic phenomena which make it possible to produce and perceive speech sounds. It provides us with a tool, a set of descriptive terms by which describe, as minutely as is necessary for the task in hand, a particular physical sound and the gestures which produce it (Brown 1975 : 99) Phonetics studies speech sounds as such regardless of particular language system. Phonology is a more strictly linguistic discipline which investigates the sound systems of particular languages and develops general principles applicable to the sound systems of all languages. In other words, phonetics can be considered is helpful to pronunciation teaching in that it provides the teacher with a diagnostic understanding of how speech sounds are produced. Phonology is needed to in understand what constitutes the sound system of a particular language. The sounds or phonemes of English pose a variety of difficulties to the language learner in India as there are some fricative sounds which do not exist in the mother tongue or first language, for e.g. /z/ as in ‘measure’, /f/ as in ‘full’, /z/ as in ‘zoo’. Other areas of difficulties for the non-active speaker in India include the inability of distinguish between the long and short vowel sounds especially /i/and/i:/ /u/and/u:/ and /z/ and /3:/ and the central hall- open unrounded vowel /^/ as in ‘cup’. In the Indian context, the non-native speaker has to practice playing around with individual sounds to get comfortable with them. A language laboratory is of immense help as certain sounds of English are commonly articulated incorrectly by Indian speakers. To enable him to teach phonetic accuracy, knowledge of phonetics is especially beneficial for an English language teacher. Intonation patterns of English language in connected speech are suprasegmental phonemes which fulfill grammatical and attitudinal functions. Intonation contributes directly to the interpretation of an utterance, and accuracy o intonation is therefore at least as

important as accuracy of sound segments. Unfortunately these features are sometimes very puzzling for the language learner. Thus, the science of phonetics provides the language teacher with a precise description of articulation of the target language. A language teacher who is relatively uninformed about phonetic rules, faces the danger of transmitting quite serious errors to his pupils. Similarly knowledge of English phonology helps the teacher establish the practices of pronunciation teaching by enabling him to identify the most important features to be acquired.

Lexicology, the study of lexis or vocabulary, apart from its treatment under morphology as a sequence of morphemes has received relatively little systematic attention, at least from English speaking linguists. Yet for language instruction lexicography, and other practical activities, a systematic understanding of lexis is important. Linguists have noted all the words of a language pattern into describable categories that have certain characteristics and differing functions that native speakers understand intuitively. For example, in English like othe4r languages, we find two simple categories content words and functions words. Content words are the largest category including nouns, verbs, adjectives and adverbs. This class of words is also called the open class of words because we always add new words to it. Some recent examples are blog 'bling- bling' and 'tweet'. 'Blog' and 'tweet' have been expanded to other part of speech in 'blogger', 'blogging' and 'twitter'. The remaining parts of speech make up what linguists call functions words. These are pronouns, prepositions, articles, conjunctions and interjection. They are termed functions words because their most significant role is connecting the content words in a sentence together. This group is also called the closed class of words because it is a limited set that is not being added to, the language as cultures charge or technology grows.

The knowledge of the structural components of words is equally helpful in language teaching. Structural linguists state that a word has meaningful parts which they term 'morphemes'. Morpheme is the minimal meaningful unit of language. For example, the word 'unhappy' has two meaningful parts: 'happy' describing an emotional condition and a prefix 'un' meaning not. The combination of these parts gives us the complete meaning of the word 'unhappy'. Morphemes are further categorized into free and bound morphemes. We speak of words like 'happy' as being free morphemes because into free to appear alone, and prefixes like 'un'- as bound morphemes because they are always attached to or bound to a free morpheme. Bound morphemes are also called affixes which are a class of words that include suffixes, prefixes and infixes. Suffixes and prefixes abound in English, but infixes are rare. Some linguists cite the plural forms of the words listed- man/men, mouse/mice, goose/geese and state that the middle vowels in the plural form are infixes while some do not agree with this. In English, there are two classes of bound morphemes based on their functions: inflectional and derivations. Inflectional

morphemes may be identified by the presence of several features the most important being that when they are added to a word, the grammatical class does not change. It the root word is a noun (dog) it will stay a noun after an inflectional morpheme is added (dogs). Inflectional morphemes in English are all suffixes though in other language they can be prefixes as well. In English, the inflectional morphemes are a very limited group of suffixes that can be easily remembered. Derivational morphemes in English on the other hand, can be both prefixes and suffixes (as in 'disregard' and 'happiness'). Unlike the inflectional suffixes, derivational suffixes usually change the grammatical category of the words to which they are attached (govern verb- 'government' noun or 'happy' adjective – 'happiness' noun). However, the derivation prefixes generally do not change the grammatical category of the word but change the meaning in some way (e.g. happy-unhappy, appear-disappear) but in some cases change the grammatical class of the word (e.g. 'friend' noun-'befriend' verb, 'float' verb- 'afloat' adverb). There are many semantic gaps in English, meaning there are words for which the root of a word is no longer productive but the derived form is. Thus we say an employee is 'disgruntled', but never 'gruntled'. We can be 'overwhelmed' but not simply 'whelmed'. That is why many linguistic recognize that morphology is the level of structure between the phonological and syntactic. Structure lists believe that morphemes are the minimal unit of syntactic analysis and they have the function of demonstration relationships between items in a sentence at the level of word and at the level of a sentence.

The grammar of English has been one of the most productive and most controversial areas for linguistics. Grammar has been defined by linguistics as "that branch of the description of languages which accounts for the way in which words combine to form sentences" (Lyons 1971- 63). It is traditionally divided into morphology end syntax. Morphology studies the internal structure of the form of words, while syntax is the study of sentence structure. The importance of grammar will hardly be questioned by language teacher. Most language courses and text books have operated with grammatical concepts and categories which have been considered as a self evident and simple basis of matical concepts and categories which have been considered as a self evident and simple basis of language. Structural linguistics states that the syntactic structure of English can be studied as arrangement of items (the basic components of language). Structuralists contend that any item has relations with other items along two axes. Saussure termed these as syntagmatic and paradigmatic relationships. In the syntagmatic or horizontal axis the items are related to the other items in a particular sequence. However, relationship also exists on the paradigmatic or vertical axis. That is to say, any item in a sentence can be substituted by one or more other items that have similar grammatical characteristics despite some differences in grammatical or lexical meaning. For example, any one of the number of personal pronouns may occur as the subject of a sentence and

the overall sentence structure remains the same. The aim of this item approach to language teaching (Wilkins 1983: 74) is to work out a complete set of rules, which if followed in the given sequence, would produce all of the sentences that a speaker/learner would recognize as grammatical and none of those that he would believe were ungrammatical. In other words, if a learner were to internalize the 'langue' or a set of rules about the structure of language he can produce the, actual set of sentences which Saussure defines as 'Parole'. The langue/parole distinctions is very similar to chomsky's concept of 'competence' and 'performance'. As compared to many other languages, English may be fairly straightforward morphologically. A paradigm is often a set of morphological forms isolated from structural relations which they are supposed to operate. How far a pupil learns the structural functions of items will depend on what kind of practice he follows for the learning of a paradigm. Once he has mastered the internal form of an item of the target language, in our case of English language he can acquire it fairly easily.

Noam Chomsky's 'Syntactic Structures' (1957) added a new dimension to the study of syntax in linguistics and this in turn had had far-reaching influences on language teaching/learning. His transformational generative grammar systematically represented language by a set of algorithms. Earlier he phrases structure rules (PS/ Rules) was from a set of rules, based on phrases, was helpful in shown by the following notations.

S – NP + VP +NP

NP- NP + Prep.Phrase

Adj. phrase

Adverb.Phrase

NP- Pre-Determiner – Central Determine –Post Determiner

VP – Aux + V

Aux –Tense + (Modal) + (Perfect) + (Progressive)

However, Chomsky pointed out that even a full set of PS rules are not perfect because PS rules focus only on ordaining of words into and phrases into sentences. For example, they create not only all the meaningful grammatical sentences of a language but also the meaningless grammatical ones like the well known Chomskyan sentence.

Colourless green ideas sleep furiously.

Phrase Structure rules were the result of early work in syntax but they were not sufficient to handle by themselves the full complexity of the structure of language (Winkler, 2008 : 129].

Chomsky's generates approach opened a new perspective to syntactic studies as he found the structural analysis of sentences propounded by structuralists deficient. It was unable to handle economically such changes as those from active to passive from direct to indirect speech, from affirmative to negative, from to affirmative to interrogative,

from sentences to nominalized phrase that language learning exercises involved. Chomsky's concept of surface and deep structures in his transformational (TG) grammar brings together syntactic information which is highly informative, not only in the description of the language but also in developing an understanding of its acquisition. Proponents of TG said that many types of related sentences were all generated from base sentences called the deep structure. The variations of the deep structure sentence, the actual structure. If, for examples we read on the side of a delivery van of a firm of nursery gardeners, Our business is growing we can intuitively relate this surface structure to two different underlying things which might be paraphrased as follows.

Our business is flourishing (expanding) and it is our business to grow plants.

Further to Chomsky the deep structure is an assertion or declaration sentences and everything else generated from that sentences, like question passives negative sentences etc. were the surface structures. To get from the deep structure to the surface structure, the mind performs transformations, the movement of certain structures to other parts of the sentences. So, if for example, one has to shift a declarations sentences to a yes-no question, the transformational rule, 'Move-Aux' (move the auxiliary of the verb) must be applied so that the auxiliary element of a sentence moves to a position in front of the subject. Thus we get.

The car is moving (deep structure, declarative)

Is the car moving? (surface structure, interrogative)

There are many other transformations that can happen.

We may conclude by stating and affirming that language requires a concept of the nature of language. Implicitly or explicitly the teacher works with a theory of language. Linguistics provides valuable insights into the detailed description and regularity of language system. This knowledge has practical application in the teaching of English as foreign language especially in the Indian contest where English language teaching is introduced in many states at the level of middle school. The analysis of particular syntactic structure used by students acquiring English language enables them to understand the structure of the largest Language. Language teaching involves a well grounded foundation in linguistics apart from language teaching methodology, an idea which has been iterated by the British applied linguist Strevens

The teaching English as a foreign language had become a joint activity, containing on the on one hand both education and methodology….., and on the other hand, a sound background of linguistics thought and up-to-date descriptions of the present day language……' (Strevens, 1963: 19).

The word-wide demand for English has created an enormous demand for quality language teaching and a teacher who recognizes the value of linguistics will be a competent and therefore a better language teacher.

REFERENCES:

1. Lyons, John.New Horizon in Linguistics, Middlesex: Penguin, 1970. Print.
2. Lyons, John.Language and Linguistics, Cambridge University Press, 1981, Print.
3. Stern, H.H. Fundamental Concepts of Language Teaching Oxford: Oxford University Press, 1983, Print.
4. Halliday, M.A.K., Mc Intosh, Angus and Strevens, Peter. The Linguistic Sciences and Language Teaching, Cambridge : Cambridge University Press, 1964, Print.
5. Winkler, Elisabeth Grace, Understanding Language. London Continuum, 2008. Print.

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

महिला सशक्तिकरण : ऐतिहासिक संकल्पना

डॉ0 सुनीता कुमारी

महिला सशक्तिकरण का नाम कर्ण पटल पर सुनाई देते ही एक बात जेहन में बिलजी की तरह कौंध जाती है और मानस पटल पर उभरा प्रश्नवाचक चिन्ह मस्तिष्क से यह प्रश्न करने लगता है कि आखिर यह महिला सशक्तिकरण है क्या?

महिला सशक्तिकरण वर्तमान में होने वाले विचार गोष्ठी वर्कशाप एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बहुत जोर–शोर से सुनाई देता है। नवीं पंचवर्षीय योजना (1922–2002) से महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया गया लेकिन वास्तव में महिला सशक्तिकरण का क्या अर्थ हैं? इसके अन्तर्गत महिलाओं में किन विशेषताओं को विकसित करना है? अभी भी बहुत स्पष्ट नहीं है, फिर भी महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को समान बौद्धिक, राजनीतिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में निर्णय लेने की स्वतन्त्रता हो तथा महिलाओं में इसी प्रकार की क्षमता का विकास हो जिससे वे अपने जीवन का निर्वहन इच्छानुसार कर सकने में सक्षम हो सके।

सशक्तिकरण का अभिप्राय सत्ता महिलाओं की साझेदारी, निर्णय लेने की क्षमता का एक बड़ा मानक है। महिला सशक्तिकरण, महिलाओं को नया क्षितिज, नया संसार दिखाने का प्रयास है जिससे वे नयी क्षमताओं को प्राप्त कर स्वयं को नये तरीके से देख सकें तथा घरेलू शक्ति सम्बंधों को बेहतर तरीके से समायोजि कर सकें साथ ही घरेलू एवं वाह्य परिवेश में स्वतन्त्रता की अनुभूति कर सकें।

सशक्तिरकण का अर्थ है किसी कार्य को करने या रोकने की क्षमता, महिलाओं को पुरूषों के समान वैधानिक, राजनीतिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उनके परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वतन्त्रता से है। भारत में महिला सशक्तिकरण का प्राथमिक उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक, आर्थिकव राजनीतिक दशा को सुधारना जिससे वे सभी में स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।महिला सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें महिलाओं को पुरूषों के समकक्ष लाकर उनके प्रति होने वाले भेदभाव समाप्त करके उन्हें स्वरोजगार का अवसर उपलब्ध कराने के प्रयासों का पुनर्बलन किया जाये ताकि वे अपनी परम्परागत दब्बू प्रवृत्ति के आवरण से बाहर निकल कर आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी बन सकें। यह प्रयास उनकी योग्यता का चातुर्दिक सशक्तिकरण करता है ताकि अभिरूचि स्पष्ट हो सके तथा संसाधनों का समुचित उपयोग किया जा सके। दूसरे शब्दों में महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य सामाजिक सुविधाओं की उपलब्धता राजनैतिक और आर्थिक नीति–निर्धारण, भागीदारी, समान कार्य के समान वेतन, कानून के तहत सुरक्ष एवं प्रजनन अधिकारों आदि से संबंधित है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ वास्तव में महिला को शक्ति प्रदान करता है न कि पुरूषों पर वर्चस्व स्थापित करता है। महिला सशक्तिकरण वर्तमान में बेहद, जरूरी, विचारणीय एवं संवेदनशील प्रश्न है। चुँकि यह महिला की स्वतन्त्रता, समानता, मजबूती और महत्ता का हिमायती है। इसलिये इसे सम्पूर्ण मानव जाति के आधे हिस्से की बेहतरी या उन्नति से जुड़ा हुआ विचार–विमर्श कह सकते हैं। यूरोप में इसकी शुरूआत दो शताब्दी पहले ही हो चुकी थी। जब 1792 में मेरी बोस्टन क्राट की पुस्तक **'ए विण्डिकसन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमेन'** का प्रकाशन हुआ। जिसमें पहली बार फ्रांस की क्रान्ति से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृत्व के सिद्धान्त को स्त्री समुदाय पर भी लागू करने की मांग की गयी। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया कि कोई भी समतावादी सामाजिक प्रश्न तब एक वास्तविक अर्थों में समतावादी नहीं हो सकता जब कि वह स्त्रियों को समान अधिकार व समान अवसर न दे तथा उन्हें सुरक्षा न प्रदान करें। महिलाओं की मुक्ति की सिफारिश जॉन स्टुअर्ट मिल ने 1869 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'सब्जेक्शन ऑफ

वूमेन' द्वारा इसको और मजबूत आधार दिया। इसके अतिरिक्त **कोन्दोरसों, ओलिम्पी द गूजे** तथा **ग्रीयर** आदि ने स्त्रीवादी विचारों को स्थापित और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यह व्याख्यायित किया गया कि वर्ग और जाति के समान ही लिंग को भी सामाजिक न्याय के विवेचन में एक स्वतंत्र स्थन दिया जाना चाहिए। इस दौरान सारा बल महिलाओं को पुरूषों के समान ही, समाज में अधिकार पाने के हक पर दिया गया। यह उदारवादी नागरिक अधिकारों की वैचारिकी पर आधारित था। पुरूषों के समान नारियों को भी समान कार्य में समान वेतन, चिकित्सा सुविधाएँ आदि समाज और राज्य की ओर से प्रदान किये गये। इस मॉडल में यह माना गया कि सम्पूर्ण दुनिया की स्त्रियों की समस्याएँ और उनके हल एक समान हैं क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज ही नारी शोषण का आधार है जिसका अंत नारी–पुरूष के बीच कानूनी असमानता दूर करके ही सम्भव है। इसे '**नारी–कल्याण मॉडल**' कहा गया।

दूसरे मॉडल को **''नारी विकास मॉडल'' Women Development Model** के नाम से जाना गया। हेस्टर वोसेश्य की कृति **Women's Role In Economic Development 1970** को इस मॉडल को प्रारंभिक स्रोत कहा गया। इसमें यह व्याख्यायित किया गया कि कार्य सम्पादन, संसाधनों की उपलब्धता और लाभों के बंटवारे में लैंगिक असमानता हैं विभिन्न अध्ययनों के माध्यम से इस मॉडल के समर्थकों ने यह व्याख्यायिक किया कि दुनिया की आधी आबादी महिला की हैं, वे लगभग दो–तिहाई कार्य–घण्टों का निष्पादन करती हैं परन्तु आय का दसवां हिस्सा ही उन्हें प्राप्त होता है। इस प्रकार लैंगिक असमानता को दूर करने के लिए नारी–विकास की विशिष्ट योजनाएँ संसार के अनेक देशों (जिसमें भारत भी शामिल है) में बनायी गयी। परन्तु इस मॉडल में भी महिलाओं को समानता का अधिकार नहीं प्रदान किया गया। इसके विपरित सामाजिक असमानताएं और सुदृढ़ हुई। समाज वैज्ञानिकों के अनुसार ऐसा विकास के पूंजीवादी–पितृसत्तात्मक मॉडल के तहत हुआ। इस नीति ने लिंग, संवेदी विकास की नीतियों और उसे दर्शाने वाले लिंग–संवेदी सूचकांक को जन्म दिया। तत्पश्चात् महिलाओं को विकास कार्यों में सहभागी बनाने पर जोर दिया गया न सिर्फ उन्हें विकास के फायदों तक ही सीमित रखा गया। इस प्रकार नारी विकास मॉडल दो चरणों में पूरा हुआ जैसे नारी और विकास तथा लिंग और विकास। पहले चरण में जहाँ विकास नीतियों में नारी कल्याण पर समुचित ध्यान दिया गया वही दूसरे चरण में लिंग भेंद को ही योजना का आधार बनाया गया। आर्थिक विकास को प्रधानता देने के कारण इस मॉडल में सशक्तिकरण के आयाम की अनदेखी की गई, जिसकी वजह से इस मॉडल की निन्दा की गई।यह व्याख्यायित किया गया कि आर्थिक रूप से महिलाओं का उठता स्तर उन्हें आवश्यक रूप से पहचान और समान सामाजिक स्तर नहीं प्रदान करता। कई स्थितियों में दुविधा पैदा हो जाती है क्योंकि उन्हें परम्परागत भूमिकाओं के साथ–साथ नयी आर्थिक जिम्मेदारियाँ भी निभानी होती है। इसके लिए आवश्यक है कि निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाये एवं घरेलू और सामुदायिक शक्ति संरचनाओं में उनकी सक्रिय भागीदारी हो। इसी विचारधारा ने 'नारी सशक्तिकरण' की नई अवधारणा का सूत्रपात किया।

नारी सशक्तिकरण या सबलीकरण शक्ति के आयामों की ओर अपने को इंगित करता है। इस मॉडल के अन्तर्गत यह माना गया कि नारी सबलीकरण की कुंजी उसके स्वयं तथा शक्ति संचार के ऊपर नियंत्रण में छिपी है। शक्ति संरचना पर नियंत्रण के फलस्वरूप ही उन्हें अन्य स्तर पर लिंग समानता, भागीदारी, संसाधनों की प्राप्ति, भौतिक कल्याण आदि शक्तियाँ स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो सकती है। नारी सशक्तिकरण का अर्थ घरेलू और सामुदायिक दोनों शक्ति संरचनाओं में नारी की भूमिका को बढ़ाना है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री आन्द्रे बेताई भी मानते हैं कि नारी सबलीकरण के पीछे मुख्य धारणा शक्ति संबंधों के पुनर्निर्धारण द्वारा ही समाज स्थापित किया जा सकता है। इसे ही एंथनी गिडेन्स नें **'Transformation Capacity'** कहा है और कुछ अन्य समाजशास्त्रियों ने इसे **'Power Over'** के स्थान **Power to'** से व्याख्यायित किया। मुख्यतः यही मॉडल हर स्तर पर लैंगिक असमानता का शनैः–शनैः ह्रास करता है तथा नारी विकास मॉडल से अधिक वृहद और व्यापक है, क्योंकि यह केवल सामाजिक कल्याण या आर्थिक

बराबरी को महत्व नहीं देता, अपितु आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक सभी पहलुओं को एक सूत्र में पिरोकर उन पर विचार करता है।

नारी सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामान्य तौर पर दो तरीके अपनाये जाते हैं–

1. राज्यों द्वारा कानूनी और प्रशासनिक उपायों द्वारा उन्नयन।
2. महिलाओं द्वारा स्वयं संगठित होकर शक्ति प्राप्त करना।

इस प्रकार नारी सशक्तीकरण के दोनों तरीकों में यहां एक रास्ता ऊपर से नीचे की ओर जाता है तो दूसरा नीचे से ऊपर की ओर। इस प्रकार यह व्याख्यायित कर सकते हैं कि जहाँ नारी–विकास मॉडल एक सामाजिक–आर्थिक परियोजना हैं, वहीं नारी सशक्तीकरण मुख्यः एक राजनैतिक अवधारणा है।

सामान्य तौर पर सशक्तीकरण की अवधारणा को दो रूपों में व्याख्यायित किया जा सकता है–एक आदमी और बहुआयामी। राजनैतिक शक्ति पर केन्द्रित नारी सशक्तीकरण का मॉडल एक आयामी है क्योंकि यह नारी को अपने शरीर, यौनिकता और संस्थागत संसाधनों पर नियंत्रण तक सीमित करता है जबकि सबलीकरण की बहुआयामी अवधारणा नारी सशक्तीकरण के लिए अधिक सम्भावनापूर्ण है। राजनैतिक आयाम के अलावा सशक्तीकरण के सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक आयाम भी महत्वपूर्ण है। अतः सशक्तीकरण की बहुआयामी अवधारणा जो नारियों को सभी प्रकार की क्षमताओं को बढ़ानें पर बल देता है, इसलिए एक आयामी राजनैतिक शक्ति केन्द्रित अवधारणा के स्थान पर अपनाने की आवश्यकता है क्योंकि न्यायपूर्ण सम्बन्धों की जगह हमें संस्थागत स्तर पर नारी विकास का सपना पूरा करना है और यह तभी सम्भव है जब नारी सशक्तीकरण का लक्ष्य सामाजिक तौर पर प्राप्त होगा।[5]

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता :– इतिहास के अध्ययन से यह परिलक्षित होता है कि पूर्व आर्यन युग (300 ई.पू.–200 ई.पू.) महिलाएं समाज में अपना विशिष्ट स्थान रखती थी। तत्कालीन साहित्यिक अभिलेखों के अभावस्वरूप निश्चित रूप से महिलाओं की स्थिति के बारे में व्याख्या अतिशयोक्ति होगी लेकिन मोहनजोदड़ों और हड़प्पा की संस्कृति यह व्यख्यायित करती है कि आर्यों के पूर्व सिंध समाज में महिलाओं को विशेष सम्मान प्राप्त थी। समाज बेहद सुसभ्य और सुसंस्कृत था, जिससे यह प्रतीत होता है कि महिलाओं की स्थिति भी श्रेष्ठ रही होगी।

सिंधु सभ्यता के बाद 1500 ई.पू. के युग को वैदिक युग कहा गया। इसी काल में वेद, ब्राह्मण, सूत्र, उपनिषद् और पुराणों आदि की रचना हुई, जिनके अध्ययनों के आधार पर समाज वैज्ञानिकों ने वैदिक युग को, महिलाओं के सामाजिक स्थिति के संदर्भ में स्वर्ण युग कहा हैं, क्योंकि इस कालखण्ड में महिलाओं को समाज में अत्यन्त उन्नत स्थिति प्राप्त थी। हालांकि उस समय पितृसत्तात्मक पारिवारिक व्यवस्था थी फिश्र भी पुत्र और पुत्रियों को समान अवसर तथा सुविधाएं दी जाती थी। शिक्षा के मामले में कोई लैंगिक भेद–भाव नहीं था। उपनयन संस्कार के पश्चात् कन्यायें भी वेदों का अध्ययन करती थी इसलिये ऋचाओं के सृजन में लगभग 20 महिलाओं ने भी भागीदारी की थी।

वैदिक युग के बाद 600 ई.पू. से 300 ई.पू. के कालखण्ड को क्रांति युग की संज्ञा दी जाती है। लगभग इसी समय कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' और मनु ने 'मनुस्मृति' की रचना की ।इन महाग्रंथों के द्वारा समाज को पुनः विन्यासित किया गया जिससे उस समय की सामाजिक परिस्थितियों में महिलाओं की स्थिति का क्षरण शुरू हुआ। इसी समय हिन्दू समाज में प्रचलित '**संस्कार व्यवस्था**' अस्तित्व में आयी, जिससे महिलाओं को दोयम दर्जे का नागरिक बना दिया।

सन् 1200 से 1757 ई. तक के मध्यकाल में भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। वहीं हिन्दू समाज मे जाति व्यवस्था ने भी अपने पैर पसार लिये थे। मुगलकाल में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई। ब्राह्मणों ने हिन्दू धर्म की रक्षा, रक्त की शुद्धता और स्त्रियों के स्त्रीत्व को बनाये रखने के लिए महिलाओं पर अनेक प्रकार के सामजिक प्रतिबन्ध लगाये। महिला शिक्षा पर रोक, पर्दा प्रथा, सती प्रथा और बाल विवाह जैसे कुरीतियां इस काल में बढ़ी। फलस्वरूप महिलाएं दासी और उपभोग की वस्तु बनकर रह गयी।

पुनर्जागरण काल के दौर में राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, एनी बेसेण्ट, स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे सुधारकों ने महिलाओं की दयनीय परिस्थिति के सुधारों पर जोर दिया। तत्पश्चात् स्वतंत्रता आंदोलन प्रारम्भ हुआ, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया। इस दौर मे महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों मे आगे आयीं। स्वतंत्रता के पश्चात् पुरातन परम्पराओं का विरोध होने लगा। ऐसी परम्पराओं पर भी प्रश्नचिन्ह लगे जो स्त्रियों को पुरूषों के मुकाबले कम करके आंकती थी।[6] स्वतंत्रता पश्चात् संयुक्त राष्ट्र सभा का सदस्य होने पर भारत ने उसके चार्टर पर हस्ताक्षर करते वक्त, एक जनकल्याणकारी समाज के निर्माण पर जोर दिया। सामाजिक पुनर्रूत्थान और विकास हेतु दलितों, पिछड़ो और महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, शारीरिक और संवैधानिक रूप से सशक्त करने हेतु बड़े पैमाने पर कार्य योजनाओं का निर्माण किया गया। सशक्तीकरण के यंत्र के माध्यम से महिला जागरूकता एवं विश्व स्तर पर उनकी सहभागिता को बढ़ाने हेतु राजनीतिक दलों, ट्रेड यूनियनों, गैर–सरकारी संगठनों, स्वैच्छिक संगठनों एवं सहकारी समूहों के हस्तक्षेप में वृद्धि हुई।[7]

महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य

सशक्तिकरण को जागरूकता निर्माण और वृहद स्तर पर सहभागिता में क्षमता विकास की एक प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें निर्णय निर्माण शक्ति में हिस्सेदारी के साथ ही उसके नियंत्रण और परिवर्तन की प्रक्रिया में भी हिस्सेदारी देना सम्मिलित है। इस तरह महिला सशक्तीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो कई विरोधाभासी अन्तर्सम्बन्धों और सामान्य अनुभव तत्वों से अविर्भूत हुई हैं।[8] महिला सशक्तीकरण में सामाजिक सुविधाओं की उपलब्धता, राजनैतिक और आर्थिक नीति निर्धारण में योगदान, समान कार्य के लिए समान वेतन, कानून के तहत सुरक्षा एवं प्रजनन अधिकारों को सम्मिलित किया जाना महिलाओं को जागरूक करके उन्हें आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी साधनों के बारे में सहभागी बनाना प्रमुख लक्ष्य है। मुख्यतः महिला सशक्तिकरण के उद्देश्यों को निम्न रूप से व्याख्यायित कर सकते है :

1. लिंग समानता के लक्ष्य को पाने के लिए महिलाओं को उनकी प्रस्थिति, व्याप्त भेदभावपूर्ण व्यवहारों, अधिकारों एवं अवसरों के बारे में जागरूक करना।
2. योजना निर्माण, निर्णय प्रक्रिया, संगठन, प्रबंध और अन्य संसाधनों पर नियंत्रण, समझौते की क्षमता और कौशल का महिलाओं में विकास करना।
3. घर और समुदाय में निर्माण प्रक्रियाओं में सशक्त सहभागिता एवं नियंत्रण हेतु जागरूक करना।
4. पुरूषों और महिलाओं में असमानता को समाप्त कर समानता का निर्माण करना।

इस तरह महिलाओं को घरेलू और बाहरी दोनों स्तर पर सशक्त करना ही महिला सशक्तिकरण एक संकेत है, शक्ति देने की, उत्थान की तथा सभी को समान अवसर देने की।[9] संतुलित, अर्थपूर्ण, सामाजिक–आर्थिक, राजनैतिक संरचना एवं विकास में जन आबादी के आधे भाग की सक्रिय, सहभागितां की उपेक्षा नहीं, बल्कि उसे सुनिश्चित करना ही सशक्तीकरण का लक्ष्य है। आज तक नारी सशक्तिकरण के अनेक निहितार्थ निकाले गये हैं, जिसमें सैद्धान्तिक स्तर पर उदारवादी, समाजवादी/मार्क्सवादी और रेडिकल

नारीवादी (उग्र–उदारवाद) दृष्टियाँ उपलब्ध हैं। इस तरह नारीवाद के उदय को हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं :–

1. उदारवादी दृष्टिकोण
2. समाजवादी/मार्क्सवादी दृष्टिकोण
3. रेडिकल नारीवादी दृष्टिकोण

नारीवादी सैद्धान्तिक दृष्टिकोण महिलाओं के चिन्तन के विशिष्ट अनुभवों जैसे उनके दोयम दर्जे, विभिन्न निकायों में उनकी निम्न उपस्थिति, उनके साथ होने वाले भेदभाव तथा हिंसा को समाहित करने के लिए विभिन्न शाखाओं के संकल्पनात्मक फ्रेमवर्क की नये सिरे से पड़ताल और पुर्नभाषित है। नारीवादी शब्द का प्रयोग 1890 के बाद आम जन मानस के मानसपटल पर पड़ा। जेंडर पहचान, लैंगिकता की चेतना और महिला उत्पीड़न के प्राथमिक क्षेत्र की तलाश इन नारीवादी विचारों में किया गया जिसका प्रारंम्भिक स्वरूप उदारवादी दृष्टिकोंण था।

उदारवादी दृश्टिकोण

उदारवादी नारवादी आन्दोलन 17वीं सदी के परवर्ती काल से 18वीं सदी के परवर्ती काल तक पश्चिमी जगत में सम्पन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलावों की उपज थी। उदारवाद की बुनियाद बने आजादी, समानता और न्याय के विचार सत्तहीनता और चारदीवारी में बन्द महिलाओं के वास्तविक जीवन के अनुभवों से बिल्कुल विपरीत थे। इन धारणों को ठीक करने में 1792 में लंदन से प्रकाशित मेरीवोल्स्टोन क्राट ने अपनी पुस्तक **"Vindication of the Rights of Women" (महिलाओं के अधिकारों का समर्थन)** मे महिला अधिकारों की जोरदार हिमायत की। मेरीवोल्स्टोन क्राट का तर्क था कि महिलाओं को राजनीतिक अधिकारों से वंचित करने का कोई तार्किक आधार नहीं है। अगर महज तार्किकता ही राजनीतिक अधिकारों का प्रयोग करने के मामले मे व्यक्ति की क्षमता का पैमाना है तो महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में सहभागिता से वंचित करने का कोई आधार नहीं है। जेंरेसी वेंथम और जार्ज स्टुअर्ट मिल जैसे उपयोगवादी विचारकों ने महिलाओं के मताधिकार का समर्थन किया। उनका मत था कि मानव जाति का आधा हिस्सा नैतिकता के आधार पर पुरूषों के समान हैं। 1851 में उन्होंने अपने लेख **"The Subjection Of Women" (महिलाओं की अधीनता)** मे काम और परिवार की पारम्परिक प्रणालियों पर सवाल उठाया, जो उनके मुताबित महिलाओं को न केवल घर तक सीमित तथा प्रतिबंधित करती है बल्कि चयन के अधिकार से भी वंचित करती हैं। समानता और न्याय की धारणाओं के सन्दर्भ में इस विचारधारा ने विवाह नामक संस्था के मूल्यांकन की भी कोशिश की।

महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कई प्रकार की गतिविधियां सामने आई। इन विचारो की परिणति के रूप में विशेष स्कूलों की स्थापना, शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी, मजदूरी, काम की स्थितियाँ, ट्रेड यूनियन और अन्य संगठनों को प्रेरित करते हुए महिला मताधिकार संगठनों की स्थापना के रूप में हुई। सत्तर के दशक में उभरी नारीवादी की दूसरी धारा के दौरान भी उदारवादी नारीवादी की परम्परा जारी हुई।

समाजवादी/मार्क्सवादी नारीवादी दृष्टिकोण

समाजवादी महिलाएं पूँजीवादी व्यवस्था की विरोधी रही हैं। समाजवादी, नारीवादी महिलाओं ने पूंजीवादी पितृसत्ता को समझने और बदलने का प्रयास किया। समाजवादी नारीवादियों का मानना है कि पूंजीवाद और पितृसत्ता एक–दूसरे को मजबूती प्रदान करती हैं, भले ही पुरूष, वर्चस्व के रूप में पितृसत्ता पूंजीवाद के पहले से ही उपस्थित रही हो, लेकिन वह पूंजीवादी के संचालन मे मददगार साबित होती है और पूंजीवाद द्वारा न केवल समर्थन पाती हैं बल्कि सुदृढ़ भी होती है।

औद्योगिक की प्रक्रिया के फलस्वरूप औद्योगिक पूंजीवाद के उदय के साथ ही पुरूष घरों के बाहर और महिलाएं घरों में सीमित होती गयी। पूंजीवादी पितृसत्ता के दो विशिष्ठ श्रमिकों के रूप में सर्वहारा के साथ गृहिणी का उदय हुआ। इस प्रकार नियोक्ता एंव पति दोनों ने श्रमिक और पत्नी के शरीरों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया।[10] मार्क्सवादियों के ऊपर समाजवादी नारीवादियों ने ये आरोप लगाये कि मार्क्सवादी महिला उत्पीड़न के बारे में ज्यादा चिंतित नहीं थे केवल यह प्रमाणित करने मे लगे थे कि किस प्रकार पूंजी संचय के लिए महिलाओं का श्रम जरूरी है। महिलाओं की स्थिति पर खुद को केन्द्रित करते हुए समाजवादी नारीवादियों ने इस बात को दर्शाया कि किस प्रकार पूंजीवादी पितृसत्ता में महिलाएं समाज के पुर्नउत्पादन के लिए जरूरी काम उत्पन्न करती है। समाजवादियों ने अपने आन्दोलन के माध्यम से कानूनों जैसे शादीशुदा में महिलाओं को अधिकार दिलाना और पति द्वारा बलात्कार के जरिये अधीनता की संरचना को परिवर्तित करने की कोशिश की।

जहाँ तक भारत का सवाल है तो अत्यन्त बड़े असंगठित क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुए भारत में समाजवादी नारिवादियों ने घरों मे काम करने वाली महिलाओं को संगठित करने के प्रयास किये, महिला खेतिहर मजदूरों के लिए खासतौर से जमीन के स्वामित्व की मांग उठाई, जैसे बोधगया का संघर्ष और महिला मजदूरों की ट्रेड यूनियनें बनाने के प्रयत्न।[11]

रेडिकल नारीवादी दृष्टिकोण

साठ के दशक के उत्तरार्द्ध में तथा सत्तर के दशक के शुरूआत में आंशिक तौर पर उदार नारीवादी के खिलाफ प्रतिक्रिया के तौर पर और अंशतः लिंगवाद के खिलाफ आक्रोश के तौर पर, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन मे रेडिकल नारीवाद का उदय हुआ। रेडिकल नारीवादी मुख्यतः पश्चिम के जमीनी स्तर से (ग्रासरूट) जुड़े आन्दोलन का हिस्सा है जो एक विकसित होती 'महिला संस्कृति' का भाग है तथा जो साहित्य, संगीत, आध्यात्मिकता, स्वास्थ्य सेवाएं, रोजगार तथा टेक्नोलॉजी का नारीवादी संकल्प देने के लिए प्रयासरत हैं।

1960 से 1970 के दशक के दौरान आधुनिक रेडिकल नारीवादी सिद्धान्त के उदय में तीन पुस्तकों ने अहम भूमिका अदर की–

1. सिमान द बुआ की **The Second Sex**
2. कार्ल मिलेट की **The Sexual Politices**
3. शुलामिथ फायर की स्टोन **The Dylectic of Sex Cast for Feminist Revolution**

इस तरह उपरोक्त कृतियों में यह निष्कर्ष निकला है कि रेडिकल नारीवाद पुरूष संस्कृति के मूल्यों को चुनौती देता है। वह नहीं चाहता कि महिलाएं पुरूषों को अनुशरण करें। इसके बजाय वह महिलाओं की पारम्परिक संस्कृति पर आधारित नये मूल्यों को सृजन चाहता है। नारी संस्कृति के उन सभी पहलुओं का वह निषेध करता हैं, जो महिलाओं को पराधीन करते हों, जैसे कि अकर्मण्यता और आत्मत्याग आदि। नतीजन 1960 के दशक में तमाम महिलाओं ने 'चेतना जागृति' के लिए पुरूषों से अलग होने का फैसला लिया ताकि वे अपने–अपने प्रयोगों पर विमर्श कर सकें। रेडिकल नारीवादी इस तथ्य की खोज करता है कि जेंडर पुरूष वर्चस्व की कार्य प्रणाली है। रेडिकल नारीवाद का सैद्धान्तिक कार्यभार है कि वह इस प्रणाली को समझे और उसके राजनीतिक कार्यभार को समाप्त करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. तोमर, डॉ0 (श्रीमती) अलका, 'इक्कीसवीं सदी में महिला सशक्तिकरण, स्टॉर प्रिण्टिग प्रेस, शाह बिलायत रोड, अमरोहा, 2009 पृ0 36
2. असमिया, दिनेश नन्दिनी, नये आयामों को तलाशती नारी, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली 2004, पृ0 161

3. कौशिक, आशा, नारी सशक्तिकरण : विमर्श एवं यथार्थ, प्वाइण्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2004 पृ0 21
4. बेतेई, आन्द्रे, इम्पावरमेंट, एकोनामिक एण्ड पोलिटिकल विकली, नई दिल्ली, 1999, मार्च, पू0589–97
5. कार्ल, मारली, वेमेन एण्ड एम्पावरमेंट, पारटीसिपेशन एण्ड डिसीजन मंकिग, लंदन आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002, पृ0 188
6. महाराजन, एम0 महात्मा गांधी एण्ड न्यू मिलेनियम, नई दिल्ली डिस्कवरी पब्लिकेशन हाउस, 2001, पृ0 91–96
7. साहू, असीसा, वूमैन लिवरेशन एण्ड ह्यूमन राइट्स, जयपुर, जयपुर पब्लिकेशन 200, पृ0–132
8. ऐलविन, एच. वीमेन्स पालिटिकल रिप्रजेनटेशन एण्ड इम्पॉवरमेंट इन इण्डिया–ए मिलियन इण्डियन नई दिल्ली, मनोहर पब्लिकेशन, 2004, पृ0143–162
9. गिरी, एस0 मोहिनी, इमेन्सिपेशन एण्ड एम्पावरमेण्ट ऑफ विमेन, नई दिल्ली, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2000, पृ0 12
10. हिग्मेलिट, एस. एण्ड मोहन एस. डोमेस्टि लेबर एण्ड कैपिटल, कैम्ब्रिज जर्नल ऑफ इकोनामिक्स, न्यूयार्क आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1977, नं0 1, पृ0 6
11. देसाई, नीरा एण्ड मैथेजी, के.सी. वूमेन एण्ड सोसाइटी इन इण्डिया नई दिल्ली, अजन्ता पब्लिकेशन, 1987, पृ0 71–72

*****

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

घरेलू महिलाओं पर पारिवारिक हिंसा

वन्दना मौर्या
एम. ए., नेट, समाजशास्त्र

भारतीय समाज में पारिवारिक महिला हिंसा की सामाजिक स्थिति के अध्यन से पता चला है की महिलाओं के उत्पीड़न की जड़ उनकी समाजिक स्थिति का नतीजा है वैदिक युग में उनकी स्थिति सुदृढ़, पारिवारिक व सामाजिक स्तर पर कुछ हद तक अच्छी थी लेकिन मध्ययुगीन काल में कुछ कुप्रथाओं जैसे– पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा जौहर और देवदासी जैसी प्रथाओं के कारण बिगड़ती चली गयी। वर्तमान में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन तो हुआ लेकिन महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन बहुत जादा नही आया। आज निम्न वर्ग की अशिक्षित महिलायें ही केवल पारिवारिक महिला हिंसा का शिकार नही होती बल्की उनके साथ उच्च वर्ग की शिक्षित व कामकाजी महिलाये भी इस उत्पीड़न का शिकार है। प्रचीन काल में भारत में महिलाओं की स्थिति बहुत सम्मान पूर्ण थी उन्हे पूजनीय शक्ति के रूप में पुरूष वर्ग सम्मान देता था। यही कारण है कि वेदो में और अन्य आर्य ग्रन्थों में नारी के लिए कहीं पर भी ऐसा कोई एक शब्द भी प्रयोग नही किया गया था जिससे उनकी गरीमा और महिमा को ठेस पुहँचे, भारत वर्ष में दीर्घकाल तक नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा। नारी को पुरूष वर्ग ने सम्मान का स्थान दिया और उसके बराबरी के मौलिक अधिकार प्रदान कर उसके व्यक्तित्व के विकास में पुरूष वर्ग भी सहायक बना यही कारण है कि हमारे यहा अपाला, घोषा सावित्री, सीता, कौशल्या, गार्गी, मैत्रेयी आदि जैसे अनेक विदुषीयों ने जन्म लिया। फिर धीरे–धीरे पतन की अवस्था आई जब पितृसत्तत्मक युग आया तो इससे पहले मातृसत्तात्मक युग था जो नारी शक्ति का परिचायक था, परन्तु पितृसत्तात्मक युग में लोगो ने नारी को 'पैरो' की जूती माना और जब चाहा उन्हें पैरो की जूती की भाती बदलकर दुसरी जूती पहन ली पुरूष वर्ग की नारी के प्रति ऐसी घृणित और अमाननीय सोच ने न केवल नारी का शोषण किया, अपितु समाज भी इससे पिछड़ने की अवस्था में चला गया नारी को इस नारकीय जीवन से उभरने में राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती जैसे अनेक समाज सेवियों व समाज सुधारको के क्रांतिकारी आन्दोलन ने विशेष भूमिका निभाई इसी का परिणाम है कि आधुनिक भारत में महिलायें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष आदि जैसे शीर्ष पदो पर आसीन हुई है।

मुख्य शब्द :– महिलाओं, लैंगिक भेद भाव, घरेलू महिला, हिंसा, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, महिला उत्पीड़न।

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक स्त्रोत पर आधारित है इसमें तथ्यों का संकलन पूर्व में किये गए शोध, समाचार पत्र पत्रिकाओं, पुस्तकों द्वारा एकत्रित किया गया है। सैद्धान्तिक अध्ययन के आधार पर यह शोध पत्र आधारित है।

नारी को प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पद तक पहुँच जाने में भारत को बहुत बड़ा परिश्रम करना पड़ा है। इसके लिए यहा पर अनेको समाज सुधारकों ने अलग–अलग स्तर पर आन्दोलन चलाए, लोगो को जागरूक किया और महिला शिक्षा पर बल देकर उसे सुशिक्षित और सुसंस्कारित बनाने की दिशा में ठोस कार्य किया। पतंजली और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों के

साहित्य का यदि अनुशीलन किया जाय तो स्पष्ट पता चलता है कि वैदिक काल से ही भारत में नारियों की शिक्षा पर बल दिया जाता रहा है। भारत में महिलायें अब सभी प्रकार की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र विज्ञान और प्रौधोगिकी आदि में भाग ले रही है। इंन्दिरागाँधी जिन्होने कुल मिलाकर पंद्रह वर्षो तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की विश्व में सबसे लम्बे समय तक सेवारत महिला प्रधानमंत्री रही, अब महिलायें हर क्षेत्र में पुरूषों से पिछे नही है। फिर भी यह जानकर बहुत दुःख होता है कि इतना विकास होने के बाद भी हिंसा की दर बढ़ती जा रही है। अशिक्षित महिलाये ही नही केवल इस हिंसा से पिड़ित है बल्कि शिक्षित और कामकाजी महिलायें भी हिंसा की शिकार है। वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं को कई तरह से प्रताड़ित किया जाता है। व्यवहार के सन्र्दभ में महिलाओं के खिलाफ हिंसा में साधारण दमन से लेकर दूरूपयोग, आक्रमकता शोषण और गम्भीर उत्पीड़न तक शामिल होते है। भारत एक ऐसा देश है। जहा पर हर साल महिलाओ के प्रति होने वाले अपराध की दर बढ़ती जा रही है। भारत में घरेलू पारिवारिक महिला हिंसा के मामले में 53% की दर से बढ़ रहे है 37% महिलाओं ने स्वीकार किया कि विवाह के वाद भी पति के हिंसात्मक आचरण का शिकार हुई। बिहार सबसे आगे है। भारतीय दण्ड संहिता (IPC) की धारा 498 A के अन्तर्गत दर्ज मामले पति और रिश्तेदारों द्वारा अत्याचार व क्रूरता के होते है। घरेलू हिंसा एक अनचाही बलि है जो पत्नी के साथ मारपीट हिंसा या जिन्दा जलाने, उसे पागल घोषित करने या छोड़ देने तलाक देने या किसी स्थान पर बन्दी बनाने की घटनाओं के रूप में दिखायी देती है। प्रत्येक दुःखद विवरण महिलाओं के खिलाफ खूले और गुप्त दोनों प्रकार की हिंसा को सूचित करता है। यह ध्यान देने की जरूरत है कि महिलाओं के खिलाफ अपराध किया जाता रहा है, पत्नियों के प्रति हिंसा यहा पर केन्द्रीय चिंता है, जो सभी समाजो और सभी आर्थिक और आयु समूहो में पाई जाती है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह बढ़ रहा है। लेकिन किसी भी तरह से यह भारत के लिए नया नहीं है महिलाओं का अवमूल्यन किया जाता है उस पर प्रतिदिन अत्याचार और दुर्व्यवहार किये जाते है। हिंसा और स्वास्थ पर अक्टूबर 2002 की विश्व स्वास्थ संगठन की रिर्पोट के अनुसार– यह अनुमान है कि पारस्परिक हिंसा के कारण दुनिया भर में कहीं भी 1 मिनट में एक व्यक्ति की मृत्यु होती है भारतीय समाज में एक बेटी का जन्म जो वैदिक काल में चिन्ता का एक स्रोत नहीं या वह उत्तर–वैदिक चरण में एक पति के लिए आपदा का एक स्रोत बन गया है एक पुत्र का जन्म परिवार में आनन्द का अवतार होता है जबकि बेटी का जन्म परिवार के लिए दुखों की जड़ है। एक बेटा को वह माना जाता है जो कानूनी तौर पर परिवार का नाम आगे बढ़ाएगा इसके अलावा बेटे को माता पिता के लिए वृद्धावस्था में सम्पत्ति के रूप में माना जाता है जो हिन्दू धर्म में अंतिम संस्कार करने का दायित्व वहन करता है। आज भी भारतीय समाज में बहुत से ऐसे ग्रामीण जन जो वासनात्मक निषेध के कारण अपनी बालिकाओं को घर के बाहर नहीं जाने देते और बाल्यावस्था में ही विवाह कर देते है जिससे उनका यौन शोषण होता है। वस्तुतः आज भी महिलाएँ पुरूष की नजर में महिला और मात्र महिला है इसके अतिरिक्त वे कुछ नही है और पुरूष उन्हे वस्तु या चींज की तरह इस्तेमाल करते है और उन्हे गुलाम बनाकर रखते हैं। महिलाएँ पुरूषों की वासनात्मक लक्ष्य बनी हुई है।

घरेलू हिंसा अर्थात् –कोई भी ऐसी कार्य जो किसी महिला एवं बच्चे 18 वर्ष से कम आयु के बालक एवं बालिका के स्वास्थ सुरक्षा जीवन पर संकट, आर्थिक क्षति और ऐसी क्षति जो असहनीय हो तथा जिससे महिला व बच्चे को अपमान दुःख सहन करना पड़ता है इन सभी को घरेलू हिंसा के दायरे में शामिल किया गया है। घरेलू हिंसा अधिनियम के अन्तर्गत प्रताड़ित महिला किसी भी वयस्क

पुरूष को अभियोजित कर सकती है अर्थात् उसके विरूद्ध प्रकरण दर्ज करा सकती है। भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति हिंसा एक बहुआयामी मुद्दा है जिसके सामाजिक निजी, सार्वजनिक और लैंगिक पहलू सामने आ जाता है। घरेलू हिंसा महिलाओं के प्रति होने वाली एक जटिल एवं घिनौना स्वरूप है। घरेलू हिंसा की घटनाएँ कितनी व्यापक है यह तय कर पाना मुश्किल है यह एक ऐसा अपराध है जो अक्सर छुपाया जाता है जिसकी रिपोर्ट कम दर्ज करायी जाती है। और कई बार तो इसे नकार दिया जाता है निजी रिश्तों में घरेलू हिंसा की घटना को स्वीकार करने को अक्सर रिश्तो को चरमराने से जोड़कर देखा जाता है। संमाज के स्तर पर घरेलू हिंसा की हकीकत को स्वीकार करने से यह माना जाता है कि विवाह और परिवार जैसे स्थापित सामाजिक ढ़ाँचों में महिलाओं की खराब स्थिति को भी स्वीकार करना पड़ेगा इन सबके बावजूद भी घरेलू महिला हिंसा के जितने रिपोर्ट होते है। वे आँकड़े चौकाने वाले हैं, भारत में हर 5 मिनट पर घरेलू परिवारिक हिंसा की एक घटना रिपोर्ट की जाती है।

घरेलू हिंसा के विरूद्ध महिला संरक्षण अधिनियिम धारा 2005 में घरेलू पारिवारिक महिला हिंसा को परिभाषित किया गया है

1. प्रतिवादी का कोई बर्ताव, भूल या किसी और काम करने के लिए नियुक्त करना घरेलू हिंसा में माना जाएगा।
2. क्षति पहुँचाना या जख्मी करना या पीड़ित को स्वास्थ जीवन अंगो या हित को मानसिक या शारीरिक तौर से खतरे में डालना या ऐसा करने की नीयत रखना और इसमें शारीरिक यौनिक, मौखिक और भावनात्मक और आर्थिक शोषण शामिल है,
3. दहेज या अन्य सम्पत्ति या मूल्यवान प्रतिभूमि की अवैध मांग को पूरा करने के लिए महिला या उसके रिश्तेदारों को मजबूर करने के लिए यातना देना, नुकसान पहुँचाना या जोखिम में डालना या पीड़ित या उसके निकट सम्बन्धियों पर उपरोक्त वाक्यांश या उनमें सम्मलित किसी आचरण के द्वारा दी गयी धमकी का प्रभाव होना ।
4. पीड़ित को शारीरिक या मानसिक या भावनात्मक तौर पर घायल करना या नुकसान पहुँचाना।
5. शिकायत किया गया कोई भी व्यवहार या आचरण घरेलू हिंसा के दायरे में आता है या नहीं इसका निर्णय प्रत्येक मामले के तथ्य विशेष आधार पर किया जाता है।
6. महिला को ताने मारना।
7. महिला की गरिमा और प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाना।
8. बच्चे न होना या पुत्र न होने पर ताने मारना।
9. दहेज न लाने के लिए प्रताणित करना महिला व बच्चों को पीटना, धक्के मारना, घूंसे मारना।
10. महिला का यौन उत्पीड़न ।
11. महिला को अपमानित करना।
12. महिला को आत्महत्या की धमकी देना।

इस कानून के प्रावधानों का उल्लघंन करने को संज्ञेय और गैर अमानवीय अपराध माना जायेगा। दोषी पाये जाने पर एक साल की सजा 12 हजार रूपये का जुर्माना या दोनो सजा साथ–साथ दी जा सकती है। इस कानून के तहत महिलाओं के पति व बिना विवाह के साथ रह रहे

पुरूष और रिश्तेदारों के हाथों हिंसा से बचाने की बात कहीं गयी थी लेकिन बाद मे पति को माँ बहन तथा अन्य महिला रिश्तेदारों को भी इसके दायरे में ले लिया गया।

अक्सर ऐसा होता है कि पति–पत्नी के बीच किसी बात को लेकर विवाद पैदा हो जाता है विवाद कभी–कभी इतना बढ़ जाता है कि पुरूष हिंसक हो उठता है और वह अपनी पत्नी को लात घूसों से पीटने लगता है। चूंकि महिलाएँ शारीरिक रूप से पुरूषों के मुकाबले कुछ अक्षम है इसलिए पारिवारिक हिंसा का शिकार ज्यादातर औरतें ही होती है। घरेलू हिंसा किसी एक देश या समाज तक सीमित नहीं बल्कि दुनिया भर की औरते घरेलू पारिवारिक हिंसा की शिकार होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए अध्ययनों के आधार पर दोनेा प्रकार के देशों–औद्योगिक रूप से विकसित और विकासशील देशों में घरेलू हिंसा भड़कने के कारण एक सूची तैयार की है जो इस प्रकार है –

1. पुरूषों की आज्ञा न मानना।
2. उलटकर बहस करना या जवाब देना।
3. वक्त पर खाना तैयार न होना।
4. घर के बच्चों की ठीक से देखभाल न करना।
5. पूरूषों से धन या गर्लफ्रेंड्स के बारे में पूछताछ करना।
6. पति के अनुमति के बगैर कहीं चले जाना।
7. पुरूषों को सेक्स के लिए मना करना।
8. पुरूषों को पत्नी पर विश्वासघाती होने का संदेह होना।

घरेलू हिंसा एक व्यापक शब्द है जिसे पारिवारिक हिंसा भी कहते है, इसमें सास, ससुर, देवर, नंनद आदि द्वारा बहू को सताना और मारना–पीटना भी शामिल है।

घरेलू हिंसा चार प्रकार की होती है :–

1. शारीरिक हिंसा
2. यौनिक या लैगिक हिंसा
3. मौखिक या भावात्मक हिंसा
4. आर्थिक हिंसा

घरेलू महिला हिंसा 2005 अधिनियम जिनका उद्देश्य महिलाओं को घरेलू पारिवारिक हिंसा से बचाना और पीड़ित महिलाओं को कानूनी सहायता उपलब्ध कराना है।

पूर्व में किये गये शोध व पुस्तकों के अध्ययन पता चलता है कि महिलाओंके प्रति हिंसा के मामले में दिन–प्रतिदिन वृद्धि ही हो रही है, युनाइटेड नेशंस पापुलेशन फंड रिपोर्ट के अनुसार लगभग दो तिहाई विवाहित भातीरय महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार है और भारत में 15–49 आयु वर्ग की 70% विवाहित महिलाएँ पिटाई बालात्कार या जबरन यौन शोषण का शिकार है। 2009 में जारी तीसरे राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ सर्वेक्षण में यह बात निकलकर सामने आई है कि करीब 40% महिलाएँ रोजाना अपने पतियों से पिटती है। घरेलू हिंसा के बारे में किए एक अध्ययन के अनुसार हिंसा के विरूद्ध शिकायत करने वाली महिलाओं में 12% महिलाएँ दहेज के कारण प्रताड़ना की शिकायत करने वाली होती है। इंडिया सेफस्टडी द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार घरेलू हिंसा पूरे भारत में वर्ग, जाति शिक्षा और रोजगार के स्तर से पर व्यापक रूप से फैली हुई है, अध्ययन से ज्ञात होता है कि 58% महिलाएँ ने पति द्वारा उन पर की जा रही हिंसा को स्वीकार किया।

अतः निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि महिलाओं के विरूद्ध होने वाले घरेलू पारिवारिक हिंसा के अखिल भारतीय आंकड़े बेहद खतरनाक प्रवृति का संकेत दे रहे है। पिछले पाँच सालों में न केवल महिलाओं के विरूद्ध अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई है बल्कि घर के अन्दर ही महिलाओं के विरूद्ध घरेलु हिंसा में अत्यंत बढ़ोत्तरी हुई है। महिलाओं पर घर से ही हिंसात्मक प्रहार करने वालों में इन लोगो की संख्या सबसे अधिक है। लगभग सभी वर्ग और सभी सभ्यताओं में महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार है, यह बात महिला के व्यक्तित्व पर बेहद प्रतिकूल प्रभाव डालती है क्योंकि इसके कारण महिलाओं को अपना अस्तित्व खतरे में नजर आने लगता है। लेकिन कानून बना देना ही समस्या का समाधान नही हैं जरूरत है पुरूषों की पुरानी सोच को बदलने की और महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की।

सन्दर्भ

1. भावना वर्मा, Dr. ke Dikshita, निधि सैनी (2010) सामाजिक समस्याएँ : रावत पब्लिकेशन, जयपूर नई दिल्ली
2. राय, डा0 नीरज कुमार (2015), महिला हिंसा, Blue Hask, Publication New Delhi
3. छापड़िया ,मनोज (2016), स्त्री और घरेलू हिंसा, A.R Publishing Delhi
4. शर्मा, जी0एल0 (2015), सामाजिक मुद्दे : रावत पब्लिकेशन, जयपूर नई दिल्ली
5. टग्रवाल, डा0 अमित (2010), भारतीय सामाजिक समस्याए
6. भट्टाचार्य ,रिंकी (2017), भारत में घरेलू हिंसा : Sage Publishing india PVT LTD मथुरा रोड़ नई दिल्ली
7. Wikepidia , Wrome Wob Browser

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

Women's Employment Challenges and Economic Growth of Bihar

Rinky Kumari
(Research Scholar,
Department of Economics
Patna University, Patna-800005, Bihar

Abstract

Women employment is a very crucial question since many decades. Country like India and state like Bihar this question has own importance, because we cannot even think about economic growth without participation of the half population of the economy.The objective of this article is to examine the trends and pattern of women employment in Bihar and the second objective is to analyse the pros & cons of women employment in Bihar. To fulfilling the objective we have taken, the secondary data from (individual level data from India Human Development Survey (IHDS)) for two different years set (2005 and 2012) at all India level and Bihar. There is a famous quote given by our first prime minister of India Jawaharlal Nehru - "You can tell the condition of a nation by looking at the status of its women". The present paper is an attempt to discuss the women's employment challenges and its impact on economic growth of Bihar.

Key Words – Women Employment, Economic Growth, Economic Trends & Pattern, Informal Sector, casual work, contract work.

Introduction

Bihar has a geographical area of 94,163.00 sq. km, most of its population live in the villages, and only 11.09 per cent people live in urban area. The State has 38 districts and its population is 10, 38, 04,637 in which the male population is 5, 41, 85, 347, and female is 4, 96, 19, 290. State's population growth is 3rd highest in India with about 25.07% decal population growth whereas the sex ratio is 918 per thousand male. The literacy rate is 63.82 per cent and for male 73.39 per cent for female 53.33 per cent, which is lowest among the other state (2011 Census).Through the above figures, we can understand one thing very clearly Bihar has a huge population with lowest education and employment. When we are talking about female empowerment that is hard to achieve with lowest education and lowest employment.

Table -1: Number of female-headed households per 1000 households, household size (0.0) and sex ratio for the female-headed households over the different NSS rounds (all India).

NSS Various Rounds	Rural			Urban		
(survey periods)	No. of female headed hhs per 1000 hhs	House-holds size	Sex ratio	No. of female headed hhs per 1000 hhs	House-holds size	Sex ratio
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
68th (July 2011-June 2012)	115	3.3	1819	124	3.2	1749
66th (July 2009-June 2010)	118	3.2	1785	116	3.1	1808
61st (July 2004-June 2005)	113	3.4	1771	111	3.5	1599
55th (July 1999-June 2000)	104	3.5	1820	94	3.5	1721
50th (July 1993-June 1994)	97	3.2	1861	106	3.2	1706

Note - Sex-ratio: number of females per 1000 males. Source: NSS Various Rounds Data

From the above Table -1 we observe that as time passes the number of female headed household has increased and sex ratio also. Whereas the household size has declined. The NSS various round data give us a positive sign in terms of women empowerment.

Table – 2 labour force participation rate (LFPR) according to usual, current weekly and current daily statuses in NSS 50th (1993-94), 55th (1999-2000), 61st (2004-2005), 66th (2009-10), 68th (2011-12) rounds, (all India)

Number of persons/person-days in labour force per 1000persons/person-days											
Approach	Male					female					Sex Ratio in labour force
	1993-94	1999-2000	2004-05	2009-10	2011-12	1993-94	1999-2000	2004-05	2009-10	2011-12	(2011-12)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)
Rural											
Usual (ps)	549	533	546	548	547	237	235	249	208	181	317
Usual	561	540	555	556	553	330	302	333	265	253	437

(ps+ss)											
CWS	547	531	545	548	545	276	263	287	231	215	377
CDS	534	515	531	536	534	232	220	237	197	180	323
Urban											
Usual (ps)	538	539	566	556	560	132	126	148	128	134	221
Usual (ps+ss)	543	542	570	559	563	165	147	178	146	155	253
CWS	538	539	566	556	561	152	138	168	141	148	243
CDS	532	528	561	550	555	132	123	150	129	136	226

Source: NSS Various Rounds Data

Table- 2 Shows the female participation in work. Which is one third of the male participant. We are comparing NSS five round of data, where we can easily observed that there is no significant improvement in all type of work (usual(ps), usual (ps+ss), CWS, CDS) in urban and rural also. Whereas we can also observed that there is decline in some work participation. Women empowerment without women participation in employment hard to achieve. So, through this paper we will explore about the female participation in economic work.

Objectives

The objective of the study are:

1. To show the trends and patterns of women employment in Bihar, and
2. To analyse the pros and cons of women employment in Bihar,

Methodology

This research work has taken individual level data from India Human Development Survey (IHDS) from two different gaps of years, 2004-05 and 2011-12. Because most of these data are from interview, which data we have taken for comparing purposes between India and Bihar this we can clearly see in data analysis part.

This study has taken **Trends and Patterns** as the primary method for analysis in which percentage method, mean, std. deviation are primarily. Moreover, this study has taken information from various rounds of national Sample Survey Office reports like 50th, 55th, 61th, 66th, 68th Rounds in support of data analysis reliability.

Literature Review

Bihar is one of the backward state in India in terms of per capita income which has a burden of a large population of more than ten crores (Census of India, 2011)**.** One of the

main reasons for this low per capita income is that a large proportion of the population is unemployed or under-employed. Moreover, the participation of women in the work force is even dismal in the state.

Therefore, the first objective behind this study to show the trends and patterns of women employment and the second objective is to analyse the pros and cons of women employment in Bihar. Before looking into the employment scenario, it is pertinent to analyse the trends and pattern of literacy, which has expected to impart the required skills in the labour force to participate in the active work force.

From the table below it can be seen that throughout the decades the literacy rate in Bihar has increased but it has not been in pace with the all India average trends. Moreover, the gap in the literacy at aggregate level (India) as compared to Bihar has been quite stagnant or increasing through the decades. However, in absolute terms the literacy has increased in the state; and therefore, the literacy rate has reached at a better position than earlier (61 percent) to be an eligible active work force in the low skill job market. Subsequently, the skills obtained through literacy, and transform the same into employment remains a question ahead (Economic Survey of India 2016-17).

Table 3: Literacy rate (in percent)

	Years						
	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
India	18.3	28.3	34.5	43.6	52.2	64.8	73.0
Bihar	18.5	22.0	23.2	32.3	37.5	47.0	61.8
Difference	-0.2	6.3	11.3	11.3	14.7	17.8	11.2

Source: - Economic Survey of India 2016-17 (vol. 2), Ministry of Finance, Government of India.

Quoting on women participation in workforce,

The IMF Chief Christian Lagarde had said, "…women's participation in the workforce to the level of Men can boost the Indian economy by 27 percent…" Therefore, Bihar could not be an exception as far as employment of women in the economy is concerned.

Besides, one of the other study found that "…in developing countries, working women also invest more in the schooling of their children…" (Miller2008, Aquirre et al.2012). This could be one of the reasons for lower outcomes in education and health, and subsequently lower skill formation, which ends with low work-force participation for women- a vicious cycle. that create a trap of poverty. Another historical paradox for women employment vis-à-vis men is that "women employment has declined over chronological time and to a much greater extent in development time" (cite).

Another aspect of women employment is to empower the women in economic decision making in the household sector of the economy. This has many facet of benefits like

gender equality, better wellbeing of child which will be an input for economic development in the medium and long term (cite).

Other studies suggest that the women participation in employment depends on the existence of a social norms or stigma attached against working of married women in manual labour in agriculture, industry, construction, and transportation. However, in recent year, these norms have universally abhorred by women in many parts of the developing world. This study is also suggest about the U shape pattern of women participation in employment. That is, the labour force participation rate of women first declines and then rises as countries develop **(cite)**.

The main reasons for this low participation of women is that when women are poorly educated then their only wage labour outside the home and family farm is in manual work, against which a strong social stigma exists. Nevertheless, when women are educated, particularly at the secondary level, they can enter into white-collar jobs against which no social stigma exists.

Data Analysis

About the data source:

The India Human Development Survey (IHDS) is a nationally representative, multi-topic panel survey for two rounds in 2005 and 2012. That is, most of these households had interviewed for IHDS-I (2005).

Panel. IHDS – I is a nationally representative survey of 41,554 households conducted in 2005. In 2011-12, IHDS-II re-interviewed 83% of these households as well as split households (if located within the same village or town) to trace changes in their lives. With an additional replacement sample of 2134 households, IHDS –II has a sample size of 42,152 households. This has created a unique dataset, which provides a rich description of changes in the Indian society.

Result and discussion

Table 4. Job Type and Gender

IHDS I (INDIVIDUAL LEVEL), ALL INDIA (2005)			
	SEX		
JOB TYPE	Male	Female	Total
Casual	28,223	12,024	40,247
	70.12	29.88	100
Regular	6,910	1,302	8,212
	84.15	15.85	100
Total	35,133	13,326	48,459
	72.5	27.5	100

Data source: Author's own calculation

The above table-1 shows that percentage of male & female participants at all India level (in casual and regular work). Which is highest for the male participants and lowest for the female participants in both types of work.

Figure: 1 these differences we can see more clearly through the graph

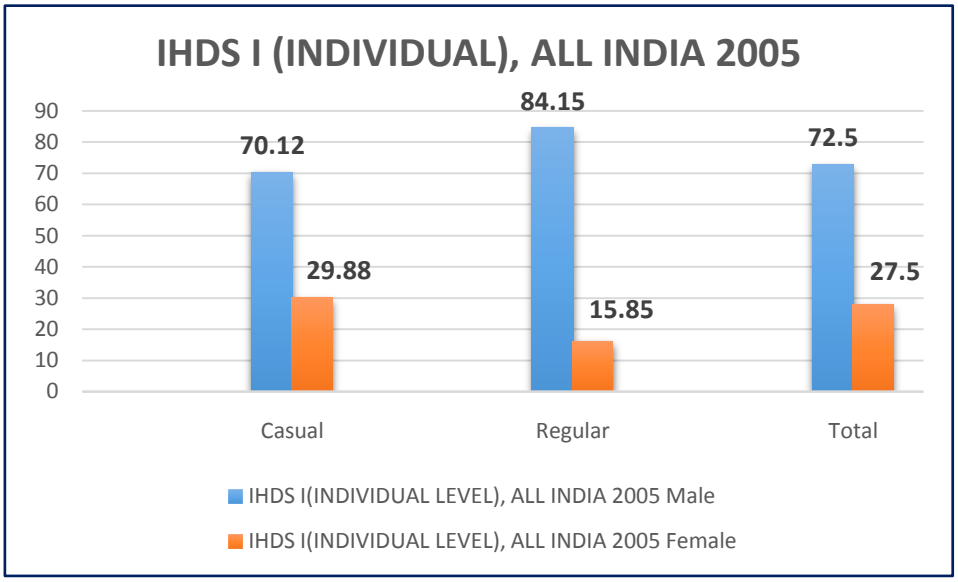

Figure 1. Shows that female participation in casual and regular work is just one third in terms of male participation. We can see the clear view of women's participation is low. This is not good for the Indian Economy; there is need for the equal participation of women as well. Thereafter we can think about economic development and women empowerment as well.

Table 5. Type of Job and Sex

IHDS I (INDIVIDUAL LEVEL), BIHAR (2005)			
	Sex		
JOB TYPE	Male	Female	Total
Casual	985	333	1,318
	74.73	25.27	100
Regular	93	18	111
	83.78	16.22	100
Total	1,078	351	1,429
	75.44	24.56	100

Data source: IHDS I (2005)

Table - 5, shows the two types of job (1) Casual and (2) Regular year 2005, and there is a male-female work ratio. Which we can easily observe that women participation less than 30%. Which is one-third of male's participation. This is not a good sign of women's employability and the economic growth of Bihar.

Figure 2. IHDS I (INDIVIDUAL LEVEL), BIHAR (2005)

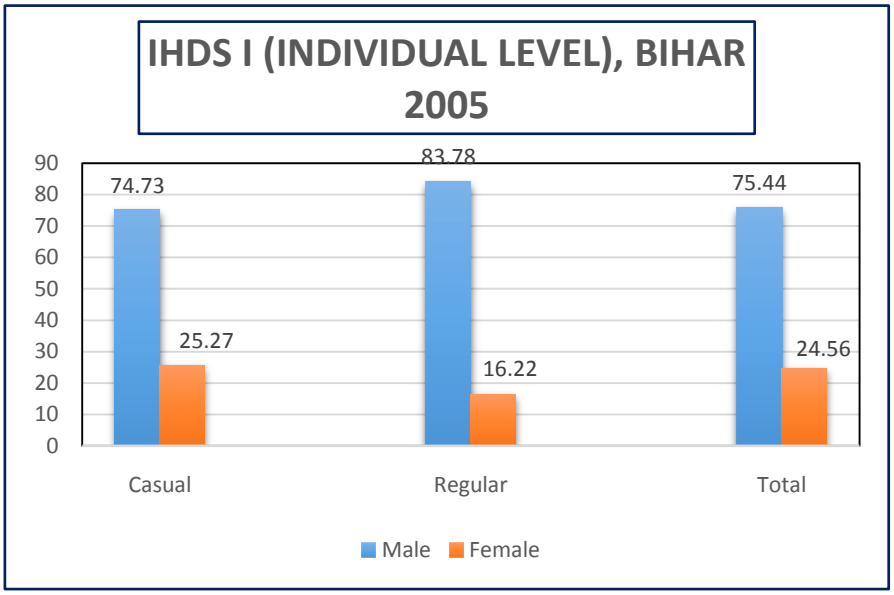

Sorce: Author's Calculation

Graph-2 is showing the percentage of workers participating in casual or regular work in Bihar. Which is also follows the same path as the data analysis of India shows that is one-third of female participation in both work (casual / regular) in 2005.

One thing is remarkable, which is female participation in casual work is higher than the regular work.

Now we are going to analyse the data of IHDS II (INDIVIDUAL LEVEL), ALL INDIA (2012)

Table: 6 Job Type and Sex

IHDS II (INDIVIDUAL LEVEL), ALL INDIA (2012)			
	Sex		
JOB TYPE	Male	Female	Total
Casual daily	24,604	12,328	36,932
	66.62	33.38	100
Casual piecework	2,063	1,046	3,109
	66.36	33.64	100

Contract <1yr	1,933	552	2,485
	77.79	22.21	100
Regular/Longer Contract	8,540	2,399	10,939
	78.07	21.93	100
Total	37,140	16,325	53,465
	69.47	30.53	100

Data Source: IHDS II (INDIVIDUAL LEVEL) INDIA 2012

Table – 6 shows that male and female work participation ratio in Casual daily work, Piece work, Contract for one year, and Longer contract work at all India level since 2012 after IHDS I 2005 data. This table state that there is a significant improvement in women's participation in all the above mention work, but it is still about 30 percent. Yet we have to work a lot in this section to achieve remarkable growth in women's participation and economic growth.

Figure: 3. IHDS II (INDIVIDUAL LEVEL) INDIA 2012 (in percentage)

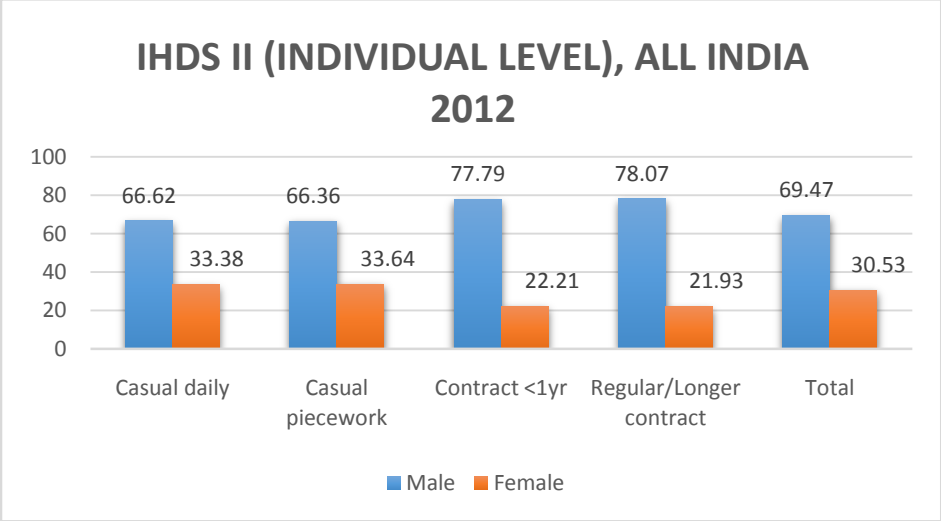

Source: Author's Calculation

The above mention graph, which is made by the table – 6; data shows that after seven-year the work pattern has changed and slightly increased the participation of females in all types of work at all India levels. Still, we are far from the remarkable target of women's participation. Now we are going to analyse the data of Bihar.

Table 7. Job Type and Sex ratio

IHDS II (INDIVIDUAL LEVEL), BIHAR (2012)			
	Sex		
JOB TYPE	Male	Female	Total
Casual daily	810	319	1,129
	71.74	28.26	100
Casual piecework	71	22	93
	76.34	23.66	100
Contract <1yr	33	12	45
	73.33	26.67	100
Regular/Longer contract	135	37	172
	78.49	21.51	100
Total	1,049	390	1,439
	72.9	27.1	100

Data Source: IHDS II (INDIVIDUAL LEVEL), BIHAR (2012)

Table -7 is describing the percentage of male-female participation in casual daily work, casual piecework, contract work for one year, and longer contract of Bihar's data since 2012. Moreover, female participation in all work has slightly increased since 2005. However, female participation in all kinds of work is less than 30%. Which is lower than the all India level.

Figure: 4. IHDS II (INDIVIDUAL LEVEL), BIHAR (2012)

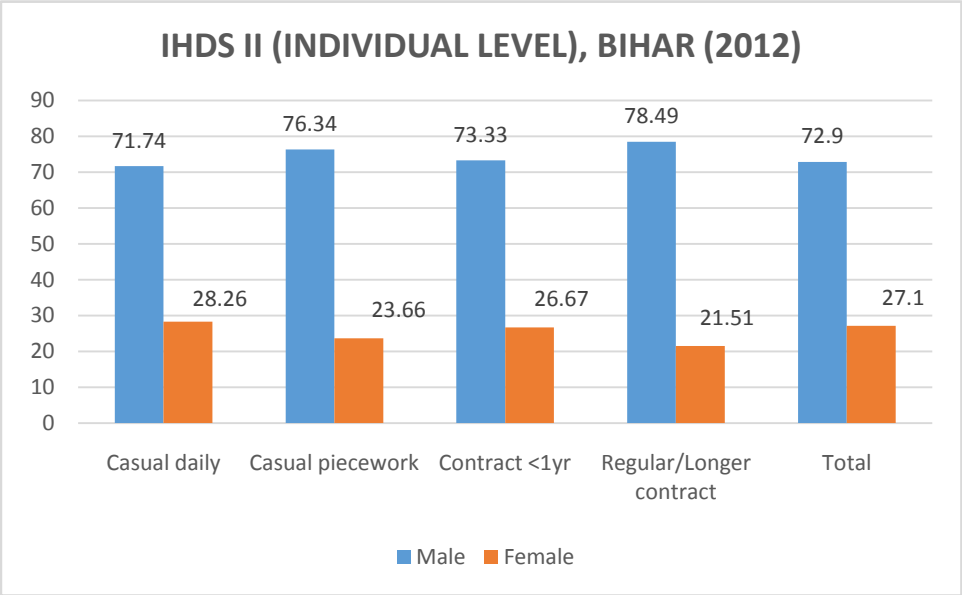

Source: Author's Calculation

After seven-years, female participation in all kinds of work has increased but less than male participation, here one thing is important to note that the regular work or long contract work's participation percentage growth has more than the casual work. Yet, female participation in casual work is high for Bihar.

Now, we are going to calculate the result in form of St. Deviation, mean, min-max etc.

Table: 8. All India (work hours/ day and pay rate for males and females)

All INDIA (work hours/day and pay rate for males and females)							
IHDS 2012, Individuals (work hours/day for males)				**IHDS 2012, Individuals** (pay rate (in rupees) for males)			
Mean	Std. Dev.	Min	Max	Mean	Std. Dev.	Min	Max
8.08	1.44	1	16	3912.37	9576.24	0	700000
(work hours/day for female)				(pay rate (in rupees) for females)			
Mean	Std. Dev.	Min	Max	Mean	Std. Dev.	Min	Max
7.36	1.49	1	16	1761.49	5308.88	0	120000
IHDS 2005, Individuals (work hours/day for males)				**IHDS 2005, Individuals** (cash/ period of job done for males)			
Mean	Std. Dev.	Min	Max	Mean	Std. Dev.	Min	Max
8.16	1.54	1	16	2008.47	4131.71	0	96000
(work hours/day for females)				(cash/ period of job done for females)			
Mean	Std. Dev.	Min	Max	Mean	Std. Dev.	Min	Max
7.44	1.53	1	16	755.203	2580.15	0	95000

Source: Author's Calculation

Table- 8 reveals that the working hours of males and females are almost the same in both years data (2005 and after seven-year 2012 also) at all India level. However, the

statistical inferences states that there are huge variations between males and females in terms of pay scales. The standard deviation calculated for the period of the job done by males and females. There is a huge variation in the period of the job done by male than female. Moreover, the mean value of the pay rate is higher for male workers than female workers. In other words average working hours are same for both (Male & Female), but the average amount they are getting fewer than male workers.

Table: 9, Bihar (Workhours and pay rate for males and females)

BIHAR (work hours/day and pay rate for males and females)							
IHDS 2012, Individuals (work hours/day for males)				**IHDS 2012, Individuals** (pay rate (in rupees) for males)			
Mean	Std. Dev.	Min	Max	Mean	Std. Dev.	Min	Max
8.08	1.445	1	16	1736.92	4935.763	20	50000
(work hours/day for female)				(pay rate (in rupees) for females)			
Mean	Std. Dev.	Min	Max	Mean	Std. Dev.	Min	Max
7.38	1.574	2	14	997.32	4116.966	15	30000
IHDS 2005, Individuals (work hours/day for males)				**IHDS 2005, Individuals** (cash/ period of job done for males)			
Mean	Std. Dev.	Min	Max	Mean	Std. Dev.	Min	Max
7.94	1.669	1	16	1256.01	3298.968	10	37000
(work hours/day for females)				(cash/ period of job done for females)			
Mean	Std. Dev.	Min	Max	Mean	Std. Dev.	Min	Max
7.29	1.682	1	12	535.13	1889.462	10	13500

Source: Author's calculation

Now we are describing table-9, which is a comparison of both years IHDS data (2005 & 2012) with some statistical inferences (mean & std. deviation). Therefore, we can clearly get the female employability data. Which shows that the statistical relation of working

hours and pay rate for males and females at Bihar. On the other hand, males are getting more wages than females. The variation in per day working hours is small in males and females. However, in terms of pay scale or wages, there are high variations between males and females. The wages of males are higher than females in Bihar as per the statistical calculations.

Conclusion

The participation of women in all types of work has one third as compared with male, and this study support that women are mostly casual workers in Bihar as well as in India (since 2005).

Moreover, there is a homogeneity in terms of type (casual/contract/regular) of work participation for males and females in Bihar in 2012, which is more or less absent for all India trends.

The work hours for males and females are more or less same for both the years 2005 and 2012. However, average pay rate is more than twice for males as compared to females in 2012 and 2005. This is an evidence of wage discrimination because of gender in India and Bihar. The same trend and pattern is prevailing for Bihar and India.

But through the literature three main point we want add here

1. The U shape of female participation in employment in developing nation,

(Which means first the engagement of female is decline after that it increases.)

2. The female of developing nation sent their children to school for more time than the develop nation.

(It means the participation rate of female is less due this habit.)

3. Social stigma when she is going to choose the job

(Females are more worried about the social stigma so due this cause female participation is less in employment.)

References

- Bano, S. (2005). *Regional Dimensions of Female Education and Structure of Employment in Bihar* (Doctoral dissertation, Aligarh Muslim University).
- Barrientos, S. (2008). Female Employment in Agriculture: Global Challenges and Global. *Small Change Or Real Change?: Commonwealth Perspectives on Financing Gender Equality*, 173.
- Berke, D. L. (2003). Coming home again: The challenges and rewards of home-based self-employment. *Journal of family Issues*, *24*(4), 513-546.
- Bhoganadam, S. D., Malini, H., & Rao, D. S. (2014). Women's empowerment and economic development. *EXCEL International Journal of Multidisciplinary Management Studies*, *4*(8), 100-107.
- De Haan, A. (2002). Migration and livelihoods in historical perspective: A case study of Bihar, India. *Journal of development studies*, *38*(5), 115-142.

- Duflo, E. (2012). Women empowerment and economic development. *Journal of Economic literature*, *50*(4), 1051-79.
- **Economic Census 2011**
- **Economic survey of India 2016-17, Vol – 1, page -102, & Vol - 2**
- Gautam, R. K., & Mishra, K. (2016). Study on rural women entrepreneurship in India: issues and challenges. *Int. J. Appl. Res*, *2*, 33-36.
- Goldin, C. (1994). *The U-shaped female labor force function in economic development and economic history* (No. w4707). National Bureau of Economic Research.
- Gupta, A., Koshal, M., & Koshal, R. K. (1998). Women managers in India: Challenges and opportunities. *Equal Opportunities International*, *17*(8), 14-26.
- http://www.gov.bih.nic.in
- http://www.mospi.nic.in/
- https://ihds.umd.edu/
- Jennings, J. E., & Brush, C. G. (2013). Research on women entrepreneurs: challenges to (and from) the broader entrepreneurship literature?. *Academy of Management Annals*, *7*(1), 663-715.
- Kadam, R. N. (2012). Empowerment of Women in India-An Attempt to Fill the Gender Gap (June, 2012). *International Journal of Scientific and research publications*, *2*(6).
- Kumar, A., Singh, R. K. P., & Kumar, A. (2015). Rural labour employment and their livelihoods in Bihar: Micro-level evidences from selected villages. *The Indian Journal of Labour Economics*, *58*(4), 609-629.
- Mehra, R. (1997). Women, empowerment, and economic development. *The Annals of the American Academy of Political and Social Science*, *554*(1), 136-149.
- **NSSO Report 66, 67-68, 61, 55, 50th** Rounds
- Perrons, D. (2009). Women and gender equity in employment: patterns, progresses and challenges.
- Randhawa, G., & Narang, K. (2013). Women in police: Employment status and challenges. *ASCI Journal of Management*, *42*(2), 38-51.
- Sharma, A. N. (2005). Agrarian relations and socio-economic change in Bihar. *Economic and Political Weekly*, 960-972.
- Sinha, I. B., & Kumar, R. S. (2015). Development Challenges of Exclusion and Strategies for Inclusive Growth in Bihar: The Gender Perspective. *Indian Anthropologist*, 25-42.
- Verma, P. C. (1975). Trend-Analysis of Women Employment in India in the Organised Sector, 1962-1973. *Economic Affairs (Calcutta)*, *20*(11), 441.

E-Education and Social Media Impact on people through Smartphones in India

Hajra Kulsoom,

(Research Scholar)

Department of Political Science, Patna University

Abstract

Empowerment and Education are priorities that a developing country cannot ignore. Once considered backward and "unfit" among the league of world economies, India today is the region that everyone is looking at. And when a New York Times Editorial pinpoints India's sudden spurt in the cyber arena, one doesn't need a pundit to predict that the dark days of the digital divide are finally over. The present paper dealt with the e-education and social Media impact on people through smart phone in India.

Key Words: Impact, Social Media, Smartphone, Political, Democracy

Introduction

As recently as the first week of January, an editorial in the *New York Times*, titled *Social Media in Indian Politics,* made Indian development economists sit up and take note. For it read: Social media is playing an important new role in Indian democracy. It was referring pointedly to a social media campaign by the Electoral Commission that drew record levels of voter registration and turnout in elections held in four Indian states, including the capital, New Delhi, in November and December.

Of 790 million eligible Indian voters in 2014, about 160 million are first-time voters between the ages of 18 and 24 years old. Political parties are also embracing social media to reach voters, including cellphone messaging. Social media are credited with helping the new Aam Aadmi Party (Common Man's Party) and its candidate, Arvind Kejriwal, has trumped all odds to emerge the surprise winner in Delhi against the decades' old Congress and Bharatiya Janata parties.

Meanwhile, the Indian government has used the 2008 Information Technology (Amendment) Act to increase monitoring and censorship of social media. In 2012, two women were arrested after posting a comment on Facebook that angered politicians in Mumbai. Journalists have had their Twitter accounts disabled and cartoonists whose works poke fun at officials have had their social media accounts closed.

Last year, the government rolled out a Central Monitoring System with vast powers to monitor citizens' communications. Human Rights Watch called the new system "chilling" in its scope. According to Freedom House, India had the steepest decline in Internet freedom of any country in the year ending in April 2013.The Electoral Commission of

India has asked social media providers to monitor their sites for fraud in the run-up to the general elections in April this year. That would be helpful. But Indian voters must also demand that their government bring transparency and accountability to electronic surveillance. (*New York Times* Editorial 2014

What is New and Social Media?

New media is the buzzword, shorthand for a volatile cultural and technology industry that includes multimedia, entertainment and e-commerce. However in social research the term has a long history, having been used since the 1960s and 1970s by investigators studying the form, uses and implications of information and communication technologies. (ICTs) (Leah A. Lievrouw & Sonia Livingstone, *2010)*

Social Media refers to the means of interactions among people in which they create, share, and exchange information and ideas in virtual communities and networks. Furthermore, social media depends on mobile and web-based technologies to create highly interactive platforms through which individuals and communities share, co-create, discuss and modify user-generated content. It introduces substantial and pervasive changes to communication between organizations, communities and individuals.

The Growth of Mobile Applications (Apps) and Smartphones

IT research firm Gartner estimated that worldwide Mobile app stores revenues to reach $26 billion in 2013 compared to $18 billion in 2012 and annual downloads will reach 102 billion in 2013, up from 64 billion in 2012. 91% of total downloads are Free apps and in-app purchases (IAPs) accounts for 48% of app store revenue by 2017, up from 11%in 2012. There is a linear relationship between the apps download and the sales of new mobile devices as the customers who buy new mobile phones definitely download apps and as the mobile buying cycle slows down so does the mobile apps downloads. The industry is expected to continue its explosive growth in future also due to upgrading of mobile networks from 2G to 3G to 4G which will increase the speed of internet and data downloads on the mobile phones and also the mobile phone manufacturers launching more and more devices with powerful processors, touch screens, increase in display screen sizes and finally developers developing more apps.

Apple iOS and Google Android app stores combined are the dominant players in this market and are forecasted to account for 90 percent of global downloads in 2017. Key reason for their dominance is their advanced ecosystems and active developer communities. Free apps currently account for about 60% and 80% of the total available apps in Apple's App Store and Google Play, respectively. Gartner Research highlights IAP is a major revenue contributor to Apple’s App Store revenue fueled by the increasing numbers of iPhones and iPads. Other platforms including Android and Microsoft stores

have not been able to monetize their apps, but analysts expect they will also see IAP contributions increase in the future.

Email and calendaring (46%), Instant Messaging (IM) (37%), and office & personal productivity (26%) are the three most popular uses of mobile applications today according to Gartner survey. CRM, at 19%, and ERP, at 17%, have been predicted to grow the fastest of all enterprise applications on the mobile over the next three years. Mobile apps are no longer a consumer phenomenon and there has been an increase in adoption by enterprise companies and are developing and launching mobile apps. Apps are being used to engage with both the consumers and employees. Smartphones sales are increasing and the companies are adopting the bring-your-own-device (BYOD) will also fuel the enterprise apps growth. But challenges remain for the App stores in terms of monetizing the applications and increasing their revenues. Customers are not inclining to pay for apps and making them pay is the biggest challenge for the industry. (Gartner 2013)

John Haydon in his essay non-profits are better than brands at Social media states, “Nonprofits seem to “get” social media way more than brands. Or at least they have a baked-in advantage. Brands spend billions trying to get people to feel passionate about them. And still very few, like Starbucks, Apple and Google, actually succeed that. As long as they keep this seed alive in their culture and in how they treat their supporters, they will kick ass in fundraising, employee happiness, and changing the world. Never forget the seed that is the nonprofit. The seed that once exclaimed “I want to make the world and awesome place!” (Haydon 2013)

Having an online presence can definitely help nonprofits spread their message and their demographic range. While more and more people spend their time accessing Twitter, Facebook, LinkedIn and other social media sites, one can get one’s name out there when plugged in as well says Tina Samuels in Social Media & Nonprofits . (Tina Samuels 2013)

Jennifer James in an article on Effective use of Social Media for Change avers “The past few years have seen the critical rise and mass adoption of social media for social change. As global conversations have escalated around using social networks to reach new audiences and spread philanthropic and charitable messages, questions still remain about how to effectively use social media to achieve measured results in communication strategy.” (Jennifer James 2013)

The Indian Scenario:

While social media growth around the world has slowed, certainly in the U.S. and Western Europe, it’s far from stopped, with the huge opportunity to recruit new users in less-developed markets ensuring that the social networking uptick will continue for years

to come. Some 200 million users globally were added in the past 12 months, with 1.61 billion people now active in social media. This is expected to advance to 1.82 billion next year before breaching the 2 billion mark in 2016.

According to Internet and Mobile Association of India (IAMAI), the number of social media users in Urban India reached 66 million by June 2013 and by mid-2014 is expected to cross 80 million users. Some 97 per cent of them are on Facebook. And they are spread beyond the big metros. One-third of social media users live in towns with a population of less than 5 million; 25 per cent of the total users live in towns with less than 2 million inhabitants.

Social media usage is also fast catching up with mobile internet users. According to the report, 77 percent of the users use mobile for social media. Email, social media, search, app store and chat / IM are used every day by those accessing internet through mobile. Facebook has 78 million monthly active users (MAUs) in India for the quarter ending March 31, 2013, registering a 50% increase from the Q1 2012. LinkedIn has 20 million users, Twitter has 33 million users, and Pinterest has 5.5 million users in India at the end of March 2013. Indians are very active on different social networks and are also actively increasing the amount of time they spend on the various social networking sites. (IAMAI report 2013)

Table 1: Social Media Usage: Global & Indian

Medium	Global	India
Facebook	1.15 billion	115 million
Twitter	500+ million	77.49 million
Google+	500+ million	20 million
LinkedIn	238+ million	23 million
Instagram	130+ million	Data Not Available
Pinterest	70 million	8.12 million
Tumblr	267 million	2.93 million
YouTube	Data Not Available	55 million

Once restricted to college students, Facebook's fastest-growing demographic is users over 18. My Space is another social networking site gaining popularity. As of June 2013, Facebook itself has about 82 million users from India and 75% of them were on mobile. Thanks to the Indian mobile manufacturers, the multimedia sets are now cheaper than ever allowing people from all economic strata to access the internet. The sudden surge of social media literacy has now spread all across the country. Thus, mobile apps provide not only ease of access to the users but it also allows users from the mid and low impact zones to access social media. It is observed that although a large chunk of these users may not be proactive but they do act as listeners. Listeners who when required, act.

Social media networking properties (apps/sites) comes second only to "search" as the most favored activity of smart phone users in India. The current goof up of the facebook IPO may have affected its image worldwide, but the majority of smartphone users in India have chosen to overlook it as a minor glitch. Contrary to the notion that mobile internet penetration is unhealthy, a recent report by Nielsen Informate Mobile Insights suggests that 93% Indian smartphone users use their handsets to access social media. Facebook, of course tops the list with 5 times more hits than its rival google+ and twitter falls into the third place. (*Anand Rai 2012)*

Social Media adoption among Internet Users in India is around 84% today. This translates to around 110 million social network users in India. Twitter has an audience of 82 million as per industry data. A 37.4% social networking growth has been recorded in 2013 alone—among the highest in the world.

This includes users mainly accessing Social networking sites like Facebook, Twitter, LinkedIn and YouTube. Other new and upcoming Social networking sites like Pinterest, Tumblr and Four square are yet to take off in a major way in India.The report further elucidates the Adoption of Social Technologies in Enterprises vs. Consumer, amount of time spent on social media by users along with addressing the key question of how corporate houses are factoring Social Networks in their Online Ad Budgets? This report presents a status quo compendium on social media that will act as a ready referral source for the digital media industry. (Suneil Chawla, (2013) **Social Media's Political Impact** Of 790 million eligible Indian voters in 2014, about 160 million are first-time voters between the ages of 18 and 24 years old. Political parties are also embracing social media to reach voters, including cellphone messaging. Social media are credited with helping the new Aam Aadmi Party (Common Man Party) and its candidate, Arvind Kejriwal, has trumped all odds to emerge the surprise winner in Delhi against the decades' old Congress and Bharatiya Janata parties. (*New York Times* Editorial 2014)

Whether it was in the Arab Spring or Egyptian Uprising or more recently the Syrian crisis, Social media had a role to play in all! Recently, Wall Street Journal's Alexander

Martin reported how Japanese electoral candidates employed Social media experts to campaign for them on SM with even Smartphone Games being launched by the ruling party to attract voters. But social media can also be subject to significant abuse. Some politicians have been accused of boosting their apparent popularity on social media with legions of followers who don't exist and of using social media to smear their opponents. Worse, social media have been used to fan violence against religious and ethnic groups; the dissemination of a fraudulent video may have helped spark deadly clashes between Hindus and Muslims in the city of Muzaffarnagar in September. That however is a study of the misuse and abuse of a public platform such as Social media and the topic of an altogether different debate.

Empowering the Voter:

A recent report released by the Internet and Mobile Association of Indiaand IRIS Knowledge Foundation has revealed that of India's 543 constituencies, 160 can be termed as 'high impact' — that is, they will most likely be influenced by social media. As the report explains, high impact constituencies are those where the numbers of Facebook users are more than the margin of victory of the winner in the last Lok Sabha (Lower House of Parliament) election, or where Facebook users account for over 10% of the voting population. The study goes onto declare 67 constituencies as medium-impact, 60 as low-impact and 256 as no-impact constituencies. In 67 other 'medium-impact constituencies', Facebook users comprise over 5 per cent of voters. Politicians here, the study says, 'cannot afford to ignore social media.' (*Saurabh Datar & Shakti Shetty2013)*

The study certainly seems to echo the general euphoria over social networking as a political tool. However, the number of Facebook users might not translate into any change in voting patterns -– Though high in numbers, 7.8 crore Facebookians and 2 crore Twitteratis make up only 8.5 % of the total Indian population. Social Media expert Ratnakar Kumar speaking on this vast divide between the internet haves and the have not says, "As you know the number of people active on social networking sites is small when compared to a vast majority of non-internet Indian electorates. However, a socially committed and politically aware 98 million in itself is a huge force to reckon with, especially when the voting turn-out in Indian politics is not always high, 98 million can play a major role." (*Saurabh Datar & Shakti Shetty2013)*

Social Media' role in Elections 2014

It is perceived that in the forthcoming elections political parties will invest significantly in Social Media. With the upcoming Lok Sabha elections and the emergence of the Aam Aadmi Party, (Common Man Party) we can expect significant investment of time and marketing spends on social media. Gujarat CM Narendra Modi is already one of the most popular Twitter celebrities with over 30 Lakh Followers and newly elected Delhi

CM Arvind Kejriwal has nearly 10 Lakh followers. Not surprisingly the largest online community is of youngsters and the urban middle class in the age group of 18-35—young voters that every political party is keen to woo to their side. The action in the online political space thus is bound to heat up. (Facebook Profiles of Narendra Modi and Arvind Kejriwal)

According to Randi Zuckerberg CEO of Zuckerberg Media, author of Dot Complicated, a self-help book on evolving digital lifestyles - and Facebook founder Mark Zuckerberg's sister, Social Media will have a pivotal role in determining the winner of 2014 elections in India. Randi, who runs a webzine also called Dot Complicated where questions on appropriate online behavior, sharing and networking are answered, in an interview with *The Times of India's* Kim Arora spoke extensively about social media's role in India's elections.

Says Randi, analysing the role of social media in Indian elections: "I worked with Facebook India in 2009 and saw some exciting differences. India is far more advanced in mobile technology. There is a large community that has first accessed the internet directly on mobile devices. I think that is going to make a huge difference in the elections - the ability to tap into their networks and to leverage them."[(Kim Arora interview with Randi Zuckerberg, Times of India, 2013)

More recently, mobile Internet, broadband, smartphone and social media played a major role in the debut win of Aam Aadmi Party (AAP) and its chief ministerial candidate Arvind Kejriwal in Delhi.

Throughout their campaign, AAP members used social media, text messaging, voice, and mobile internet to mobilize voters. Their success was visible in the number of likes and shares each page of the party and its candidates got in Facebook. The campaign also saw videos of candidates' open forum going viral through YouTube and other social media platforms.

The use of robo calling to contact voters has been highly successful. Voters got elated when they heard Arvind Kejrival calling them directly (recorded) promising better governance which the Congress party could not deliver all through its tenure in the capital. AAP ensured that the calling continued till the fag end of their campaign ensuring this gargantuan victory. (@telecomlead, 2013)

Data for Social media penetration worldwide by country and projections (2012 to 2017)
In India it is expected to grow from the present 5.7 % it is to 17. 2 % by 2017!

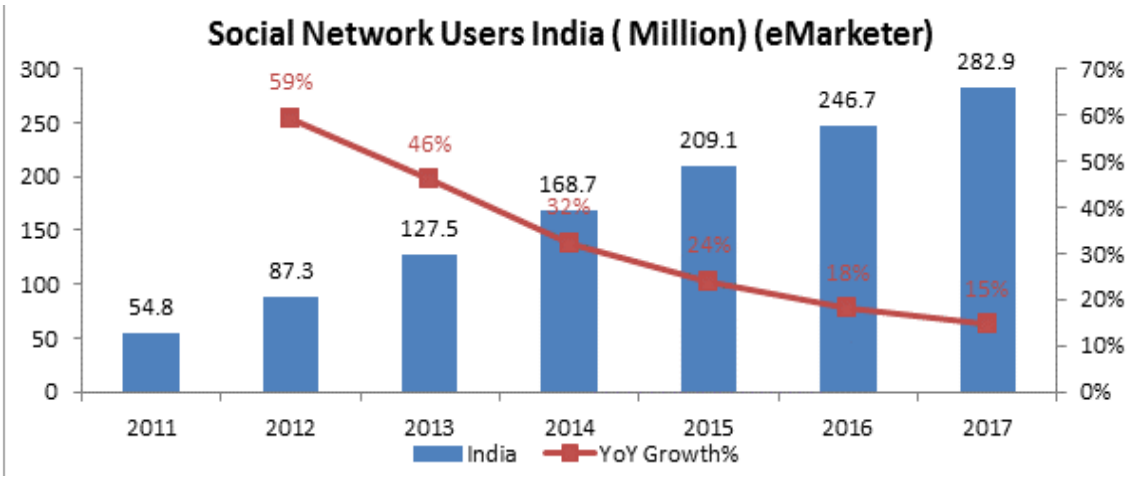

Figure 6: Social Network Users

Future Prospects

Despite being an area that has witnessed exponential growth and virtually changed the field of communication in the last decade, research on New & Social Media which plays a vital role as an inexpensive and expedient method of outreach, is negligible. With mobile telephones reaching almost the very heart of rural hinterlands it is now possible to explore whether new communication plans using Internet and Satellite telephony and Social media can be utilized by NGOs to reach rural hinterlands. As the popularity of social media continues to grow, backed by successful IPOs from Twitter, LinkedIn and Facebook, Patrick Clinger, whose company, Pro Boards, recently surveyed this evolving landscape, made six predictions about what's likely to happen in the social media market for 2014. "It's hard to see how 2014 can top 2013 in terms of sheer seismic activity in the social media industry," said Clinger. "But there are bound to be new platforms and technologies emerging as well as continued industry consolidation." Companies will increasingly come to rely on the advantages of a forum-based, crowd-sourced solution as a resource for both customer support and marketing. The continuing trend towards mobile devices for everyday content consumption will move faster, putting an even greater emphasis on designing social media experiences for hand-held devices. (Patrick Clinger 2014)

Conclusion

With a 51.7% increase expected in the Indian subcontinent in Social Media users, the time is ripe to usher in a new digital revolution which entails the use of inexpensive efficient and prompt tools to aid social causes like HIV/AIDS research and communication. With transliteration and translation tools available across various e-platforms, the stage has come when these will be the tools of the future to push intensive research and study in these spheres. The field is now open to innovative

communicators who wish to take the lead and take e-communication to new heights in this digital age.

The present paper is a quantitative status quo report on the Social Media Users Demographics in India. The report acts as a ready for reference source for the digital media industry stakeholders in India as well as International players looking to address the digital market space in India.

References:-

1. Yasovardhan Bhatia, (2013) Education Times, *Social Media Makeover, New Delhi http://cms.itsmyascent.com/web/itsmyascent/career-advice/-/asset_publisher/nL0N/content/social-media-makeover*
2. Uday Mane, (2012) *Social Media for Nonprofits, http://www.socialsamosa.com/2012/07/social-media-for-nonprofits/*
3. Tina Samuels, (2013) *Social Media & Non profits, http://www.socialnomics.net/2013/05/15/social-media-and-nonprofits/*
4. Telecom Lead (2013) Salute to Arvind Kejriwal, AAP for using mobile Internet, social media http://www.telecomlead.com/news/salute-to-arvind-kejriwal-aap-for-using-mobile-internet-social-media-51545/
5. Suneil Chawla, (2013) Social Beat, *Digital Marketing Trends India*, http://www.socialbeat.in/2013/12/31/digital-marketing-trends-india-2014/
6. Social Samosa, (2013) *Best Practices in Social Media for NGO's,* [online*], http://www.socialsamosa.com/2013/06/best-practices-in-social-media-for-ngos-report/*
7. Slideshare, (2010) *How NGOs can Use Social Media, Slide share Presentation by the United Nations, Department of Social and External Affairs. http://www.slideshare.net*
8. *Shea Bennett (2013) Mediabistro.com, http://www.mediabistro.com/alltwitter/international-social-media_b48293*
9. Saurabh Datar & Shakti Shetty,(2013) *Will Social Media decide the 2014 elections? Mid Day, December 1, 2013, http://www.mid-day.com/lifestyle/2013/dec/011213-social-media-facebook-twitter-youtube-2014-elections.htm*
10. Prashant Naidu, (2013) Lighthouse Insights, http://lighthouseinsights.quora.com/Arvind-Kejriwal-On-The-Role-Of-Social-Media-In-Aam-Aadmi-Party-Influencing-Voters-Regulation-And-More
11. Patrick Clinger, ProBoards (2013) *Six Predictions For Social Media In 2014 http://www.mediapoondi.com/2013/12/18/proboards-six-predictions-for-social-media-in-2014/*

12. Leah a. Lievrouw & Sonia Livingstone, (*2010)* The Handbook Of New Media, Introduction to the first edition (2002) *The Social Shaping And Consequences of ICTS,* Sage Publications

13. Lasica J.D. and Burke Shonali, *(2012) How NGOs can use social media to create impact and eradicate poverty, United Nations,*

14. *Kim Arora, (2013)* The Times Of India, *Social Media will make a huge difference in India's Elections: Randi Zuckerberg, http://articles.timesofindia.indiatimes.com/2013-12-6/ interviews/44809319_1_randi-zuckerberg-facebook-india-facebook-founder-mark-zuckerberg*

15. John Haydon,(2013) *Why Nonprofits are Better than Brands at Social Media,*[online] *http://socialmediatoday.com/johnhaydon/1530831/why-nonprofits-are-better-brands-social-media*

16. Jennifer James, *(2013) 8 Tips for Effectively Using Social Media for SocialChange,*[online] *http://www.impatientoptimists.org/Posts/2013/03/8-Simple-Strategies-to-Effectively-Use-Social-Media-for-Social-Change*

17. Indu Nandakumar, (2013) The Economic Times, Bangalore*, Intel Sees Growth Opportunity In Internet-Of-Things,* [online] *http://articles.timesofindia.indiatimes.com/2013-11-15/hardware/44113073_1_brian-krzanich-internet-of-things-solutions-group-intel*

18. Gartner Report (September 2013) *Global Mobile App Stores Market 2013 – Explosive growth continues till 2017*

19. Editorial, New York Times, (2014) *"Social Media in Indian Politics",* [online] *http://www.nytimes.com/2014/01/10/opinion/social-media-in-indian-politics.html*

20. Digital Insights, 2013 *Social Media Facts, Figures and Statistics,* [online*], http://blog.digitalinsights.in/social-media-facts-and-statistics-2013/0560387.html*

21. Deepansh Bhatnagar, (2013) *Social Media will affect the 2014 Indian elections. Here's why,* [online*], Youth Ki Awaaz, http://thegenynot.com/2013/10/social-media-will-affect-the-2014-indian-elections-heres-why/*

22. *Anand Rai, (2012) 93% smartphone users in India access social media via handsets,[online] http://techcircle.vccircle.com/2012/05/30/93-smartphone-users-in-india-access-social-media-via-handsets-is-mobile-internet-getting-a-boost/*

Gandhiji's Nai Talim and Education in Present Scenario

Dr. Chaman Kaur
Assistant Professor
Department of Teacher Education
Sri Lal Bahadur Shastri Degree College
Gonda,U.P.

Abstract

India has been attempting to raise the standard of living of its peoples since independence. The success of such efforts along with other factors depends to a great extent on the quality of manpower, which in turn is influenced by the quality of education imparted to children in the country. The quality of education in a democratic set-up depends on the type and process of education adopted to make all round development of a child- the body, mind and spirit. In this regard, the present education system is lacking somewhere, since it emphasis on the bookish knowledge and route memorization which are only helpful in getting good marks or grade and then selecting for a job or for higher studies, but in actual it fails to face the challenges of life which will come in their future. When we search for the solution of such challenges we have to look back and when we look back we find that these challenges can be successfully met by incorporating principles of Gandhiji's Basic education model along with the technology of present scenario. According to Gandhiji the education and work cannot be separate. The principle idea is to impart the whole education of body, mind and soul through the handicrafts that is taught to the children. Gandhiji called this education as Nai Talim. Gandhiji's entire political strategy, Satyagraha, Ahimsa and Fasting were based on the superiority of 'soul force' to physical force. Today, on the one side when we are advancing with technology, its' responsible use can help in addressing many problems of the society like corruption, lack of transparency, unlawful activities etc. So the main aim of education should be to prepare right men and women for the true development of the country. The present paper explores how the principles of Gandhiji's Nai Talim can be realized by adopting technology-driven interventions in present scenario.

Key Words: Education, Basic Education, Nai Talim, Technology, Development, Youth.

INTRODUCTION:

As per the report of 2011 census more than fifty-two percent of the total population of India is of youth. The youth constitute the vital and vibrant human resources of the nation but their representation in the administration and development effort of the country and states are less than the expectation. The problems of the youths are many and their aspirations are also naturally high. The need, therefore, is to create increasing opportunities for them to develop their personality and their functional capability. This make them economically productive and socially useful. But unfortunately, the present Indian education system has not been able to give right

direction to our youths and it does not provide them opportunities for their all round development or make them self-reliant. We have thousands and thousands of educated youths in our country, like engineering degree holders, MBA, MCA degree holders, Masters degree in Arts, Science & Commerce, etc. but sad to say that only few of them possess the employability skill. It means our education system is producing degree holder only, not skilled manpower. That's why India adopted National Skill Development Policy in 2009 for faster economic growth in the country. In this Policy, no newness is seen; it is just an extension of Gandhi's Nai-Talim (basic education) which mostly addresses the vocational spirit of education. Now a days the students may pass and earn degrees with first class or higher division or may acquire the highest degree, but even though they do not become self reliant and unable to face the challenges of the life. We all know that education is the most powerful tool to inculcate the value of dignity of labour among youths and to develop various skills. So, naturally educational institutions, either schools or universities have a great role to play towards the country by transforming all the children into skilled man power. For this purpose and to overcome the frustrated condition of educated unemployed youths of India, there is the necessity of such education which was predicted by Mahatma Gandhi through 'Nai Talim'. Basic education, if it is imparted properly, makes students employable or skilled and sustainable in true sense. Gandhi's emphasis on decentralization, community based economics, self-sufficiency, handicrafts, rural development, and use of low capital intensive appropriate technology that indicate his vision for a self-sufficient economy. As per Gandhiji's philosophy of education, knowledge cannot be separated from work. Both are inter-linked and interdependent. Skill development should not be thought or provided in isolation since it is means for promoting productivity by generating employment growth, decent work and ultimately for the promotion of economic and social development of a country. Therefore, present study is undertaken considering this very important aspect and emphasis has been given on what can be incorporated to present day education system from the various skill development and value promoting principles of Gandhiji's Nai-Talim.

PURPOSE OF THE STUDY:

The purpose of this research paper is to show that many of the basic concepts of Nai Talim can now be adapted in the present education and makes it work centric education as suggested by Mahatma Gandhi. The essentials of the Nai Talim for decentralized and autonomous system of education are now getting available in the connected society with Technology sweeping the whole world with communication revolution. The educational revolution can now be founded on the communication revolution, which is creating entirely new processes and mechanisms for living and working of the connected people. The major task is to find the processes and mechanisms of the new age society to suit the elements of educational system that can help personal and social development with work

and development centric approaches with non-exploitation and non-degradation of humans and nature.

OBJECTIVES OF THE STUDY:

1. To make an introspection to the various developmental principles in Gandhi‘s Nai Talim.
2. To study the relevance of Gandhi‘s Nai Talim for skill development in present scenario.
3. To understand how technology could be used to enhance the effectiveness of Nai Talim.
4. To evaluate the future prospective of education and their impact on moral development of a child.

METHODOLOGY:

- This research paper is basically descriptive and analytical in nature. Research was carried on by consulting various related books and related topics.
- Qualitative research approach has been applied in the present study.
- Content analysis method has been undertaken to lead the study in proper direction.
- The data used in it is purely from secondary sources according to the need of this study.

DISCUSSIONS:

After analyzing the Gandhian philosophy and the education in present scenario in detail the discussion made is classified in following heads:

Concept of ‘Nai Talim’:

Nai Talim, the concept literally means ‘New Education‘. It is a holistic one where all aspects of the individual— intellectual, physical, social, and spiritual are cultivated in a curriculum. This is also called as basic education.

Basic education scheme of Mahatma Gandhi is deeply rooted to his eleven Vows or eleven principles which are – Truth, Non-violence, Non-stealing, Self-discipline, Non-possession, Bread labour, Control of the palate, Fearlessness, Use of locally made goods, Removing untouchability and equality of all religions. These eleven vows lead his thought on Nai-Talim. The fundamentals of Nai –Talim or Basic education are:

1. Universal minimum education to all the children which Gandhiji called as basic education.
2. All kinds of education must be self supporting in nature so that it can meet the Tuition fees.
3. In this education system, the skill of fingers is utilized up to the final stage.
4. Every day during the school time, all the pupils skillfully work with objects for some period.

5. The education must be imparted through the mother tongue.
6. In its method i.e., teaching learning practices, it must be woven around some sort of art or handicraft.
7. The craft chosen must be systematically learnt with a view to efficiency and practical results
8. The product of the craft must be economically paying.
9. In this education, there is no room for giving sectional religious training. Fundamental universal ethics are given full scope.
10. This education, whether it is confined to children or adults or male or female will find its way to the homes of pupils.

The introduction of such manual training through basic education will serve a double purpose in India. It will pay for the educations of our children and teach them an occupation on which they can earn their bread. Such education system must make our children self reliant and inculcate the value of respect for manual labour.

Basic Formulation of Nai Talim

The three elements of education - learning, work and locally available technology- are linked by an iterative process:

Work + Technology + Education = Socially Useful and Productive Work (SUPW)

In this formulation,

- **Work** is assumed to be wholesome, having routine, rest, progress and pleasure all integrated into working and using technology.
- **Technology** is either empowering and / or non-exploitative of people and nature, and does offer wholesome work, and does not make a human being a 'cog in the machine' and degrades human creative nature, or pollutes and degrades the nature around.
- **Education** is the learning through working and using technology for creating SUPW, in which quality is embedded due to output of work (products and services) being socially useful and helpful in raising productivity of all those involved in using the products and services. This is the Nai or newness aspects that could be involved in the process of working and giving freedom and autonomy to the learner and his/her work in choosing and creating new processes and results.

Social and Ethical Aspect of Nai Talim:

(i) Psychological:

- Provided for child nature and supporting towards self esteem.
- Providing and considering child innate activism and curiosity.

- Facilitate a climate for child dignity, respect to manual work and self-esteem.

(ii) Scientific:

- Focus on Doing, Discovery, Exploration means Induction Logic
- Children engagement through appropriate work/craft for meaningful education
- Children build on concrete and direct experiences
- Children build on prior knowledge and experience (Constructivism)

(iii) Practical:

- Focus on work, activity, experiment on society and culture.
- Focus on community life and self government for developing democratic values and virtues.
- Cooperation and mutual help together through craft/ art work
- School community life leads to moral values
- Practitioner of virtues rather than theory.

Skill Development and Value Promotion Principles in Gandhiji's Nai-Talim:

Gandhjii stressed that bookish knowledge is not sufficient for personality development unless skills are promoted. This practice needs to be retained from the beginning of education that is at school stage. Gandhiji's *takli* and *charkha* were symbols of rural/village economy which could be strengthened by Nai-Talim. Not only because of production has utility but also because of its value appealing skill generation attributed. Gandhiji had given so much importance to the manual work in Basic Education. The various skill development and value based principles in Nai-Talim/Basic Education are:

1. Manual work in Nai-Talim follows the principle of hard work, patience, courage, self-confidence and self-dependence. So, through craft-centered education all these qualities are promoted in children.
2. Skill development is not separate from knowledge acquisition process, means education must be able to enhance skills to do various work or to enhance employability.
3. One of the prominent aims of Basic education is liberating individuals from economic and psychological dependence. It automatically leads the pupils to follow the principle of self sufficiency through craft-centered education.
4. Principle of social revolution by engaging students in community work, participation on rural *Panchayati* system and minimizing the unnatural division between haves and have-nots.
5. Principle of developing multiple-intelligence for skilled workforce. As for example, by *takli* –spinning a student will not only gain knowledge of varieties of cotton but also of different soil-types and of basic arithmetic.

6. Team spirit, sincerity, respect for manual labour, feeling of being mutually helpful- all these are essential values for skill development and Nai-talim is a complete education system from this angle also.

Relevance of Nai Talim in Present Scenario:

In the present scenario, youths pass the graduate examination with first division or acquire the Masters degree or M.Phil. / Ph.D. degree, but still they do not become reliant and are not able to shape their future. In such a case, the education or degrees earned by them are meaningless or useless. Due to an increasing population and competition there is no prospect for the young graduates who acquire only degree or degrees. Many of them have no hope for a bright future. The present education without life skill produced only literate unemployed youth force without confidence, which could not face the challenges of life. It appears that education today has failed in giving any direction.

Again, according to Gandhiji it is crime or an offence in the name of education to make or produce merely a literary and unfit men and women for the society. It is a fact that the present system of education has been defective for the last many decades. After independence, many committees & commissions have been formed, but how much improvement has been done in the name of reformation of education is a big question for all.

The youths who belong to agriculture back ground (received degree or not) they also want to work or serve in the cities on fewer salaries, which could not meet their day today needs. So, there is drainage of youths from rural villages towards cities. This situation affects not only on the economy of villages or rural areas but also hinders in the development of urban planning or urban economy.

Gandhjii also said that education should include moral, physical and mental development of a person. The present system of education is full of anomalies and that is why education has not been able to give right direction to our youth and does not provide opportunities for their all round development or to make them self reliant. So, if we do not awaken at the right time and take efforts to bring changes in our defective educational system according to the views of Mahatma Gandhi, the situation would become so serious that we would not be able to manage it forever.

Finding developmental ways and linking them with education is a big issue. Our goals is limited at this stage in finding Social Developmental Education model that will resemble with Nai Talim and link the education with situated development with support of open educational resources for offering ‘Quality Education for All’ that will permit innovative and creative education essential for living and working processes of individuals and groups.

Model for Inculcation of Gandhiji's Nai Talim in Present Scenario:

The major challenge in front of present educational system in India is value crises. In order to rescue our education system by overcoming the challenges of values crisis researchers, academicians and educators supported constructivist curriculum framework in which students construct knowledge themselves. This is nothing but adopting the basic education system of Gandhiji. In connection with the suggestions of many researchers, following points are added to improve the present education system by skill development and value promoting activities:

1. Education of Handicraft and training of Co-curricular activities should be given to students scientifically based on ability, interest, social needs scenario and utility rather than artificiality.
2. Re-planning of Education system is the urgent need to be undertaken by MHRD keeping in mind Indian population.
3. Another emphasis that is now needed is a good knowledge of mother tongue. In fact, the primary education should be in the mother tongue of the children. This will ensure that the concept formation is sound, expression of ideas is refined and a strong foundation for further learning is laid.
4. There is also a need to reorient the teachers, curriculum developers and teacher education institutions.
5. Another necessity is to invest significant amount of resources (Teacher Educators with Right Attitude) in training all the teachers to make them highly competent and responsive.
6. Gandhiji's Nai Talim is to be again designed to produce responsible, empathetic citizens who will look upon all kinds of useful work including manual labour as honorable and dignified in the present society.
7. We have to equip prospective teachers with the knowledge, attitude and skills they require to perform their tasks effectively in the classroom, the educational institution and wider community.
8. In order to enlighten mind and to promote spiritual values Mass Prayer Programme should regularly be organized in all schools and colleges**.**
9. Music, craftwork, painting, weaving, cooking and driving car etc. should be common subjects irrespective of Gender so that it can reduce gender biasness.
10. Learning by Doing, Learning by Experiments and Learning by own experiences should be adopted as the tactics of teaching learning process in schools and colleges for the very purpose of developing innovative/original ideas of children.
11. Visits to village, spending time listening to agriculturists and educating them about the latest agricultural practices should be an integral part of modern education.
12. By making provision of works like gardening, cleaning, woodwork we must teach our children a respect for manual labour and at the same time for a good exercise

of intellectual activities and it will also bring a revolutionary change to our society by developing healthy work culture.

13. Leadership skills can be developed in students by involving them in the activities like team-work, cleaning of public places, use of locally made goods, health & hygiene education and cultural programmes.
14. Vocational Guidance and Career Counselling Programme, Skill Development Programme and courses should be conducted at the post-secondary and higher education level only so that students can become self-reliant, self-sufficient and economically independent in future.
15. Handicraft activities must be promoted as per present day need of 21st century society and provision of full training for skill development in teachers and students must be done. Because, only handicraft can bring a harmonious development of hand, head and heart.
16. For instance, consider a Nai Talim learning centre based on information technology services. These services could include building web or mobile applications, and other software of simple to medium complexity, often by assembling open source software components. Even data entry and multimedia design jobs could be considered. All this will expose students to working of diverse businesses, and also help develop entrepreneurial capabilities.

Let us now incorporate the core part of Nai Talim which is learning through actual work, into new environments described above. This aspect is particularly important for imbibing fundamental character traits and habits, to quickly adapt to changing situations. Because, however well one is trained in certain skills, situations could change such that those skills become irrelevant. So people need to be equipped with a different kind of skills that help adapt to change. Nai Talim based learning centers will help imbibes broader elements of character to tackle such situations.

CONCLUSION:

Education is effective when it is transacted through work and craft and not only through books and abstraction. Education needs to focus on all-round development of a child and it is best obtained through experience. Through any kind of activity based education, students learn with joy and in addition to literary knowledge they acquire moral, physical, mental development. It helps them to become self reliant and think to realize the dignity of labour. They not only able to earn their bread but also able to fulfill the obligations of their family and in carving the path of their progress, ultimately they become able to achieve their goal in life. For true character-building education, the focus needs to be on values, ethics and ideal citizenship.

All forms of violence and exclusion in schools needs to be rooted out. Education needs to be based on non-violence. Focus is also needed on culture, arts, music, dance sports and games which are the basis for the development of creativity, imagination and

peaceful living with harmony. Educational planning needs to be undertaken with rural Indian masses in mind. Community is a part of every school and the community's engagement in terms of owning and managing of schools needs to be focused and promoted. For a democratic society which makes promise to flourish peace, schools and colleges must nurture values of work culture, humanity, righteousness, inclusion, integrity, and empathy. So, there is a need to reintroduce various elements of Gandhiji's Nai Talim scheme of education in all schools in the country.

With these ideas to improve the quality of education, some of the global issues and citizenship values need to be integrated in the School and Teacher Education Curriculum viz., climate change, global warming, water crisis, value crisis, swachhta, clean energies, land degradation and erosion of soil fertility, gender equity, inequity and inclusive growth to develop sensitivity and critical consciousness on the issues, among the students. And this all can be best fulfilled if we incorporate the elements of Gandhiji's Nai Talim along with technology-driven interventions.

References:

1. Gandhi, M.K., Kumarappa Bharatan (ed) (1951)., 'Basic Education', Ahmadabad: Navjivan Publishing House.
2. Kalita, Mallika; 'Present Day Relevance of Gandhi's Nai-Talim for Rural Development' International Journal of Social Science and Humanities Research', July - September 2019, Vol. 7, Issue 3, pp: (455-460). Available at: www.researchpublish.com
3. Kumar, M. R. & Singh B.P.C.(2015), 'Gandhi's Basic Education for Skill Development'; 'University News', Vol. 53 (No.39).
4. Kumar, W.G.P (Ed.) (2018), 'Experiential Learning: Gandhiji's Nai-Talim' Published by Mahatma Gandhi National Council for Rural Education; Department of Higher Education, MHRD, Govt. of India.
5. Mukherji, H.B.(1962), 'Education for Fullness', Mumbai: Asia Publishing House.
6. Pachauri, Girish (2018), 'Philosophical and Sociological Perspectives of Education' Meerut: R.Lall Book Depot.
7. Pandey, P. & Mehta, D. (2018), 'Basic Education of Mahatma Gandhi: Relevance and Implications in Present Modern World', 'University News' Vol. 56 (No. 05)
8. The Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol. 85 (1995), New Delhi: Publication Division, Ministry of Information & Broadcasting Gov.of India.

Gender Disparity in Education: Bihar

Dr Shashi Bhushan
Assistant Professor Economics
Sudhakar Mahila Post Graduate College
Varanasi,U.P.

Education and especially female education is considered as a key factor to economic development and it is closely related to demographic parameters and other indicators of health and socio-economic of population or a nation as a whole. Where women are literate and advanced, economic growth has been steady and they have not been allowed to be full participant in the process, growth has been arrested. In this context Mikhail Gorbachev stated that "status of women is the barometer of democratize of any state, an indicator of how human rights are respected."

The first step towards the capacity building of woman is to allow women to avail their basic human rights to education. The social returns of female education go far beyond individual welfare. It acts as an agent of national development through improvement in the health and hygiene, reduction in child mortality rate, increase in productive work force, and decrease in the fertility rate, greater political empowerment, improved educational level of the society and increased sense of nationality so there are many striking evidence of socio- economic benefits of women's education. India stands today at a crucial crossroad in its path towards greater social progress and actualization of children's rights, both of which are inextricably linked to each other. The National State report to the *Committee on Rights of the Child* notes that India is "fully committed to the universalization of elementary education, by not only making it a fundamental right of all its children, but also as a key strategy to address the problems arising from poverty." India has 400 million children below the age of 18 years, which is the largest child population in the world. The State considers it a "matter of utmost priority that its children receive education and develop skills, so that they can realize their complete potential and effectively participate and contribute to the social, cultural and economic life in the nation." (UN Press Release, Second Periodic Report of India)

A disproportionate number of the nearly 12 million Indian children not in school are female. Between 2006 and 2010, only 26% of girls completed secondary education, compared to 50% of boys. This inequality between genders is more pronounced among lower-income families. There is much to praise in India's efforts to promote female literacy. It has risen steadily from 8.86% in 1951 to 65.46% in 2011 whereas female literacy in Bihar has increased from 4.22% to 51.50% for the same period. During the period from 1951 to 2011 India's female literacy increased about 7.3 times and in Bihar, it

increased about 12.2 times. In spite of all progress and development, the gender gap in education widening continuously in India and Bihar.

Table-1: Male- Female literacy gap in India

Census year	Person	Male	Female	Male Female Gap in literacy rate
1951	18.33	27.16	8.86	18.30
1961	28.3	40.4	15.35	25.05
1971	34.45	45.96	21.97	23.98
1981	43.57	56.38	29.76	26.62
1991	52.21	64.13	39.29	24.84
2001	64.83	75.26	53.67	21.59
2011	74.04	82.14	65.46	16.68

Source: Census, 2011

Table-2: Male- Female literacy gap in Bihar

Census year	Person	Male	Female	Male Female Gap in literacy rate
1951	13.49	22.68	4.22	18.46
1961	21.95	35.85	8.11	27.75
1971	23.17	35.86	9.86	26.00
1981	32.32	47.11	16.61	30.05
1991	37.49	51.37	21.99	29.38
2001	47.00	60.32	33.57	26.75
2011	61.80	71.20	51.50	19.7

Source: Census, 2011

The UN Convention on Elimination of Discrimination against Women (adopted by UN General Assembly on 18 December 1979) bans any kind of discrimination against women because it is incompatible with human dignity and it also impedes the full realization of the potentialities of women. Extensive discrimination against women which continues to exist different spheres of life stand in the way of participation of women on equal terms with men and that hampers the growth and prosperity of the family and society. When the creative abilities and personal contributions of half the population

are subject to constant subjugation, socio-economic progress is bound to be adversely affected.

INTER-STATE DISPARITY IN FEMALE EDUCATION

Gender disparity in education is an important issue of human right and social justice. After more than 71 years of independence, we still have gender gap in education at State and national level. According to census, 2011 nine major states- Bihar, Haryana, Madhya Pradesh, Jammu & Kashmir, Jharkhand, Orissa, Rajasthan, Uttarakhand and Uttar Pradesh have female literacy less than national average 65.46%. Bihar has recorded 53.3% of female literacy with lowest rank.

India is a country with high gender disparity in literacy. As per Census 2011, overall literacy rate of India is 74.04% whereas the male and female literacy rate is 82.14% and 65.46% respectively. Among all states, kerala is on the top, whereas Bihar is on bottom.

Table-3:Inter- State comparison in ranking and gender gap in female education

States	Male	Female	Gender Gap
Andhra Pradesh	74.9	59.1	15.8
Arunachal Pradesh	72.6	57.7	14.9
Assam	77.8	66.3	11.4
Bihar	71.2	51.5	**19.7**
Chhattisgarh	90.0	81.2	8.8
Delhi	90.9	80.8	10.1
Goa	92.6	84.7	7.9
Gujarat	85.7	69.7	16
Haryana	84.1	65.9	**18.2**
Himachal Pradesh	89.5	75.9	13.6
Jammu& Kashmir	76.8	56.4	**20.4**
Jharkhand	76.8	55.4	**21.4**
Karnatka	82.5	68.1	14.4
Kerala	96.1	92.1	4
Madhya Pradesh	78.7	59.2	**19.5**
Maharashtra	88.4	75.9	12.5
Manipur	86.1	72.4	13.7
Meghalaya	76.0	72.9	3.1
Mizoram	93.3	89.3	4
Nagaland	82.8	76.1	6.7
Odessa	81.6	64.0	**17.6**

Punjab	80.4	70.7	9.7
Rajasthan	79.2	52.1	**27.1**
Sikkim	86.6	75.6	11
Tamil Nadu	86.8	73.4	13.4
Tripura	91.5	82.7	8.8
Uttar Pradesh	77.3	57.2	**20.1**
Uttarakhand	87.4	70.0	**17.4**
West Bengal	81.7	70.5	11.2
India	**82.1**	**65.5**	**16.6**

Source: Census, 2011

DISTRICT-WISE GENDER DISPARITY IN BIHAR

The distribution of female is uneven throughout the Bihar. Table No. 4 show that the only one district Munger have more than national average i.e. 65.5% and 21 districts have more female literacy than Bihar itself. The highest female literacy registered in Munger i.e 65.53% . Whereas the lowest literacy rate recorded in Saharsha. The maximum gender gap exists in Supaul i.e. 25.02% while minimum gender gap is in Munger(14.53%).

Districts	**Male**	**Female**	**Gender Gap**
Paschim Champaran	68.16	46.79	21.37
Purbi Champaran	68.02	47.36	20.66
Sheohar	63.72	47.25	16.47
Sitamarhi	62.56	43.40	19.16
Madhubani	72.53	48.30	24.23
Supaul	71.65	46.63	25.02
Araria	64.15	45.18	18.97
Kishanganj	65.56	47.98	17.58
Purniya	61.09	43.19	17.9
Katihar	60.99	45.37	15.62
Madhepura	63.82	42.75	21.07
Saharsha	65.22	42.73	22.49
Darbhanga	68.58	46.88	21.7
Muzaffarpur	73.61	56.82	16.79
Gopalganj	78.38	56.03	22.35
Siwan	82.77	60.35	22.42
Saran	79.71	56.89	22.82
Vaishali	77.00	59.10	17.9
Samastipur	73.09	53.52	19.57
Begusarai	74.36	57.10	17.26

Khagaria	68.51	52.16	16.35
Bhagalpur	72.30	56.49	15.81
Banka	69.76	49.40	20.36
Munger	80.06	65.53	14.53
Lakhisarai	73.98	54.89	19.09
Sheikhpura	76.14	54.93	21.21
Nalanda	77.11	54.76	22.35
Patna	80.28	63.72	16.56
Bhojpur	84.08	60.20	23.88
Buxar	82.78	59.84	22.94
Kaimur	81.49	59.56	21.93
Rohtas	85.29	64.95	20.34
Aurangabad	82.52	62.05	20.47
Gaya	76.02	55.90	20.12
Nawada	71.40	51.09	20.31
Jamui	73.77	49.44	24.33
Jehanabad	79.3	56.24	23.06
Arawal	81.27	56.85	24.42
Bihar	**73.39**	**53.33**	**20.06**

Source: Census, 2011

CAUSES OF GENDER DISPARITY IN EDUCATION

In the States female education is constrained by economic, social, cultural, political and educational factors. The direct and opportunity cost of sending girls to school influence the parent's decision on education of their daughters. Son's education given performance to that of daughter because they are supposed to physically and economically support parents in their old age, while girls are likely to leave their families after marriage which reduces the economic incentives to invest on the girl's education. In India, there is an opportunity cost to girls education in terms of the time spent in the school, else they could be helping to their mothers in household chores.

The dowry and the practice of marriage with a man of higher status often turn female education into a liability. Opportunities for achieving a decent return on household investment in education may also be blocked by social norms that insist on early marriage for girls and mitigate against female literacy. To the mind of many parents allowing girl to go to school unprotected, create an unnecessary risk of blame, loss of reputation and status. The following are the some of the important factors which could affect the low literacy rate of women in Bihar -

• Poor school environment for girls- In general the school environment for girls in Bihar is not really interesting and encouraging. There are still many schools with poor basic amenities such as drinking water, latrine and toilet facilities, improper building and inadequate number of teachers especially female teachers preferable for any parents for safety of their girl children from different types of exploitation and abuse.

• The lower enrolment- The major educational problem faced by girls, especially girls from rural areas, is that although they may be enrolled at the beginning at the year, they do not always remain in school. Girls are often taken out of school to share the family responsibilities. Children belonging to low caste families are forced to learn skills and work and not encouraged to go to school due to various factors in the sphere of strict instruction from high caste communities for their selfish motives of keeping them as domestic servants. The data on school attendance collected by the World Bank shows the proportion of girls attending school decreases with age while for boys it remains stable. On the 21 February 2005, the Prime Minister of India said that he was pained to note that "only 47 out of 100 children enrolled in class 1 reach class 8, putting the dropout rate at 52.78%".

• Dowry system- In India, dowry refers to the durable goods, cash and real or movable property that the bride's family gives to the bridegroom his parents or his relatives as a condition of the marriage. The dowry system is thought to put great financial burden on the bride's family. Dowry system and other social act as main causes of the neglect of the girl child and discrimination against girl child including the deprivation of right to education. In some cases, the dowry system leads to the crime against women ranging from emotional abuse, injury to even deaths.

• Early marriage- Early or child marriage in India, according to Indian law, is a marriage where either the woman is below age 18 or the man is below age 21. Most child marriage involves underage women, many of whom are in poor socio-economic conditions. Jharkhand is the state with highest child marriage rates in India. Rural rates of early marriages were three times higher than urban India rates in 2009. There is high association of female literacy with female age at marriage. By and large the female age at marriage of 18 as prescribed by various legislations not at all followed in India. It is very much ignored and neglected by the families of parents with low literacy.

• Priority to son's education compared to daughter's education- Many parents view educating sons as an investment because the sons will be responsible for caring for aging parents. On the other hand parents may see the education of daughter a waste of money as daughter will eventually live with their husband's families and the parents will not benefit directly from their education.

• Poverty- Poverty happens to be the single biggest cause of illiteracy in India and a precursor to all other effects. Women are found to be economically very poor all over the India. A few women are engaged in services and other activities. So, they need economic power to stand on their own legs on per with men. Poverty is considered the greatest threat to peace in the world. Sex slaves are a direct outcome of poverty. In a poor family, girls are the main victims; they are malnourished and are denied the opportunity of better education and other facility. If poverty were not a concern, then the girl child will be able to follow her dreams without concerns of sexual exploitation, domestic abuse and any education or work. . Numerous studies show that illiterate women have high levels of fertility, poor nutritional status, low earning potential and little autonomy within the household.

•Bihar is India's MOST illiterate state – 32 million people can't read. Nearly 20 million of these are women. They can't read a bus schedule or labels on a medicine bottle. They can't write a letter to family living in another area. These women can't count change at the market, or even know if they are being cheated by unscrupulous vendors. And they can't help their children with their homework or read a bedtime story. Illiteracy touches every single moment of their day… and they have little hope of a different future.

•There are only 918 females for every 1,000 males in Bihar – This is a stat that is connected to issues like sex selective abortion and female infanticide. In Bihar, like in many areas of India, families prefer to have sons because boys are expected to grow up and provide for their parents. Girls, on the other hand, will marry and go live with their husband's families… so from birth they are considered disposable, and a drain on precious resources.

•An estimated 60% of girls in Bihar marry by age 18 – **T**his stat is hard for most of us to wrap our minds around. But child marriage is especially common in rural areas. Some parents view their daughters as a burden to be rid of quickly; others genuinely believe marriage will secure their daughter's future. Instead, child marriage perpetuates generational cycles of poverty, malnutrition, infant mortality, illiteracy, unemployment, and low life expectancy. And a young, married girl has very low status and negotiating power, leaving her more vulnerable to abuse by her husband and other family members.

•1 in 3 people in Bihar live below the poverty line – Illiteracy is intrinsically tied into the cycle of poverty, and Bihar is one of India's most impoverished states. It is estimated that 33% of the population lives below the national poverty line, which in India ranges from 368-558 rupees (around $6-$9) per month (by comparison, the international poverty rate is around $38 per month). Bihar also has one of the lowest rates of per capita income in India.

Boys are twice as likely as girls to be sent to school in Bihar – Impoverished families can barely afford school fees… so when parents must choose between sending a son or daughter to school, they almost always choose the son. This is deeply tied to the tradition of sons providing for their parents into old age, while girls will be married off and has no economic benefit for their parents. Many girls never even step foot in a classroom.

•Bihar is less than 0.1% Christian – Right now, most people in Bihar could go their entire lives without ever meeting a believer who could tell them about the Good News of Jesus Christ. Mission India's innovative Bible-based literacy curriculum slowly introduces students to the Gospel, and the Christian teachers are available to pray with and minister to students as they ask questions about Jesus. (Students are never forced to follow Jesus, and classes are available to people of ALL faiths.) We believe these classes are key to building a Bible-literate church in India.

SUGGESTION AND CONCLUSION

To remove gender disparity in education in Bihar following suggestions are useful-

1- Eradication of illiteracy is the first step to be taken towards empowerment of women because knowledge is power. An educated and vigilant woman gives birth to enlighten and value-based educated family.
2- Enactment of compulsory education, administrative laws should be encouraged and framed in the way to protect the dignity and rights of women.
3- Surmounting the supply side obstacle by locating school with in easy reach of the community by establishing the single sex – schools, flexible hours and provision of more female teachers.
4- Female participation in planning and management of schools and home should be encouraged.
5- Non-formal approach to basic education has been advocated as an important means by many educationists. It can play crucial role in educating girls and women who are out of school.

Thus, we can conclude that the windows and doors of education are to be opened widely, where female get the bright light of knowledge in abundance. Because a literature mother can do wonders in building up a healthy society and can become a ray of hope and enlightenment for the state and nation as whole.

REFERENCES:

1- Barro, Robert J., and Jong-Wha Lee (1994): Sources of Economic Growth, CarnegieRochester Conference on Public Policy, 40: 1-46.

2- Berta – Esteve – Volast, (2007), "Gender discrimination and Growth: Theory and Evidence from India," London, London School of Economics and Political Sciences.

3- Census 2011 Chubey P.K and Chaubey Geeta. "Rural-Urban Disparity in Literacy Interstate Variations in India" Indian Journal of Regional Science Vol.XXX no 1.1998

4- Kabeer, N (1999) 'From Feminist Insights to an Analytical Framework: An Institutional Perspective on Gender Inequality'

5- Kohli Anju "Gender Comparison and Development An inter country/inter State Analysis" 89th IEA Annual Conference Volume 2006. Razavi, S (2003), 'Women's changing roles in the context of economic reform and globalization'. Background paper for EFA Global Monitoring Report 2003/04

6- Santosh Ranganath N., Kama Raju T. (2009), "Gender Development in India: Dimensions and Strategies", Management Trends, Vol. 6, No. 1 & 2, ISSN: 0973-9203, pp. 120-126 Seguino, Stephanie. (2006). "Gender Equality and Economic Growth: A Cross-Country Analysis", World\ Development, Vol. 28, No. 7, pp. 67-71.

7- Singh, Ajit and Ann Zammit. (2007), "International Capital Flows: Identifying the Gender Dimension", World Development, Vol. 29, No. 7, pp 1249-1268.

8- Sunden, Annika and B. Surette. (2008), "Gender Differences in the Allocation of Assets in Retirement Savings\ Plans", American Economic Review, Vol. 88, No. 2, pp. 207-211. UNESCO, Gender and Education for All: The Leap to Equality- Summary Report (2003) (hereinafter referred to as UNESCO Summary Report) at p1, available at http://www.efareport.unesco.org/ UNICEF Basic information and gender equality: http://www .unicef.org/girlseducation/ index_statistics.html

9- Carron G and T,N Chau(eds.)1980: Regional Disparities in Educational Development: A Controversial Issue UNESCO. Paris.

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

अनुसूचित जातियों की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति

डॉ0 चित्रलेखा कुमारी
ग्राम–अमेठ पोस्ट–भिटी
जिला–कैमूर, बिहार

भारत में अतिप्राचीन काल से ही जाति व्यवस्था या वर्ग व्यवस्था की परिपाटी रहीहै। इसका उदय करीब ढ़ाई हजार वर्षों पहले हुआ था न सिर्फ हिन्दुओं बल्कि सिखों, इसाइयों और मुसलमानों के बीच भी पाया जाता है। भारतीय समाज का वर्गीकरण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में हुआ है। आरंभ से ही शूद्र वर्ग की स्थिति समाज में दयनीय रही है। प्रायः वे उपेक्षित एवं तिरस्कृत रहे हैं। उनकी स्थिति दासों की तरह रही है। उन्हें सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। वे अशिक्षित एवं असभ्य थे। अन्य जातियों के साथ बेटी–रोटी का संबंध नहीं जोड़ सकते थे। समाज के उच्च वर्ग के लोग उन्हें अस्पृश्य समझते एवं उनकी छाया से भी दूर रहते थे। इस प्रकार अछूतों की समस्या अति प्राचीन काल से ही गंभीर रही है।

भारतीय जातीय व्यवस्था में कुछ जातियों को सदियों से विभिन्न प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक शोषण का सामना करना पड़ा है। जाति के स्तर पर सबसे ऊँचा स्थान ब्राह्मण का रहा है, उसके बाद क्रमशः क्षत्रिय, वैश्य आते हैं और सबसे नीचा स्थान शूदों का रहा है। परम्परागत मतानुसार जातियों की उत्पति ब्रह्म से हुई है। उनके मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय जंघाओं से वैश्य तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए। कहा जाता है कि उन्होने कार्यों का बंटवारा भी किया जिसके अनुसार शूद्रों को ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों की सेवा का कार्य मिला। दैवी शक्ति द्वारा सृजित होने के कारण इस व्यवस्था को स्थायी एवं अपरिवर्तनशील समझा जाता है। मूलतः यह हिन्दू जाति पवित्रता श्रेष्ठता एवं हीनताओं की भावनाओं पर आधारित आदर्शात्मक तथा मूल्यात्मक संबंधों की एक व्यवस्था है।

जतियों में निहित श्रेष्ठता एवं हीनता की अवधारणाओं द्वारा भारतीय समाज में कुछ ऐसे पूर्वाग्रह जैसे–मूल्य एवं व्यवहार प्रतिमान उत्पन्न हुए जिनमें अनेक प्रकार की सामाजिक असमनताओं एवं निर्योग्यताओं का जन्म हुआ और जिसके परिणामस्वरूप समाज के अनेक वर्गों को निर्धनता से भी निम्न स्तर पर जीवन व्यतीत करना पड़ा। इनमें सर्वाधिक अमानवीय, असामाजिक तथा अनैतिक असमनताएं तथा निर्योग्यताएं अस्पृश्यता की संख्या में निहित थी। अस्पृश्य जातियों जिन्हें अब अनुसूचित जातियों द्वारा सम्बोधित किया जाता है, को पतित तथा दरिद्र माना जाता था और उनका सामाजिक श्रृंखला में सबसे निम्न स्थान था। उच्च हिन्दू जातियों की पवित्रता तथा अपवित्रता में अंध विश्वास के कारण उन्हें समाज से बहिष्कृत किया गया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अमानवीय तथा शोषण पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होने पड़ा। सांस्कृतिक स्तर पर छूने यहाँ तक कि उनकी छाया को भी अशुभ तथा मलिन माना गया। उन्हें न तो उच्च जातियों द्वारा सेवाएं प्राप्त करने की अनुमति थी और न उन जातियों जैसे धोबी, नाई, आदि जो उच्च जातियों की सेवाएं करते थे उनसे सेवाएं प्राप्त कर सकते थे। वे सार्वजनिक सुविधाओं जैसे कुआँ, सड़कों तथा जल मार्गों के

प्रयोग नहीं कर सकते थे। प्रायः उन धर्मशालाओं होटलों तथा चाय–पान की दुकानों इत्यादि में जाने तथा मूल्यवान वस्त्र आभूषणों एवं वर्तनों के प्रयोग से भी रोका जाता था। उच्च जातियों के लोग उन्हें बातचीत करने या साथ बैठने–उठने के योग्य भी नही समझते थे। उनके निम्न स्तर का आभास इस बात से लगाया जा सकता है कि उनके निवास प्रायः श्मशान घाटों के निकट या गांव के बाहर अन्य जातियों से पृथक होते थे। इन असमनताओं तथा निर्योग्यताओं से भारतीय समाज में सामाजिक समायोजन तथा अन्तं सामूहिक एवं अर्न्तजातीय अंतःक्रियाओं संबंधी अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हुई। इन वर्गों के आर्थिक साधनों की उपयोगिता तथा गतिशीलता पर प्रतिबंधनों ने देश के सामाजिक आर्थिक विकास में अनेक प्रकार की बाधा उत्पन्न की। इ स व्यवस्था द्वारा भारतीय सामाजिक संरचना पर एक प्रकार की ऐसी व्यवस्था उत्पन्न हुई जिसे पूर्णरूपेण अमानवीय तथा शोपणपूर्ण कहा जा सकता है। यही नही इन असमनताओं और निर्योग्यताओं के कारण समाज में सामाजिक विलगाव, पिछड़ापन, निर्धनता, औद्योगिकरण एवं अशिक्षा को बढ़ावा मिला साथ ही आधुनिकीकरण में बाधाएं आयी।

अनुसूचित जातियों के स्थिति में देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कोई बड़ा अन्तर नहीं आया है। सरकार के प्रयत्न करने पर भी अनुसूचित जातियों की स्थिति में सुधार नही होने के कई कारण है लेकिन शायद इन कारणों में बहुत बड़ा कारण राजनीतिक है।

अस्पृश्यता और पिछड़ापन जाति व्यवस्था के इतिहास के साथ जुड़ी हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि अस्पृश्यता की भावना में सबसे अधिक वृद्धि मनुस्मृति के निर्देशों से हुई। मनुस्मृति में कहा गया है कि चाण्डाल को गांव के बाहर रहना चाहिए। दिन में बस्ती में नहीं आना चाहिए वं अपने वर्तनों के उपयोग को केवल अपने तक ही सीमित रखना चाहिए। इस काल में चाण्डालों के सबसे अहम कार्य जैसे–गंदगी को साफ करना, लावारिश शवों को उठाना, आवश्यकतानुसार बाधिक का कार्य करना आदि सौपे गये। ऐसे लोगों के स्पर्श पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया और उनका मुंह भी देखना अपवित्र समझा जाने लगा। इस प्रकार शूद्रों की स्थिति निम्न थी।

मनुस्मृति में वर्जित श्लोकों को पढ़ने के बाद उनकी सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति का पता लगता है–शूद्र का अपना कुछ नहीं होताहै। उसका धन उसके मालिक द्वारा हास करने योग्य होता है। शूद्र को धन संग्रह नही करना चाहिए। स्वर्ग अथवा स्वार्थ–परमार्थ के लिए शूद्र को ब्राह्मण की सेवा करनी चाहिए। ब्राह्मण सेवा शूद्र का विशिष्ठ धर्म है। शूद्र को जूठा अन्न, जीर्ण–शीर्ष वस्त्र, आसार धान्य (फांफर, फटकन) तथा फटा–पुराना ओदना विछौना प्रदान करना चाहिए। ब्राह्मण के प्रति कठोर वचन कहने वाले क्षत्रिय को सौ पण, वैश्य को एक सौ पचास से दो सौ पण तक और शूद्र का तो बधकर देना चाहिए। यदि ब्राह्मण क्षत्रिय के प्रति वैसे ही कठोर वचन कहे तो पचास पण, वैश्य के प्रति कहे तो पच्चीस पण और शूद्र के प्रति कहे तो बारह पण से दण्डित हो।

इस प्रकार देखते है कि जिस अपराध के लिए मनुस्मृति शूद्र के लिए वध का विधान करती है उसी अपराध के लिए ब्राह्मण को बारह पण का विधान करके शूद्र के प्राय की कीमत मात्र बारह पण निर्धारित करके पक्षपात की सीमा तोड़ दिया है। शूद्रों की स्थिति समाज में निम्नतर थी। इन्हें पशुओं से भी नीचे समझा जाता था।

देश की स्वतंत्रता के बाद अति पिछड़ों (अछूत, दलित) जातियोंकी समस्याओं पर राज्य की ओर

से विशेष ध्यान दिया गया। उन्हें नागरिकों में सामाजिक शैक्षिक एवं राजनीतिक रूप से पिछड़ा समझा गया और उनके हितों की रक्षा और विकास के लिए संविधान में महत्वपूर्ण उपबंध सम्मिलित किये गये संविधान के उपबंधों को ध्यान में रखते हुए। 1950ई0 में राष्ट्रपति के आदेश द्वारा इन जातियों और जनजातियों की सूचियाँ तैयार हुई। 1950ई0 के बाद इन सूचियों में संशोधन या उनमें अन्य जातियों और जनजातियों को सम्मिलित करने का अधिकार संसद को दिया गया। संविधान के उपबंधों के अनुसार तैयार की गई सूचियों में सूचीबद्ध या सम्मिलित किये जाने के कारण ही इन अति पिछड़ी जातियों और जनजातियों को अनुसूचित जाति एवं अनूसूचित जनजाति कहा जाता है। देश में कुल 1111 जातियों को विभिन्न राज्यों में अनुसूचित किया गया है लेकिन नाम के समरूपता के आधार पर इनकी वास्तविक संख्या 751 मानी जाती है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में प्राचीन काल से अनुसूचित जाति के प्रति हो रहे भेदभाव में सुधार तो अवश्य हुआ है फिर भी अभी सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति दयनीय है। विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के बावजूद इनके जीवन में बहुत कम गतिशीलता देखने को मिलती है। भारत सरकार एवं राज्य सरकारें अनुसूचित जातियों के सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक एवं शैक्षिक उत्थान के लिए कृत संकल्प है। इसके लिए विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में उनके कल्याणकारी आयोजन कर उनकी स्थिति में सुधार लाने हेतु हर संभव प्रयास किया गया। इसके परिणाम भी अब सामने आ रहे है, आज देश के उचे–उचे पदों पर अनुसूचित जाति के लोग आसीन हो रहे हैं। सबसे ज्यादा वर्तमान में राजनीति के क्षेत्र में अनुसूचित जाति के लोग सशक्त होते जा रहे हैं।

संदर्भ सूचीः–

1. कौलेश्वर राय, ब्रिटिश कालीन भारत का सामाजिक आर्थिक इतिहास।
2. सिन्हा एवं इन्दुबाला–श्रम एवं समाज कल्याण, 1994
3. डॉ0 के0 एन0 शर्मा, भारतीय समाज और संस्कृति
4. डॉ0 एन मजूमदार, रेस एण्ड कल्चर ऑफ इंडिया।

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

सातवें दशक के उपन्यासों में मार्क्सवादी लोकदर्शन

डॉ0 संजय कुमार सिंह,
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
भूपेश गुप्त महाविद्यालय, भभुआ
कैमूर, बिहार

मानव जाति के पास विद्यमान विपुल संपदा, विशाल औद्योगिक क्षमता और आधुनिक विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी की अद्‌भुत उपलब्धियों का श्रमजीवी जनता के हितार्थ उपयोग करने के लिए निश्चित सामाजिक परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। घृणित शोषणकारी प्रणाली का जिससे लोग नफरत करते हैं तख्ता पलटने और पृथ्वी पर एक नये समाज की स्थापना करने की आवश्यकता है। इस समाज का सर्वोच्च और एकमात्र लक्ष्य है समस्त जनगण के लिए एक स्वतंत्र और सुखद, सही अर्थों में मानवोचित जीवन सुनिश्चित बनाना और मानव जाति को युद्ध और अंधाधुंध बर्बादी से सदा–सदा के लिए मुक्त करना।

आज दुनिया अपनी पूरी आबादी को गरीबी से मुक्त जीवन प्रदान करने की स्थिति में है। हम प्रकृति के शक्तियों को इतना अधिक अपने वश में कर चुके हैं तथा उद्योग, विज्ञान और टेक्नोलॉजी का स्तर इतना ऊपर उठ चुका है कि हमारी पृथ्वी पर बसने वाले तमाम लोगों की सारी भौतिक और आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना संभव हो गया है।

साहित्य में प्रगतिवादी चिंतन धारा का विधिवत् विकास महान दार्शनिक मार्लमार्क्स से हुआ। मार्क्स ने जिस प्रकार अपने विचारों से विश्व राजनीति और शासन प्रणाली को प्रभावित किया, उसी प्रकार साहित्यिक विचारधारा को भी। मार्क्स ने विश्व को सर्वहारा संघर्ष का मूल मंत्र दिया। उन्होंने विश्व समाज के अन्तर्गत तीन वर्ग बताएं। पहले में ऐसे कुछ मुट्‌ठीभर लोगों के बारे में बताया गया, जो समाज की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था और अर्थोत्पादन के साधनों पर एकाधिकार रखते है। दूसरे में किसानों एवं मजदूरों का बहुसंख्यक श्रमजीवी वर्ग है। तीसरा वर्ग बुद्धिजीवियों का है, पूंजीपति वर्ग के आश्रित रहकर सोचने–समझने का अभ्यासी रहा है। श्रमजीवी वर्ग मेहनत से अर्जित की गई मजदूरी पर जिन्दा रहता है। इसकी मजदूरी का मतलब है केवल उतनी धनराशि की प्राप्ति, जितने से वह केवल जिन्दा रह सके और अगले दिन पुनः श्रम के लिए तैयार रहे किन्तु सत्य है कि उनकी मेहनत–मशक्कत की वास्तविक मजदूरी उन्हें नहीं मिल पाती। मार्क्स का विचार था कि पूंजीपति समाज के इन मेहनतकश मजदूरों का स्वामित्व हो, क्योंकि पूंजी उनके श्रम से उत्पन्न होती है। यह समाज की सम्पत्ति है। अतः मुट्‌ठीभर लोगों का स्वामित्व नाजायज है। ''ऐतिहास भौतिकवाद जब इतिहास में निर्णायक भूमिका जनता की बताता है तो इसका मतलब कतई नहीं है कि वह महान व्यक्तियों की भूमिका से इंकार करता है। वह केवल इसी बात पर जोर देता है कि इतिहास के निर्माता आम मेहनतकश लोग हैं न कि महान विभूतियाँ।

मार्क्स की उपर्युक्त विचारधारा जीवन के यथार्थ पर आधारित है जिसकी अभिव्यक्ति साहित्यकारों ने पूरी तरह से की है। प्रगतिवादी लेखकों की दृष्टि में वही साहित्य सफल है जो शोषित मानवों की पीड़ा, वेदना तथा उनके प्रति किए गए शोषण और अन्याय का पर्दाफाश कर सके– मेहनतकश मजदूरों की आवाज बुलन्द कर सके। यही साहित्य का समाजवादी यथार्थवाद है जिसमें वह आर्थिक विषमताओं के मूल कारणों को पहचानता है और उन्हें समाप्त करने की दिशा में समाधान प्रस्तुत करता है। वह निरन्तर उस वर्ग का चित्रण करता है जिसमें समाज के उपेक्षित और पीड़ित लोग है जिन्हें सामान्य जीवन यापन के लिए अपनी विषम परिस्थितियों से कठिन संघर्ष करना

पड़ता है। साहित्य के समाजवादी यथार्थवाद के अन्तर्गत एक निश्चित विचारधारा पल्लवित होती चलती है। समाजवादी लेखक पूंजीवादी शोषण के समापन और समाजवाद की कीर्ति पताका फहराने का सतत् अभिलाषी होता है।

प्रगतिवादी दृष्टि के अनुसार साहित्य सृजन जनता के संदर्भों से जुड़ा हुआ जनता के लिए ही होना चाहिए। जनवादी साहित्यकार की कला का अक्षम स्रोत जनता होती है। जनता से अलग रहकर महान साहित्यिक सृजन संभव नहीं। सच्चा साहित्यकार अपने साहित्य की सार्थकता सिद्ध करने के लिए संघर्षरत सर्वहारा के हाथों में धारदार हथियार थमा देना उचित मानता है। जनता के साथ उसके संबंध जितने घनिष्ठ होते हैं, उसका साहित्य उतने ही स्वाभाविक सौन्दर्य से मंडित होता है। जैसे ही वह जनजीवन के अक्षय स्रोत से विलग होता है, वैसे ही उसकी प्रभाव शक्ति क्षीण हो जाती है। अतः जनवादी साहित्य की जड़ें शोषित–पीड़ित जनता की चेतना में ही जमनी चाहिए।

प्रगतिशील साहित्य युग के सन्दर्भ में सामाजिक संबंधों को ही सत्य और शाश्वत मानते हैं। अतः प्रगतिवाद में वैसे शाश्वत का महत्व कतई नहीं है जो हवा में झूलते काल्पनिक महल की तरह होता है। प्रगतिशील साहित्यकार के विचारों में यदि कोई ठोस भूमि पर अधिष्ठित शाश्वत वस्तु है जो वह है सामाजिक संघर्ष और क्राति। नवचेतना की अंगड़ाई लेती हुई नूतन सामाजिक मानवता निरंतर पुरातन और जीण–शीर्ण दानवी शक्तियों से युद्धरत रहती है तथा भविष्य में मंगलमय समाज की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहती है।

आधुनिक युग में क्रांतिकारी शक्तियां वे ही है जो पूंजीवाद का विनाश कर समाजवाद की स्थापना करने में समर्थ है। प्रगतिवादी साहित्य विध्वंस और नवसृजन दोनों की चेतनाएं साथ लेकर चलने का आकांक्षी है। वह जीर्ण–शीर्ण, रूढ़ और मानवता विनाशी मान्यताओं तथा पुरातन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परम्पराओं की निष्प्राणता से चिपके रहने के बजाय संघर्ष द्वारा उनका विध्वंस चाहता है। वह पुरानी व्यवस्था की जगह नूतन निर्माण करता है जो नवयुग और नयी सामाजिक आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर सम्पन्न होता है। प्रगतिवादी सुधारवादियों की भांति जर्जर व्यवस्था के सड़े–गले कपड़ों में पैबन्द जोड़ने के पक्षपाती नहीं है और न तो वह गला फाड़कर निरूद्देश्य ध्वंस की पुकार मचाने वाला व्यक्तिवादी विद्रोह है। वह आमूल क्रांति चाहता है।

प्रगतिवादी चिंतन ने शोषित सर्वहारा वर्ग की पीड़ाओं की भांति समाज में नारियों के शोषण और उत्पीड़न की कथा भी कही है। पूंजीवाद ने नारियों को गुलाम बनाकर रखा किन्तु मार्क्सवाद के अन्तर्गत नारी को आत्मसपर्मण करने या गुलाम बनाने की आवश्यकता नहीं है। वह पुरुष की तरह एक स्वतंत्र बौद्धिक इकाई और महत्व की समभागी है। उसका अस्तित्व हर तरह स्वतंत्र है। उसे स्वाधीन होना है। प्रगतिवादी ईश्वर की सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान सत्ता के प्रति आस्था रखने की जगह सामाजिक जीवन के विकास में कर्म और पुरुषार्थ को ही सफलता का आधार मानकर चलता है।

प्रगतिवाद की ये तमाम विचारधाराएं प्रायः संसार की अनेक साहित्यिक कृतियों में प्रस्फुटित हुई। मार्क्स द्वारा प्रदत्त लोकजीवन दृष्टि को साहित्य की अनेक आधुनिक विधाओं ने अपनाया।

उपन्यासों के विस्तृत परिसर में मार्क्स के विचारों की अभिव्यंजना ज्यादा सशक्त स्वरों में की गई। सर्वहारा के शोषण और उत्पीड़न भरे जीवन की कहानी उपन्यासों में ही गहराई से कहने के सुअवसर साहित्यकारों ने ढूंढ निकाले। उपन्यासों में विस्तृत दायरे में उन्हें साधारण जनता की जिंदगी की ट्रेजडी और पूंजी के बादशाहों के आमोदमय जीवन का कन्ट्रास्ट प्रस्तुत करने में बड़े

संतोष की अनुभूति हुई। जनता के सम्पूर्ण जीवन के यथार्थ अनुभूतियों को व्यक्त कर समाज की तह से उठती हुई क्रांति की चेतना को सरबुलन्दी पर पहुंचाना उपन्यास नाम की विधा में ही संभव हुआ।

यह मार्क्सवादी विचार दर्शन की विशेषता ही है कि साहित्य के क्षेत्र में उसे उपेक्षाकृत कम समय में ही पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त हुई। मार्क्सवादी चिंतन का केन्द्र बिन्दु सर्वहारा वर्ग ही रहा है। इसलिए उसके साहित्य चिंतन क्रम में भी सर्वहारा के प्रति विशेष जागरूकता दिखाई गई है। धीरे–धीरे मार्क्सवादी विचार के प्रति संसार के सर्वहारा वर्ग की अटूट आस्था बढ़ती और उसने अपने लिए महान उपयोगी स्वीकार किया।

कार्ल मार्क्स की समाजवादी चेतना व्यावहारिक धरातल पर मानवीय संवेगों को स्पर्श करने में सफल रही है। पूंजीवाद ने जहां एक ओर अपने व्यावसायिक स्वार्थ के कारण मानवीय संदर्भों को सदैव उपेक्षित रखा, वहीं मार्क्सवादी समाजवादी दर्शन में मानव को उचित सहानुभूति प्रदान की गयी। पूंजीवाद अपने शोषण चक्र के माध्यम से निरन्तर अपने अर्थ भंडार को शक्तिशाली बनाता रहा वहीं मार्क्सवाद सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के लिए सर्दव प्रयत्नशील रहा। उसकी उन्नति हेतु किसी प्रकार के संघर्ष को झेलने में तनिक भी पीछे नहीं रहा। समाज विकास के क्रम में पूंजीपति वर्ग की पराजय द्वारा पूंजीवादी संसार के विस्तार को संकुचित कर दिया। इस क्रांति ने यह निर्णायक परिणाम उत्पन्न किया कि अब पूंजीवाद सर्वहारा वर्ग के बढ़ते हुए कदम को रोकने में असमर्थ है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रगतिवाद की यह प्रगति न केवल अप्रतिम है बल्कि हिन्दी साहित्य को व्यापक स्तर पर प्रभावित करने वाली है। प्रगतिवाद के आगमन और उसकी साहित्यिक गतिविधियों को देखते हुए हमें मार्क्सवादी, समाजवादी चेतना के सर्वांगीण प्रभाव का स्पष्ट रूप प्राप्त होता है। यह प्रगतिशील साहित्य हिन्दी साहित्य का महत्वपूर्ण अंश है जो युग की आवश्यकता के अनुरूप ही विकसित हुआ। प्रगतिवाद के समर्थ साहित्यकारों ने यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में पहली बार जनवादी साहित्य की रचना की, जिसमें युगों से उपेक्षित जन–जीवन को साहित्य में स्थान दिया गया।

सन्दर्भ सूची–

1. द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद की सरल रूपरेखा प्रगति प्रकाशन मास्को
2. डॉ0 राम दरश मिश्र, प्रेमचन्द और उनका युग– हिन्दी उपन्यास : एक अर्न्तयात्रा–
3. डॉ0 भागीरथ मिश्र, काव्यशास्त्र
4. वैज्ञानिक कम्युनिज्म के मूल सिद्धान्त– व0ग0अफनास्येव

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

झोपड़ी के लाल जननायक कर्पूरी ठाकुर

डॉ0 दिनेश सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
भूपेश गुप्त महाविद्यालय, भभुआ,
कैमूर, बिहार

जननायक कर्पूरी ठाकुर राज्य एवं राष्ट्र की राजनीति के ऐसे पुरोधा थे जिनके जीवन की प्रत्येक सांस दलित, पीड़ित, उपेक्षित जनता के विविधमुखी विकास के लिए सतत निवेदित रही। श्री ठाकुर दलितों, पीड़ितो और शोषितों के सच्चे मसीहा थे। तभी तो उन्हें जननायक के रूप में जाना जाता है। राजनीतिक जीवन के उषाकाल से अस्तकाल तक वे इस वर्ग के उत्थान के लिए संघर्षरत रहे। वह समाजवाद को धरती पर उतारने के लिए जीवन पर्यन्त प्रयासरत रहे। अपने सिद्धान्तों की प्रतिबद्धता, कर्मठता, कर्तव्य निष्ठा और आचरण के कारण जन–जन के बीच आकर्षक का केन्द्र बने रहे। आज की राजनीति में सेवा के बदले तुरंत कुछ हासिल कर लेने का चलन है। इसके विपरीत कर्पूरी ठाकुर ने सेवा के बदले कुछ हासिल करने की कोशिश नहीं की। उन्हें पद मिला। इस पद का उपयोग भी उन्होंने जनता की सेवा के लिए किया। जनता के लिए पद को कुर्बान भी किया। पहली विधान सभा से मृत्यु के दिन तक वे किसी न किसी सदन के सदस्य रहे लेकिन किसी संपति के नाम पर गाँव की एक अदद झोपड़ी ही थी। खाता में भी मामूली पैसा था।

जननायक कर्पूरी ठाकुर सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्त पर विश्वास करने वाले राजनेता थे। उनकी सादगी आरोपित नहीं थी। बल्कि उनके स्वभाव की अंग थी। उनके जीवन की परिस्थितियाँ भी कुछ ऐसी थी जिनमें खाने–पीने, पहनने और रहने में दिखाने लायक या प्रदर्शन करने लायक कुछ नहीं था। इसलिए उनकी सादगी स्वाभाविक थी। लेकिन वह किसी कुंठा का कारण नहीं थी। ऐसा इसलिए संभव हुआ क्योंकि उनके विचार उच्चे और आर्दशपरक थे। अपने छात्र जीवन से ही वे अध्ययनशील और मेधावी थे। उनके व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी अध्ययनशीलता का विशेष योगदान था।

देश की आजादी मिलने के बाद कर्पूरी ठाकुर ने समाजवाद और संघर्ष का रास्ता अपनाया। सोसलिस्ट पार्टी तथा किसान मजदूर पार्टी के बीच एकता कराने में उनकी बहुत बड़ी भूमिका थी। वह बिहार के नेता प्रतिपक्ष उपमुख्यमंत्री और मुख्यमंत्री के अलावा लोकसभा सदस्य और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष तक रहे, किन्तु उनकी सादगी और सहजता यथावत बनी रही। सत्ता और पद का दिखावा उन्हें कभी छू न सका। मुख्यमंत्री रहते हुए भी वह मोटर सायकिल से ही कार्यक्रमों में भाग लेने पहुँच जाते थे। अपनी बेटी की शादी में उन्होंने सरकारी सेवाओं का लाभ लेने से मना कर दिया और मात्र 12 हजार रूपये मे उसकी शादी की। उनकी ईमानदारी पर विरोधी भी कभी उंगली उठाने का साहस नहीं जुटा सके। जिस कुटी में पैदा हुए, उसी में उन्होंने आखिरी साँस ली। सच्चाई यही है कि संपति का मोह उन्हें कभी छू न सका।

स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक तस्वीर बदलने लगी थी। सामाजिक और जातिगत विचारदलों पर हावी होने लगे थे। सोशलिस्ट अब क्रांग्रेस से अलग हो रहे थे। इस दौर में कर्पूरी ठाकुर समाजवादियों और जन आंदोलन के प्रमुख नेता बनकर उभरे। वर्ष 1946 में कर्पूरी ठाकुर ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से राजनीतिक जीवन की शुरूआत की। जब क्रांग्रेस की राजनीति चरम पर थी तब भी उन्होंने अपने जीवन का पहला चुनाव 1952 में सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर समस्तीपुर के

ताजपुर से लड़ा और निर्वाचित हुए। बाद के वर्षों में सोशलिस्ट पार्टी, प्रजासोशलिस्ट पार्टी, संयुक्त सोशिलिस्ट पार्टी के बैनर तले 1972 तक इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते रहे। 1977 में समस्तीपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद के रूप में निर्वाचित हुए। कर्पूरी जी अपने लम्बे राजनीतिक जीवन में बिहार विधान सभा के 1952, 1957, 1962, 1967, 1969, 1972, 1977, 1980 एवं 1985 के चुनाव जीतकर विधायक के रूप में विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व किये। जीवन में केवल एकबार 1977 में समस्तीपुर से लोकसभा का चुनाव जीतकर सांसद बने।

कर्पूरी ठाकुर का सिद्धान्त था– समाज और सरकार चलाने के लिए नैतिकता और चरित्र दोनों आवश्यक है। केवल कानून बनाने से भ्रष्टाचार नहीं रूक सकता। कर्पूरी जी कहा करते थे सामाजिक अराजकता को रोकने के लिए कथनी और करनी में फर्क नहीं होना चाहिए। कर्पूरी ठाकुर का सारा जीवन जन समस्याओं से रूबरू होने के लिए दौड़ते भागने में बीता। बिहार में कहीं भी बड़ी घटना होनी थी, जुल्म होता था, तब प्रतिकार करने के लिए सबसे पहले कर्पूरी ठाकुर घटनास्थल पर पहुँच जाते थे। अपना विरोध दर्ज कराते थे। उनके निराकरण की दिशा में कार्यवाही करते थे और विधानसभा में भी उनके खिलाफ जोरदार ढंग से आवाज उठाते थे और सरकार को कटघरे में खड़ा कर उसका रास्ता निकालते थे।

कर्पूरी जी का वाणी पर कठोर नियंत्रण था। वे भाषा के कुशल कारीगर थे। उनका भाषण आडम्बर रहित, ओजस्वी, उत्साहवर्द्धक तथा चिंतनपरक था। कड़वा से कड़वा सच बोलने के लिए वे इस तरह के शब्दों और वाक्यों को व्यवहार में लाते थे जिसे सुनकर प्रतिपक्ष तिलमिला तो उठता था लेकिन यह नहीं कह पाता था कि कर्पूरी जी ने अपमानित किया है। उनकी आवाज बहुत ही खनकदार और चुनौतीपूर्ण होती थी लेकिन कोई गुमराह करने का कोशिश करता था वे जोरों से झल्ला उठते थे। क्रोध और घृणा से उनका चेहरा लाल हो उठता था। ऐसे अवसरों पर वे कम ही बोल पाते थे। लेकिन जो नहीं बोल पाते थे वह सब उनकी आँखों में साफ–साफ झलकने लगता था। विषम से विषम परिस्थितियों में भी शिष्टाचार और मर्यादा की लक्ष्मण रेखाओं का उन्होंने कभी भी उल्लंघन नहीं किया।

झोपड़ी में पैदा हुए उस लाल ने दर्द को महसूस किया। अपने लिए नहीं बल्कि उस पूरे समाज और उस व्यक्ति के लिए जो तत्कालीन समाज में व्यवस्था की पीड़ा से कराह रहे थे। कर्पूरी ठाकुर बिहार के पहले नेता थे जिन्होंने सदियों से दबे–कुचले वर्गों में चेतना जगायी, उनके सप्त सपनों में नवजीवन का संचार किया। इस वर्गों को लोकतंत्र के अस्तित्व का अहसास कराया। जनतांत्रिक व्यवस्था में उन्होंने राजनीति को जनसेवा की भावना से जिया। आमजन के दुःख दर्द को सहज समझा।

कर्पूरी ठाकुर के व्यक्तित्व का निर्माण महात्मा गांधी के जीवन दर्शन, डॉ0 राममनोहर लोहिया के चिंतनपरक विचार, जयप्रकाश नारायण की क्रांतिकारी छवि और आचार्य नरेन्द्रदेव, यूसूफ मेहरअली, अच्यूत पटवर्द्धन और अशोक मेहता जिन्होंने समाजवाद को संस्थाबद्ध किया था, के प्रभाव से हुआ था दरअसल कर्पूरी ठाकुर का व्यक्तित्व इन सभी नेताओं के जीवन दर्शन का समिश्रण था, जो सामाजिक परिवर्तन में विश्वास करते थे। यह परिवर्तन सिर्फ नेता बनकर नहीं बल्कि एक कार्यकर्ता बनकर ही किया जा सकता था। यह उनके सम्पूर्ण जीवन में अविछन्न रूप से दिखता है। वे सत्ता में रहे हों या प्रतिपक्ष में यह हमेशा बना रहा। कर्पूरी ठाकुर ने जिस तरह की भूमिका प्रतिपक्ष तथा सत्ता में रहकर निभाई वह अन्य समाजवादियों के लिए नजीर है।

कर्पूरी ठाकुर ने सामाजिक समरसता के वैचारिक सिद्धान्त के अनुरूप 10 नवम्बर 1978 को सरकारी सेवाओं में पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण सुनिश्चित करते समय यह प्रावधान किया था कि 26 प्रतिशत में से 12 प्रतिशत अतिपिछड़ा एवं 8 प्रतिशत अन्य पिछड़ो, 3 प्रतिशत गरीब सवर्ण और 3 प्रतिशत सभी जातियों की महिलाओं के लिए आरक्षित किया जाय ताकि सामाजिक न्याय के साथ–साथ सामाजिक समरसता को स्थापित किया जा सके। कर्पूरी जी हमेशा लीक से हटकर सोचते थे। किसी भी मिथक को वे बिना तर्क के मानने के हामी नहीं थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन समता और मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया था। समाजवादी आंदोलन पर उन्होंने गहराई से चिंतन किया था और पिछड़ो के हितार्थ उन्होंने जो कुछ किया वह स्वर्णाक्षरों में इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। कर्पूरी जी ने राजनीति में अपनी जमीन जन सेवा की बदौलत बनायी। स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानी जननायक कर्पूरी ठाकुर को आजाद भारत में सदन से सड़क तक, कांग्रेसी शासन की नीतियों की बखिया उधेड़ने की ताकत भी जनता से ही मिली थी। प्रतिरोध की प्रगतिशील और जनोन्मुखी राजनीति के नायक कूर्परी ठाकुर को जननायक का सम्मान संस्थागत नही बल्कि जनता का दिया हुआ है। गरीबों व वंचितों की अनवरत सेवा ने ही उन्हें 'जननायक' बना दिया। मृत्यु के बाद कर्पूरी ठाकुर के लिए 'जननायक' शब्द प्रचलन में आया। इसकी विभिन्न स्तर पर अपना लिया गया। सबसे पहले 'कर्पूरी ठाकुर विचार मंच व कर्पूरी ठाकुर रचना चक्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उन्हें 'जननायक' कहकर संबोधित किया जाता था। बाद में यह प्रचलित होता चला गया और आज 'जननायक' कर्पूरी ठाकुर जी की उपाधि हो गयी है।

सन्दर्भ–

1. कर्पूरी ठाकुर अभिनंदन ग्रंथ सम्पादक आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' 1986।
2. कर्पूरी ठाकुर का राजनीतिक दर्शन– डॉ0 विष्णुदेवरजक, अप्रकाशित ग्रंथ।
3. भारतीय राजनीति में कर्पूरी ठाकुर की भूमिका– डॉ0 नरेन्द्र पाठक (अप्रकाशित ग्रंथ)
4. कर्पूरी जी का जीवन संग्राम– राजेन्द्र शर्मा
5. काजल की कोठरी में बेदाग कर्पूरी– भीमसिंह, हिन्दुस्तान पटना 24 जनवरी 2001 (जयंती पर विशेष सेवा)।
6. वशिष्ठ नारायण सिंह, त्याग और ओज का अप्रतिम नेता कर्पूरी
7. देश का नेता कैसा– कर्पूरी ठाकुर जैसा– कार्यानंद मिश्र।

Nav Jyoti, Vol. 7, No. 14, Jan-June 2019 ISSN : 2249-7331

A STUDY ON SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOAL 6: CLEAN WATER AND SANITATION IN INDIAN CONTEXT

Shashibala Pandey
Research Scholar: Department of Economics, Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur

ABSTRACT

Sustainable Development Goal 6(SDG 6) requires a comprehensive monitoring and knowledge base of social and economic, water needs at national scale in such a way that should not cause negative environmental manifestations from regional to global scale. India holds a key position among developing economies with a complex interconnected web of fast-growing population, coupled with biophysical stress, social deprivation and economic inequality related to utilization, availability and access to water resources and sanitation facilities. This study addresses some of these challenges related to monitoring and implementation of the targets of the UN SDG 6 in India. Acknowledging the contribution of society and economy in sustainability paradigm, here we have chosen 28 indicators (clustered into 11 dimensions) under two major groups, concerning biophysical and social development aspects of water and sanitation. We have shown declining level of per capita biophysical water resource and slow to rapidly developing societal indicators related to SDG 6 in India. From past trends, we have calculated probable scenario of biophysical consumption of India up to 2050. We have also analysed the inter-relationship of water and sanitation (SDG 6) with health (SDG 3) and end to poverty (SDG 1) in India. These show a positive impact of increasing per capita GDP on improving sanitation related indicators, which in turn positively influence to reduce water and sanitation related diseases, especially in children and aged population. This cumulative assessment framework contributes a tool to prioritize water resource appropriation and assessment of sanitation, management response and policy implementations to national level inclusive sustainability of water and sanitation sector, keeping in mind the societal and economic development scenario in India.

1. INTRODUCTION AND BACKGROUND OF THE STUDY:

Ecological economics established the inter relationship between economy and environment. For them in the biosphere everything depends upon everything and nothing is unlimited. Therefore, we must change our attitude from Cowboy economy to Spaceman economy. i.e we should rationally do economic activities of production and consumption, because resources are limited. In this connection there are four important functions of environment for human economy. **'Development which meets the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs'.** This most widely accepted definition of Sustainable Development was given by

the **Brundtland Commission** in its report **Our Common Future (1987).** Sustainable development (SD) calls for concerted efforts towards building an inclusive, sustainable and resilient future for people and planet. Though there is sufficient fresh water on the planet to achieve regular and clean water supply for all, 785 million people still lack access to basic drinking water service. Even though 45 per cent of the world's population had access to safely managed sanitation services in 2017, 701 million people could not escape open defecation. In the same year, as many as 3 billion people lacked necessary hand washing facilities at home.

Goal 6: Ensure availability and sustainable management of water and sanitation for all For access to and availability of water and sanitation for all, India is estimated to require a sum of INR 13 lakh crores (USD 199 billion) till 2030. While no additional finances are required for access to drinking water for all, an additional sum of INR 8 lakh crores (USD 123 billion) is needed for universal sanitation coverage in the country and cleaning of the Ganga River. Increasing water quality of other natural and artificial resources will require more such planning and finance.

Ensuring water security (Goal 6) for domestic, agriculture and industry applications and sustainable management of our rivers and water bodies in order to retain the ecological flows is another huge task. The Namami Ganga Plan has an outlay for INR 20,000 crore (USD 3 billion) only for the next five year period; the operational management for the next 10 years are also to be funded by the government and the amounts for that are not yet known. On the other hand, the Ganga River Basin Management Plan (2015) estimates that nearly INR 6-7 lakh crores is required to address the pollution problem in the Ganga. All of this is expected to be funded by the government.

2. INDIAN APPROACH TOWARDS SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOAL 6 :

India has the world's second-largest population but just 4 per cent of potable water. Nearly 600 million Indians face high to extreme water stress; and by 2030, the country's water demand is projected to be twice the available supply, implying severe water scarcity. There is an imminent need to continuously evolve sustainable policies and practices, especially in the current context of adverse climate change, rising demand and environmental degradation and to put in place interventions that make our water use efficient and sustainable. To ensure effective water governance, a new dedicated ministry – the Ministry of *Jal Shakti*, has been created to address interrelated issues

2.1. Safe and Affordable Drinking Water for All

The Government is committed to providing safe and adequate drinking water to all habitations by 2022. The National Rural Drinking Water Programme (NRDWP) has already provided 81.07 per cent rural habitations with access to 40 litres of drinking water per capita per day (LPCD) and another 15.58 per cent with partial access. The target is to

provide piped water connection by 2024 under the recently launched *Jal Jeevan Mission*. Besides ensuring full access to water for all, robust measures are being taken to optimise water resource endowments in the country. According to the National Commission for Integrated Water Resource Development, the country's water requirement is likely to be 973 BCM in low demand scenario and 1,180 BCM in high demand scenario by 2050. In contrast, the present-day availability is 695 BCM, and the potential water availability in the country has been estimated to be 1,137 BCM. Under the *Jal Jeevan Mission*, the recently launched campaign of *Jal Shakti Abhiyan* aims at water conservation and rain-water harvesting, renovation of traditional and other water bodies, reuse of water and recharging of structures, watershed development and intensive afforestation through broader community mobalisation and participation to achieve a water-secure future for the country.

2.2. Water Quality

The primary groundwater quality issues are salinity and contamination by arsenic, iron, fluoride, and nitrates. An area of about 2 lakh sq.km has been estimated to be affected by salinity with the electrical conductivity rising beyond 4000 µS/cm. Fluoride contamination in groundwater has been found in 184 districts in 19 States; high levels of arsenic contamination in 26 districts of 4 States (Bihar, Chhattisgarh, West Bengal and Uttar Pradesh); high concentration of iron in groundwater in more than 1.1 lakh habitations in the country; and high concentrations of nitrates are found in many districts of 15 States. Surface water also faces the challenge of pollution. Out of India's 37 states and union territories, 31 have polluted river stretches: 351 polluted stretches identified on 323 rivers in 2018. A host of measures are implemented to monitor and remedy water quality by the Central Water Commission, which monitors water quality at 396 key locations. Grossly Polluting Industries are identified, effluent-monitored and control and compliance measures are regularly taken. The *Namami Gange* Programme is an Integrated Conservation Mission launched to accomplish the twin objectives of effective abatement of pollution, conservation and rejuvenation of river Ganga.

2.3. Sanitation and Hygiene for All

Government of India is committed to creating healthier communities by increasing access to clean water and sanitation. The flagship initiative of the *Swachh Bharat* Mission covering all rural and urban areas has successfully achieved the target of making India open-defecation-free (ODF) India by 2nd October 2019. The programme also aims at conversion of unsanitary toilets to pour-flush toilets, eradication of manual scavenging, municipal solid waste management, raising awareness and nudging positive behavioral change in people. Progressing sharply from 38.70 per cent in 2014, when the mission was launched, the country has achieved sanitation coverage of 100 per cent in rural India.

Close to 6 million villages, 633 districts and 35 States/UTs have been verified to be ODF in December 2019.

2.4 . Sustainable Development Goal 6 and its Targets in India :

Concerned institution and authority have set the following targets towards sustainable development goal 6 in India -

1. By 2030, achieve universal and equitable access to safe and affordable drinking water for all
2. By 2030, achieve access to adequate and equitable sanitation and hygiene for all and end open defecation, paying special attention to the needs of women and girls and those in vulnerable situations
3. By 2030, improve water quality by reducing pollution, eliminating dumping and minimizing release of hazardous chemicals and materials, halving the proportion of untreated wastewater and substantially increasing recycling and safe reuse globally
4. By 2030, substantially increase water-use efficiency across all sectors and ensure sustainable withdrawals and supply of freshwater to address water scarcity and substantially reduce the number of people suffering from water scarcity
5. By 2030, implement integrated water resources management at all levels, including through trans boundary cooperation as appropriate
6. By 2030, protect and restore water-related ecosystems, including mountains, forests, wetlands, rivers, aquifers and lakes
7. By 2030, expand international cooperation and capacity-building support to developing countries in water- and sanitation-related activities and programmes, including water harvesting, desalination, water efficiency, wastewater treatment, recycling and reuse technologies
8. Support and strengthen the participation of local communities in improving water and sanitation management

3. INDIA'S PERFORMANCE IN TERMS OF SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOAL 6 :

SDG 6 is an SDG which is highly connected to all the other SDGs. Water problem and lack of access to water and sanitation has an adverse impact on economic growth and job creation. Even in case of India, is it seen that water and sanitation accounts for a potential growth that India is not achieving because it has large issues in this sector. India needs to look at water in two ways: What is already done with water in India and what needs to be done for future better supply of water are important issues. Many scientists estimate that Himalayas have lost 15% of their glaciers.

As per a report on the MDGs, India's efforts on the MDG were on track for water. It is said that coverage of drinking water supply in India is 93%. India nearly has 18% of the world's population but only 4% of the average global annual runoff in rivers. Over

600 million people in India depend on agriculture for their living and nearly 2/3rd of land under cultivation has no assisted irrigation and thus relies on rain and underground water sources. Subsidised electricity has also led to excessive pumping of ground water by drilling more annually than China and America combined. It is said that water table in India is falling on an average by 0.3 metre and as much as 4 metres in some places. And water starved regions often cultivate water hungry crops like sugarcane, cotton, grains and paddy. If we compare water consumption of India to China with a slightly larger population and double the size of the economy latter uses 28% less water than India.

As per a categorisation, there are two types of water we consume: the actual one and the virtual one. The virtual water consumption is the water we consume in the products, agricultural and industrial. That we produce and then we either consume or we export. India counter-intuitively is a net exporter of virtual water. It is in the same company with countries that are actually net exporters of both virtual and real water such as Canada, United States, Argentina and Russia. The countries which are net importers of virtual water are such neighbours as China, Republic of Korea, Japan and even Netherlands which is not rich in water.

4. CHALLENGES TO OBTAIN SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOAL 6 IN INDIA :

Water Data System– Data systems related to water in the country are characterised by limited coverage, inefficiency, unreliability, and limited coordination and sharing. Data are rarely available at the required level of detail to inform policies. Unreliability and inefficiency result from outdated collection techniques and methodologies. These limitations have a direct impact on research and innovation, policy formulation and maintenance of systems.

Gendered access to sanitation facilities – Constraints are often imposed on women to access sanitation facilities in rural communities. Such socio-behavioral issues may restrict the usage of these rural sanitation facilities by the local communities in the beginning. Rising awareness and greater participation of community-based organisations play a crucial role in effecting such social transformation. Centrally Sponsored Schemes/Central Sector Schemes (CSS)

- National Rural Drinking Water Programme ***(Core)***
- *Swachh Bharat Abhiyan* (Rural and Urban) ***(Core)***
- Pradhan Mantri Krishi Sinchayee Yojana (PMKSY) ***(Core)***
- National River Conservation Programme (NRCP) (implemented as a part of the umbrella scheme, Environment, Forestry and Wildlife (EFWL) ***(Core***)

5. **STRATEGIES TO ACHIEVE SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOAL 6 IN INDIA :**

There is a need for strategies to better the situation and achieve the sustainable development goal 6 in India and there for we have made the following strategy

- Aim is to increase the water use efficiency by 20%. There is a need for research in the area of water use efficiency.
- To promote water efficient techniques and technologies. The micro irrigation sprinkler and drip is coming. Promote Water Resources Regulatory Authorities (WRRA) for equitable water distribution.
- Promote water audit and incentivise water conservation. Farmers should be incentivised.
- Improve both the conveyance as well as the distribution efficiency.
- Levelling is another important aspect, better levelled fields lead to more efficiency.
- Conjunctive use of both surface and ground water is very essential.
- Crop diversification is another important aspect.
- Need to incentivise projects which bring irrigation efficiency in terms of water use efficiency
- Recycle and treat water from sewers and use it for agricultural purposes. Increased research on this as this is possible if there exist decentralised systems.
- Price mechanism needs to change, there is a need to think of demand management through pricing mechanism.
- Some crops should be relocated to ensure water and irrigation efficiency. For instance, Maharashtra should not produce so much sugarcane as it is a water intensive crop and it should perhaps be shifted to more Brahmaputra valley.

6. CONCLUSION AND SUGGESTIONS :

Goal 6 deals with all aspects of water availability, access and use. The targets within this goal are closely linked to one another and also to other goals. For example, universal provision of drinking water (Target 6.1) and sanitation coverage (Target 6.3) can only be achieved if existing water bodies are sustainably used (Goal 12) and the quality of water in these bodies is kept at an acceptable standard (Target 6.3). Maintenance of water quality is in turn dependent on the way industry, agriculture and other sectors use and dispose of water. Industrial effluents and sewage are major sources of water pollution, but are also consequences of uncontrolled industrialization and urbanization. Goals 9 and 11 (on industrialization and urbanization respectively) must address these concerns.

The current government has announced an ambitious target of providing universal water and sanitation coverage to India by 2019. While India has almost achieved universal coverage of drinking water, it is far from achieving universal access to piped water supply and providing a quantity of water that is consistent with international norms. Similarly, sanitation in India is a major concern, with roughly 60 per cent of the rural population not having access to toilets. The government has a mammoth task set

out for itself, not only in constructing toilets for all but also creating behavior change so that people understand the risks of open defecation and begin to use these toilets. Water pollution is another major concern in India. River Ganga is one of the most polluted rivers in India, however it is not the only one in need of immediate attention. Consider the state of Gujarat's water bodies. Even as Gujarat basks in the glory of its industrial development, the Golden Corridor in South Gujarat has gained international infamy for extreme land and water pollution, which has affected the lives of lakhs of residents living in the region. According to an annual research conducted by Blacksmith Institute in 2008, four sites from Gujarat figure in South Asia's 66 most-polluted sites (Centre for Science and Environment, 2000).

It is important to take an integrated, balanced approach to managing water resources. Water is a necessity in almost all sectors of the economy. The allocation of water among various uses should be carefully planned to ensure sustainability. Research and development efforts need to be targeted at improving water use efficiency as fresh water becomes a scarce resource.

This study estimates the finance required and gaps in achieving universal drinking water and sanitation coverage and initiating efforts to clean India's water bodies. Integrated water resource management and efforts to increase water use efficiency are considered under Goal 13. The total finance required is estimated at INR 13 lakh crores (USD 199 billion) and the gap at INR 8 lakh crores (USD 123 billion).

REFERENCES

1. SDG INDIA INDEX 2019
2. Sustainable Development Goals Report 2019
3. Rakesh Kumar Maurya .National Implementation of the SDG Monitoring India 2015 Available from https://unstats.un.org/sdgs/.../Presentation--4.3-Implementation-of-SDG-Monitoring--I
4. Government Flagship Programs: Make In India And Digital India. Available from https://unacademy.com/lesson/government-flagship-programs-make-in-india-and-digital-india-for-upsc-cseias-exam/L26JW6RP
5. Lu Y, Nakicenovic N, Visbeck M, Stevance AS. Policy: Five priorities for the UN Sustainable Development Goals. Nature. 2015 Apr 23; 520(7548):432-3.
6. Report of the third International Conference on Financing for Development. 2015. Available from http://www.undocs.org/A/CONF.227/20
7. Bhattacharya S, Patro SA, Vaidyanathan V, Rathi S. Localising the gender equality goal through urban planning tools in South Asia.
8. Avani Kapur .Four challenges that India faces in achieving sustainable development goals. 2015. Available from www.business-standard.com › Punditry › Social Specs

9. India has highest population of poor: World Bank. The Hindu Business line.2016 Oct 3. available from https://www .pressreader.com/india/the-hindu-business-line/.../2818 65822968167
10. United N. The Millennium Development Goals Report 2014. New York: United Nations. 2014.
11. INVESTING I, PLAN AA. WORLD INVESTMENT REPORT2014. Available from http://unctad.org/en/PublicationsLibrary/wir2014_en.pdf